www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आत्मा

न नारी है न नर

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आत्मा न नारी है, न नर

लेखक :

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

२००९

मूल्य : २१.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१. आत्मा न स्त्री है, न पुरुष	३
२. चाहें तो नर बन जाएँ, चाहें तो नारी	१५
३. एक ही शरीर में विद्यमान नर और नारी	२५
४. अमैथुनी सृष्टि होती है, हो सकती है	४२
५. गर्भस्थ शिशु का इच्छानुवर्ती निर्माण	५६
६. ब्रह्मचर्य से शक्ति और संयम द्वारा प्रसन्नता	७८
७. संयम अर्थात् शक्ति अर्थात् समर्थता	६५

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रत्येक प्राणी विशेषतया अपने आप में न केवल अन्य सभी दृष्टियों से वरन् लिंगभेद की दृष्टि से भी पूर्ण है। आत्मा पूर्ण से पैदा होती है, इसलिए पूर्ण है। **"पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते"** वाले श्रुति वचन में जिस तथ्य का प्रतिपादन किया गया है, वह हर कसौटी पर खरा है। मनुष्य पूर्ण है; उसकी दोनों इकाइयाँ नर और नारी के रूप में भिन्नता युक्त तो है, एक-दूसरे के लिए आवश्यक, उपयोगी एवं सहयोगी भी हैं, पर यह कहना उचित नहीं कि एक के बिना उसकी आत्मा या भौतिक प्रगति रुकी पड़ी रहेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आत्मा न स्त्री है, न पुरुष

❑

मनुष्य की मूल सत्ता न शरीर है और न उसकी इच्छाएँ-आकांक्षाएँ। बल्कि आत्मा ही मनुष्य का मूल स्वरूप है। यह आत्मा न किसी प्राणी में कोई अतिरिक्त विशेषताएँ लिये रहता है, न कोई न्यूनताएँ ही। आत्मा की सभी विशेषताएँ समान रूप से सभी प्राणियों में विद्यमान रहती हैं और वह अपने मूल स्वरूप में रहता हुआ ही विभिन्न शरीर धारण करता है।

विशेषता और अविशेषता की दृष्टि से आत्मा में इतना भी भेद नहीं है कि उसका लिंग की दृष्टि से कोई निर्धारण किया जा सके। संस्कृत में 'आत्मा' शब्द नपुंसक लिंग है, इसका कारण यही है—आत्मा वस्तुतः लिंगातीत है। वह न स्त्री है, न पुरुष।

आत्म तत्त्व के इस स्वरूप का विश्लेषण करते हुए प्रायः प्रश्न उठता है कि आत्मा जब न स्त्री है, और न पुरुष, तो फिर स्त्री या पुरुष के रूप में जन्म लेने का आधार क्या है ?

इस अंतर का आधार जीव से जुड़ी मान्यताएँ ही हैं। जीव चेतना भीतर से जैसी इच्छा करती है, वैसे संस्कार उसमें गहरे हो जाते हैं। अपने प्रति जो मान्यता दृढ़ हो जाती है, वही व्यक्तित्व रूप में प्रतिपादित होती है। ये मान्यताएँ स्थिर नहीं रहतीं। फिर भी सामान्यतः इनमें एक दिशाधारा का सातत्य रहता है। किसी विशेष अनुभव की प्रतिक्रिया से मान्यताओं में आकस्मिक परिवर्तन भी आ सकता है या फिर सामान्य क्रम में धीरे-धीरे क्रमिक परिवर्तन भी होता रह सकता है।

यह मान्यता अंतःकरण से संबंधित होती है। अंतःकरण के चार अंग हैं—मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। अहंकार का अर्थ है, वह अस्मिता-भाव, जिसके सहारे व्यक्ति सत्ता का समष्टि सत्ता से पार्थक्य टिका है। जब अहं-भाव का संपूर्ण नाश हो जाता है, तो समुद्र में बूँद की तरह व्यष्टि का समष्टि में लय हो जाता है। उसकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वतंत्र सत्ता नहीं रह जाती। स्वतंत्र सत्ता अहं-भाव पर ही अवस्थित है। इसी अहं-भाव में जो मान्यताएँ अंकित-संचित हो जाती हैं, वे ही व्यक्तित्व की विशेषताओं का आधार बनती हैं। इन विशेषताओं में लिंग-निर्धारण भी सम्मिलित है। जीवात्मा पुरुष रूप धारण करेगी या स्त्री रूप, यह इसी अहं-भाव की मान्यता पर निर्भर है। उसमें जैसी इच्छा उमड़ेगी, जैसी मान्यताएँ जड़ जमा लेंगी, वैसा ही लिंग-निर्धारण भी होगा। आधुनिक मनोवैज्ञानिक शब्दावली में अहंकार को अचेतन की अति गहन परत कह सकते हैं। इससे ही 'ईगो' और "सुपर ईगो" का स्वरूप निर्धारित होता है।

'ईगो' के स्वरूप में रोज-रोज आमूल-चूल परिवर्तन असंभव है। मान्यताएँ—आस्थाएँ बहुत गहरी जड़ें जमाये रहा करती हैं। उनमें आये दिन ऐसी फेर-बदल नहीं हो सकती कि पूरा ढाँचा ही बदल जाये। परंतु जब भी मान्यताएँ बदलती हैं, तो उनका प्रभाव स्वाभाविक ही बहुत गहरा और दूरगामी होता है। वाल्मीकि, अजामिल, अंबपाली ने अपने बारे में मान्यता बदली, तो उनका व्यक्तित्व ही बदलता चला गया। जिस स्तर तक मान्यताएँ परिवर्तित होती हैं, उसी स्तर तक व्यक्तित्व में हेर-फेर होता है। लिंग-परिवर्तन भी ऐसे ही गहरे हेर-फेर से संभव है। जब कोई आत्मा अपने वर्तमान लिंग के प्रति गहराई से असंतुष्ट होती है या जब उसकी मूलभूत प्रवृत्तियों की दिशा ही बदल जाती है, तो लिंग-परिवर्तन समेत व्यक्तित्व में अनेक परिवर्तन हो सकते हैं। ऐसे परिवर्तन से इस जन्म की नारी अगले जन्म में पुरुष और इस जीवन का पुरुष अगले जीवन में नारी बन सकता है। कीड़े-मकोड़े जिस परिवेश में रहते हैं, उसका प्रभाव उनकी त्वचा के रंग तक पर पड़ता है। हरे पेड़ पर रहने पर हरापन बढ़ जाता है, काले या भूरे वृक्षों, वनस्पतियों के बीच उनकी त्वचा का रंग भी वैसा ही हो जाता है। आत्मा भी मान्यताओं के जिस परिवेश में रहती है, उसका उसके नर या नारी होने पर भी प्रभाव पड़ता है। चीते के शरीर पर घास के प्रभाव से पड़ जाने वाली

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भूरी-चितकबरी लकीरों—पट्टियों की तरह मान्यताओं और अनुभूतियों का प्रभाव आत्म-पटल पर पड़ता ही रहता है।

व्यक्तित्व में जो प्रवृत्तियाँ प्रधान हो जाती हैं, जीवात्मा का वही लिंग बन जाता है। नारी-प्रवृत्तियों की प्रधानता से कोई लड़का अगले जन्म में लड़की बन सकता है। पुरुष-प्रवृत्तियों का प्राधान्य किसी लड़की के अगले जीवन में लड़का बनने का कारण बन सकता है। यों सामान्य क्रम में भी हर व्यक्ति में दोनों ही लिंगों संबंधी कुछ प्रवृत्तियाँ विद्यमान रहती हैं, किंतु प्रधानता किसी एक की रहती है। ऐसे पुरुषों की कमी नहीं, जो पूरी तरह पुरुष होते हुए भी करुणा, वात्सल्य, ममता, मातृ-हृदय की कोमलता से संपन्न हों। ऐसी नारियाँ भी कम नहीं, जो नारी की समस्त विशेषताओं के साथ आक्रामकता, लड़ाकूपन जैसी पुरुष-प्रवृत्तियों से भी भरपूर हों।

जब तक ये विशेषताएँ सीमित रहती हैं, प्रधानता अपने ही लिंग स्वभाव की बनी रहती है, तब तक तो ये व्यक्तित्व के गुण और क्षमताएँ बनी रहती हैं। जब इनकी असामान्य वृद्धि होने लगती है, तब वे चर्चा का विषय बन जाती हैं। किसी पुरुष में स्त्री-सुलभ वृत्तियाँ अधिक हो जाने पर उसे स्त्रैण कहा जाता है। नारी में पुरुष-प्रवृत्ति की प्रधानता दीखने पर इसे मरदानी कहते हैं। जब बात और आगे बढ़ती है, तो दोनों को ही जनखा, हिजड़ा कहा जाता है। यह मनोवृत्तियों के परिवर्तन का परिणाम है।

जब यह परिवर्तन मनोवृत्तियों से भी अधिक गहराई तक में होता है, संस्कार और मान्यताएँ उलट-पुलट जाती हैं, तब पूरा ढाँचा ही बदल जाता है तथा लिंग-परिवर्तन हो जाता है।

ब्राजीलवासी श्रीमती इडा लारेन्स १२ बच्चों की माँ बन चुकी थीं और अब संतान प्रजनन की संभावना क्षीण ही हो गई थी। तभी उन्हें "सेयान्स" में उनकी मृत पुत्री इमीलिया ने संदेश दिया कि—मैं पुनः तुम्हारे गर्भ से ही जन्म लेना चाहती हूँ, किंतु इस बार पुत्र रूप में।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस लड़की इमीलिया को जब वह जीवित थी, अपने लड़की होने से घोर असंतोष था। उसने विवाह करने से इनकार कर दिया था और लड़की होने की ग्लानि से २० वर्ष की वय में विष खाकर मर गई थी।

अपने संदेश के कुछ ही दिनों बाद उसने अपनी पूर्व की माँ श्रीमती लारेन्स के गर्भ में प्रवेश किया। यथासमय वह पुत्र रूप में पैदा हुई। माँ-बाप ने उसका पोलो नाम रखा। इस लड़के पोलो की अनेक प्रवृत्तियाँ अब भी इमीलिया जैसी थीं। लड़का हो जाने पर भी उसके व्यक्तित्व में अनेक नारी-सुलभ विशेषताएँ विद्यमान थीं; किंतु था वह पूरी तरह लड़का ही।

श्रीलंका की एक दो वर्षीया लड़की ने बताया कि पूर्वजन्म में वह लड़का था। परामनोवैज्ञानिकों ने उसके बारे में सुना तो संपर्क किया और खोजें कीं। उसके बताये हुए पूर्व जन्म संबंधी विवरण प्रामाणिक पाये गये। अपने पूर्वजन्म में 'तिलकरत्न' नामक लड़का होने की बात उसने बताई थी। उस लड़के की जो-जो प्रवृत्तियाँ, गतिविधियाँ बताईं, छानबीन होने पर उनकी पुष्टि हो गई। पता यह चला कि तिलकरत्न में नारी-सुलभ विशेषताएँ उस जीवन में ही विद्यमान थीं।

विज्ञान का हर विद्यार्थी यह जानता है कि प्रत्येक मनुष्य के भीतर उभयलिंगों का अस्तित्व विद्यमान रहता है। नारी के भीतर एक नर सत्ता भी होती है, जिसे ऐनिमस कहते हैं। इसी प्रकार हर नर के भीतर नारी की सूक्ष्म सत्ता विद्यमान होती है, जिसे ऐनिमा कहते हैं। प्रजनन अंगों के गह्वर में विपरीत लिंग का अस्तित्व भी होता है। नारी के स्तन विकसित रहते हैं; परंतु नर में भी उनका अस्तित्व होता है।

कभी-कभी किसी व्यक्ति के भीतर छिपा यह विपरीत लिंगी व्यक्तित्व प्रबल हो उठता है। ऐसी स्थिति में कुछ शल्य-क्रियाएँ किये जाने पर परिवर्तित लिंग वाला व्यक्तित्व पूरी तरह उभर आता है, उसमें कोई भी असामान्यता शेष नहीं रहती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्पष्ट है कि आत्मा न नर है न नारी। वह एक दिव्य सत्ता भर है। समयानुसार-आवश्यकतानुसार वह तरह-तरह के रंग-बिरंगे परिधान पहनती बदलती रहती है। इसी को लिंग व्यवस्था समझना चाहिए। सर्दी की ऋतु में गरम और भारी कपड़े पहनने की आवश्यकता अनुभव होती है और गर्मी में हल्के वस्त्र पहनने या नग्न रहने की इच्छा होती है। नर-मादा रूपी दो आवरण दो ऋतुओं के लिए हैं। आत्मा की जब जैसी रुचि होती है, तब वह वैसे वस्त्र पहन लेती है। कभी गरम-भारी, कभी ठंडे-झीने। कभी खट्टा स्वाद चखने की इच्छा होती है तो कभी मीठा।

मादा के जीवन का अपना आनंद है और अपना स्तर। उसे देखे, समझे और अनुभव किये बिना आत्मा की तृप्ति नहीं होती। जब स्नेह, वात्सल्य, समर्पण, सेवा की प्रवृत्तियाँ उभारने की शिक्षा लेनी होती है, तब नारी के शरीर में प्रवेश करके उस तरह का अध्ययन, अनुभव, अभ्यास करना होता है और जब शौर्य, साहस, पुरुषार्थ, श्रम की कठोरता का शिक्षण आवश्यक होता है, तब उसे नर-कलेवर पहनना पड़ता है।

मृदुलता और कठोरता के उभयपक्षीय समन्वय से जीवधारी की समग्र शिक्षा हो पाती है। यदि वह एक ही योनि में पड़ा रहे तो उसके आधे ही गुणों का विकास हो पायेगा और उस अपूर्णता के रहते सर्वांगीण पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त न हो सकेगा। अस्तु, भगवान् ने यह व्यवस्था बना रखी है कि जीवधारी कभी मादा शरीर में रहा करे, कभी नर में। यह परिवर्तन धूप-छाँह जैसे उभयपक्षीय आनंद की अनुभूति कराता है और जीवन के दोनों पहलुओं से परिचित ही नहीं, अभ्यस्त भी कराता है।

यह सोचना भी ठीक नहीं है कि नर जन्म-जन्मांतरों तक नर ही रहेगा और नारी को नारी ही रहना पड़ेगा। अभ्यास और रुचि परिपक्व हो जाए तो एक ढर्रा भी कई जन्मों तक चलता रह सकता है, पर यदि तीव्र उत्सुकता-उत्कंठा हो तो वह परिवर्तन अगले ही जन्म में हो सकता है। नर यदि नारी जैसी मनोभूमि और गतिविधियाँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपनाकर, उस तरह की उत्कंठा तीव्र करे, तो अगला जन्म उसे नारी के रूप में भी मिल सकता है। इसी प्रकार नारी के लिए यह सर्वथा संभव है कि वह पुरुषोचित गतिविधियाँ और मनोवृत्तियाँ अपनाकर अगला परिवर्तन अपनी अभिलाषा के अनुरूप कर ले। यों प्रकृति के नियमानुसार बिना किसी प्रयत्न के भी यह परिवर्तन होते रहते हैं।

शरीरशास्त्री यह तथ्य भली प्रकार जान गये हैं कि हर जीवधारी में नर और नारी की उभयपक्षीय सत्ता बीज रूप में विद्यमान रहती है। उसका जो पहलू उभरा रहता है उसी को समर्थ एवं सक्रिय रहने का अवसर मिलता है और दूसरा पक्ष प्रसुप्त स्थिति में पड़ा रहता है। यदि उभार दूसरी दिशा में बह निकले तो सुप्त पक्ष जाग्रत् हो सकता है और जाग्रत् को सुषुप्ति में चला जाना पड़ता है।

सृष्टि में ऐसे अगणित जीवधारी विद्यमान हैं, जिनमें नर और नारी के दोनों पक्ष समान रूप से सक्रिय होते हैं। वे एक ही जीवन में कभी नर और कभी मादा बनते रहते हैं। जब उनका जी आता है, अपने संकल्प बल से नर बन जाते हैं और जब उमंग उठती है नारी बन जाते हैं। नारी स्वभाव से ही नहीं, बिना किसी कठिनाई के नारी अंगों का भी विकास अधूरा नहीं होता, वरन् इस सीमा तक प्रखर होता है कि संतानोत्पादन भी भली प्रकार से हो सके। आज का नर कल नारी बनकर अपने पेट में गर्भ धारण करेगा और परसों बच्चे जनेगा, यह बात विचित्र लगती है, पर है सर्वथा सत्य। कितने जीवों में यही प्रवृत्ति है और वे एक ही जीवन में इस प्रकार के उभयपक्षीय आनंद की अनुभूतियाँ लेते रहते हैं। उनके जीवन समुद्र में कभी नर का ज्वार आता है, तो कभी नारी का भाटा। प्रकृति ने उन्हें इच्छानुसार आवरण बदलने की जो सुविधा दी है, वैसी ही यदि मनुष्यों को भी मिली होती तो वे भी इस प्रकार का आनंद लाभ करते। इतना ही नहीं, नर और नारी के बीच असमानता की जो खाई बन गई है उसके बनने का कोई कारण न रहता। फिर न कोई छोटा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समझा जाता, न कोई बड़ा। किसी को किसी पर आधिपत्य जमाने की खुराफात भी न सूझती।

गोल्ड इस्मिट, रोश, हरीसन आदि प्राणिवेत्ताओं में तितलियों की कलम एक-दूसरे को लगाकर उनका लिंग परिवर्तन कृत्रिम रूप से संभव बनाकर दिखाया है। विज्ञानी डब्ल्यू० हीरम्स ने मछलियों की कई जातियाँ उभयलिंगी पाई हैं और कुछ प्रयोगों में छोटे आपरेशन करके उन्हें परिवर्तित लिंग का बनाया है। पक्षियों में भी लिंग परिवर्तन के आपरेशन बड़ी मात्रा में सफल हुए हैं।

कुछ कीड़े होते हैं, जो एक ही शरीर में बार-बार उभय लिंगी परिवर्तन करते रहते हैं। वे कभी नर बन जाते हैं तो कभी मादा। कीट-विज्ञानी प्रो० ओरटन ने ऐसे जीवों की खोज की थी, जो एक ही जन्म में कभी नर रहते हैं, कभी नारी। ओइस्टर ऐसे जंतुओं में अग्रणी हैं। वे मादा की तरह अंडे देने के बाद एक मास बाद ही नर बन जाते हैं और उभयपक्षीय लिंग में रहने वाली विभिन्नताओं का आनंद लूटते हैं। आस्ट्रिना, गिवासा, स्लप लाइयेकस जाति के जलचर भी उभयलिंगी रसास्वादन का क्रम परिवर्तन करते रहते हैं। लिमेष्ट्रिया पतंगा भी इसी स्तर का है। वह कभी नारी होता है, तो कभी नर।

आयस्टर वर्ग-जाति का 'मोलस्क' घोंघा अपना लिंग परिवर्तन करता रहता है। कभी वह मादा होता है, तो कभी नर। ४० साल की पूरी आयु यदि वह जी सके, तो प्रायः एक दर्जन बार वह अपना लिंग परिवर्तन कर सकता है।

सृष्टि में ऐसे जीव-जंतुओं की संख्या कम नहीं—जो उभयलिंगी होते हैं। एक ही शरीर में शुक्र और डिंब उत्पन्न करने वाली ग्रंथियाँ होती हैं। जब उनमें प्रौढ़ता आती है तो प्रजनन स्राव अपने आप प्रवाहित होते हैं और रक्त संचार के सहारे उनको आत्मरति का आनंद, प्रजनन का लाभ मिल जाता है। ड्रोसोफिला मक्खी, हैव्रो व्रेकन ततैये, सिल्क व्रम मोथ, वैक्स मोथ, जिप्सी मोथ, अलोकेसपिस, जैसे अनेक पतंगे उभयलिंगी होते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रजनन क्रिया के लिए योनि संयोग भी आवश्यक समझा जाता है, पर वनस्पति जगत् में ऐसा संयोग बहुत कम, लगभग नहीं ही होते हैं। उनमें भी नर और मादा तो रहते हैं, परंतु नये पेड़ पौधों का विकास, उद्भव बीजों से ही होता है। बीज गलकर अंकुर और पत्र-पल्लवों के रूप में विकसित होता है और एक से अनेक बनने का क्रम अपनाकर, वही पुष्ट पौधा बनकर कितने ही नये बीज हर साल उत्पन्न करता है। यह प्रजनन क्रिया वनस्पति जगत् की सर्वविदित परिपाटी है।

गन्ना, गुलाब आदि अगणित पौधे, उनके टुकड़े करके गाड़ देने पर, अलग-अलग पौधे बन जाते हैं। वट, गूलर जैसे वृक्षों की बड़ी डालियाँ भी नये पेड़ का रूप धारण करती हैं। विकसित पुष्पों के पराग हवा में उड़कर एक से दूसरे तक पहुँचते हैं। मक्खियाँ और तितलियाँ भी उनका स्थानांतरण करती रहती हैं, इस प्रकार पराग युगल परस्पर योग-संयोग मिलाकर बिना रति-क्रिया के अपनी वंश वृद्धि करते रहते हैं।

छोटे जीवों में भी यह गुण होता है कि वे अपने शरीर से अपनी ही सरीखी नई संतति उत्पन्न कर सकें। यों दूसरी जाति की उत्पत्ति तो सहज ही हो जाती है। पेट में सड़ा अन्न मलकृमि बनकर विष्ठा के साथ निकलता है। शरीर पर चिपका हुआ मैल जुँए, चीलर बनता है। जीवित या मृत शरीर का सड़ा हुआ मांस आँख से देखे जा सकने वाले कीड़ों के रूप में अनायास ही बदल जाता है। सड़े हुए फल और तरकारियों में भी उसी रंग-रूप के कीड़े रेंगते देखे जा सकते हैं। यह प्रजनन ही है। सड़न को रति-क्रिया तो नहीं कह सकते और न उससे सहधर्मी जीव उत्पन्न होता है, फिर भी इसे जीव उत्पादन तो कह ही सकते हैं। कीचड़ और गंदगी में मक्खी, मच्छरों और रेंगने वाले कृमियों का उत्पन्न होना, इसी स्तर का प्रजनन है।

जिनकी गणना जीवधारियों में की जाती है, ऐसे प्राणी भी अपने शरीर के ही टुकड़े बखेर कर अपनी जाति के नये प्राणी को जन्म देकर विधिवत् वंश वृद्धि करते रहते हैं। इसलिए उन्हें जोड़ा ढूँढ़ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

या रतिक्रिया के सहारा लेने की जरूरत नहीं पड़ती। अपना शरीर ही इसके लिए पर्याप्त होता है और उसी से उभयपक्षीय मिलन-संयोग से लेकर प्रजनन तक की सारी आवश्यकताएँ सुचारु रूप से संपन्न होती रहती हैं। 'अमीबा' और 'डायटम' जीव इसी स्तर के हैं। उनमें जब प्रौढ़ता आती है, तो अपने ही शरीर को फुला कर उसका आधा भाग अलग छिटका देते हैं और वह एक स्वतंत्र प्राणी बनकर अपनी अलग वंश परंपरा का संचालन करता है।

जीवित कहे जाने वाले प्रत्येक जीवधारी या जीवाणु में मेटाबॉलिज्म या चयापचय, प्रजनन शक्ति होती है। सृष्टि में जीवधारियों का उत्पादन-अभिवर्धन कैसे उत्पन्न हुआ ? इसका युक्तिसंगत एकमात्र उत्तर यही हो सकता है कि, आदिजीवाणुओं में अपने आपको विखंडित करके, संतानोत्पादन करने की सरलतम योग्यता विद्यमान थी। उसी के आधार पर जीवधारियों की संख्या बढ़ी और परिस्थितियों के अनुरूप उन्होंने अपनी काया तथा चेतना का विकास-परिष्कार किया। रति क्रिया का प्रचलन तो बहुत बाद में—तब हुआ—जब प्राणधारी एकलिंगी न रहकर द्विलिंगी बन गये और उन नर-मादा की जननेंद्रियाँ स्पष्ट उभरीं तथा गर्भ धारण के योग्य हो गईं। इससे पूर्व अपने शरीर से विखंडित होकर ही पीढ़ियाँ बढ़ाने का प्रचलन था। इसके आगे—मध्यकाल—में उभयलिंगी अंतःस्राव मात्र उभय और पुष्प-पराग की तरह जीवधारी नर-मादा परस्पर स्नेह-आलिंगन का क्रिया-कलाप गंध-मादकता के आधार पर करने लगे थे। उतने से ही उनमें प्रजनन उपयोगी हलचलें उठ खड़ी होती थीं और संतान होने लगती थी। यौन संपर्क तो बहुत बाद की प्रगतिशीलता है।

सेलों के भीतर भरे न्यूक्लिक एसिड के माध्यम से पूर्वजों की शारीरिक, मानसिक विशेषताएँ संतान में हस्तांतरित होती हैं। एडमोसिन फास्फेट रसायन का होना प्रजनन योग्यता के लिए आवश्यक है। इन तत्त्वों को यदि प्राणियों में घटाया-बढ़ाया जा सके, तो उनकी प्रजनन क्षमता का स्तर भी बदल सकता है। यह असंभव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं कि क्षुद्र-जीव अनभ्यस्त रति क्रिया अपनाने लगे और सुविकसित प्राणी जिनमें मनुष्य भी सम्मिलित हैं, अकेला—बिना सहचर के, बिना रति क्रिया के सुयोग्य संतान का उत्पादन कर सकें।

पेप्टाइड रसायन का यह विदित गुण है कि गरम करने पर वह पानी में घुलता है और ठंडा होने पर छोटे पिंड की शकल धारण कर लेता है। बाहर से उपयुक्त रासायनिक भोजन मिले और उपयुक्त ऊर्जा का वातावरण मिले, तो उनमें विभाजन की प्रजनन-प्रक्रिया आरंभ हो जाती है। इसी आधार पर जीवशास्त्री कृत्रिम जीवाणु उत्पन्न करने और उनसे वंश वृद्धि का उपक्रम आरंभ कराने के लिए प्रयत्नशील हैं।

आये दिन ऐसी घटनाएँ सामने आती रहती हैं, जिनमें नर के भीतर नारी के अथवा नारी के भीतर नर के यौन चिह्न विकसित होते चले गये और स्थिति यहाँ तक जा पहुँची कि आपरेशन करके उनका लिंग परिवर्तन करना पड़ा। यह परिवर्तन इतना सफल रहा कि उन्होंने जोड़ा बनाया और सफल दांपत्य जीवन जीते हुए संतानोत्पत्ति भी की।

मनोविज्ञान और अध्यात्म-विज्ञान के आधार पर यह सिद्धांत मान्यता प्राप्त है कि लिंग परिवर्तन के लिए मानवी प्रयत्न बहुत हद तक सफल हो सकते हैं। बहुत कुछ परिवर्तन तो इस जन्म में भी हो सकते हैं, अन्यथा अगले जन्म में तो वह संभावना शत-प्रतिशत साकार हो सकती है। पुराणों में इस प्रकार के अगणित उदाहरण भरे पड़े हैं, जिनमें व्यक्तियों ने अपने संकल्प बल एवं साधना उपक्रम के द्वारा लिंग-परिवर्तन में सफलता प्राप्त की है। इन दिनों भले ही वे उपचार विस्मृत-विलुप्त हो गये हों, इसमें तथ्य तो जहाँ के तहाँ ही रहेंगे। आत्मा के सुदृढ़ संकल्प और प्रयत्न यदि प्रखर होवें, तो किसी भी आत्मा के लिए अपना वर्तमान लिंग बदल लेने की पूरी-पूरी संभावना हो सकती है।

कभी-कभी किन्हीं पुरुषों में नारी प्रकृति और नारियों में पुरुष प्रकृति पाई जाती है। उनके हाव-भाव, स्वभाव एवं आचरण में इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकार का अंतर स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इसका एकमात्र कारण यह है कि पिछले दिनों उनकी मंद इच्छा लिंग-परिवर्तन की तो रही, पर उनमें प्रौढ़ता-प्रखरता नहीं आई। यदि उनका संकल्प बल और प्रयत्न बलशाली रहा होता, तो उन्हें इस प्रकार के आधे अधूरे परिवर्तन का सामना न करना पड़ता। इतने पर भी उनकी प्रवृत्ति और परिवर्तन की दिशा में ही मन चलता रहे, तो यह आशा की जा सकती है कि इस विराम के उपरांत वे अभीष्ट मनोवांक्षा के अनुरूप लिंग-परिवर्तन का लक्ष्य अगले जन्म तक पूरा कर लेंगे।

कभी-कभी ऐसी घटनाएँ भी सामने आई हैं, जिनमें पुरुष के शरीर से भी बच्चों का जन्म हुआ है। भले ही वे भ्रूण अविकसित रहे हों और भले ही वे जुड़वाँ भाई समझे जा सकते हों, पर उत्पत्ति तो नर शरीर से हो ही गई। इन उदाहरणों से यह तो सिद्ध होता ही है कि मात्र नारी के शरीर में ही नहीं, नरकलेवर में भी वह क्षमता मौजूद है कि गर्भ धारण करने से लेकर गर्भ-पोषण तक की क्रिया संपादन कर सके। अवसर मिले तो इस संभावना का अधिक विकास भी हो सकता है और नारी की तरह ही नर भी प्रजनन कर्म कर सकने में समर्थ हो सकते हैं।

फ्रांस के एक १७ वर्षीय लड़के जीन जैक्यूस लौरेंट को छाती के दर्द की शिकायत थी। डॉक्टरों ने फेफड़े का ट्यूमर पाया और उसका आपरेशन किया। डॉक्टरों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने ट्यूमर के स्थान पर ३ पौंड ९५ औंस वजन का एक विकसित अंगों वाला बच्चा निकाला।

ब्रिटिश पैथोलोजिस्ट ऐसोसियेशन ने एक भ्रूण को, लड़के का जुड़वाँ भाई बताया है, जो गर्भ-काल में किसी प्रकार उसके शरीर में प्रवेश कर गया और वहीं बढ़ता पलता रहा।

इसी प्रकार एक घटना बरेली (उ० प्र०) के जिला अस्पताल में हुई। बदायूँ निवासी एक दो वर्ष के बालक का आपरेशन पेट का ट्यूमर समझकर किया गया। पेट खोलने पर उसमें एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विकसित भ्रूण पाया गया, जिसे अधिक अन्वेषण के लिए सुरक्षित रख लिया गया।

नर के शरीर से बच्चे की उत्पत्ति की अनेक घटनाएँ बहुचर्चित हैं और उनके विवरण पत्र-पत्रिकाओं में विस्तारपूर्वक छपे हैं। सन् १९५६ में टोक्यो अस्पताल में एक किशोर लड़के के पेट का आपरेशन करके, उसमें से ११ औंस का अपरिपक्व बच्चा निकाला गया था। बच्चे की टाँगें, बाल एवं शरीर के अन्य भाग स्पष्ट थे। उसी साल सन् १९५६ में उत्तर वियतनाम के हनोई अस्पताल में एक पुरुष का आपरेशन करके बच्चा निकाला था, जो जन्मते समय रोया भी था।

सन् १९५४ में पाकिस्तान के बहावलपुर नगर के विक्टोरिया अस्पताल में डॉक्टरों ने एक पुरुष का पेट चीरकर बच्चा निकाला था।

इन तथ्यों पर गहराई से विचार किया जाए तो इस निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि नर और नारी के कलेवर धारण करती और बदलती रहने पर भी आत्मा की स्थिति दोनों से ऊपर है, अथवा उभयपक्षीय संभावनाओं से भरपूर है। जो आज नर है, उसे कल नारी बनना पड़ सकता है। इसी प्रकार नारी को नर की भूमिका संपादित करने का अवसर भी मिलता है। यह आवरण सामयिक है और आत्मा का कोई लिंग नहीं होता। एक ही जीवात्मा अपने संस्कारों और इच्छा के अनुसार पुरुष या नारी, किसी भी रूप में वैसी ही कुशलता से जीवन जी सकता है। नर-नारी के भेद, प्रवृत्तियों की प्रधानता के परिणामस्वरूप शरीर, मन में हुए परिवर्तनों में भेद हैं। उनमें से कोई भी रूप श्रेष्ठ या निकृष्ट नहीं, अपने व्यक्तित्व के वजन यानी गुण क्षमताओं और विशेषताओं के आधार पर ही कोई व्यक्ति उत्कृष्ट या निकृष्ट कहा जा सकता है, लिंग के आधार पर नहीं। व्यक्तित्व का कोई लिंग नहीं होता, उसकी प्रवृत्तियाँ और प्रकृति हुआ करती हैं, जो अंतःकरण की मान्यताओं और संस्कारों का ही परिणाम है और जिनमें यथेष्ट परिवर्तन भी संभव है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चाहें तो नर बन जाएँ, चाहें तो नारी

मार्कंडेय पुराण में अनुसुइया के तीन पुत्र—चंद्रमा, दत्तात्रेय और महर्षि दुर्वासा के जन्म का विवरण आता है। यह तीनों ही देव शक्तियों के अंशावतार थे। उनकी चेतना का संबंध ब्रह्मांड की अदृश्य शक्तियों के साथ था, जबकि शरीरों का निर्माण रासायनिक ढंग से हुआ था।

कथा इस प्रकार है। एक बार सती अनुसुइया ने ऋतु-स्नान किया। प्राकृतिक जीवन में रहने के कारण उनका सौंदर्य वैसे ही अपरिमित था। स्नान के बाद तो जैसे स्वयं कामदेव ही उनके शरीर में उतर आये। रजोदर्शन के उपरांत श्रृंगार किये हुए अनुसुइया को देखकर, एकाएक महर्षि अत्रि का मन कामोद्वेग से विचलित हो उठा। इससे उत्पन्न हुए विकार को व्यर्थ न जाने देने के लिए उन्होंने तीन प्रकार के रसायन (१) रजोगुणी—जिसे विष्णु का अंश कहते हैं। (२) सतो गुणी—ब्रह्मा का अंश और (३) तमोगुणी-शिव का अंश तैयार किये। यह तीनों एक प्रकार से अंड थे, जिनमें उन्होंने अपने वीर्य कोष स्थापित किये। भ्रूण के विकास के लिए उचित परिस्थितियाँ आवश्यक होती हैं, इसलिए इन तीनों को बाद में उन्होंने अनुसुइया के गर्भ में बिना संभोग के प्रतिष्ठित किया। यही गर्भ अंत में क्रमशः चंद्रमा, दत्तात्रेय और दुर्वासा के रूप में जन्मे। इन तीनों संतानों में अपने-अपने रसायनों के प्रकृति गुणों के साथ दैवी-गुणों की बहुतायत थी।

तामस मनु की उत्पत्ति भी इसी प्रकार स्वराष्ट्र नामक राजा के प्रभाव से एक हरिणी के गर्भ से हुई थी। इनमें शारीरिक दृष्टि से पशुओं के लक्षण होते हुए भी मानसिक दृष्टि से प्रकांड पांडित्य था। नृपति स्वराष्ट्र ने यह विद्या बहुत तप करके पाई थी। उन्होंने पंचाग्नि विद्या का गहन अध्ययन, अन्वेषण और प्रयोग किया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रावण स्वयं बड़ा वैज्ञानिक था। उसने भी अपनी मंदोदरी के उदर से एक ऐसे ही भ्रूण को जन्म दिलाया था, पर पीछे उसने उसे असफल मानकर समुद्र में फिकवा दिया। इस भ्रूण की विलक्षणता यह थी कि उसमें लाखों वीर्य-कोष एक साथ विकसित हो गये थे। गर्भ में यह संभव न था कि वे सब बच्चे हो जाते। दबे रहने के कारण अविकसित रह गये, इसीलिए यह प्रयोग असफल हो गया था। यही भ्रूण बहते-बहते एक पीपल की जड़ों में अटक गया। वीर्य-कोषों में जीवन तो था ही। सम्मिलित भ्रूण छितर गया और वे सब पीपल का दूध चूस-चूसकर उसी तरह बढ़ने लगे जैसे कोई एक कोषीय जंतु (प्रोटोजोआ) विकसित होता है। आखिर समुद्री आहार ले-लेकर यह सब एक लाख पुत्रों में परिणत हो गये। उनमें सबसे प्रथम बालक "नारांतक" नाम से प्रख्यात हुआ, शेष सब भाइयों को लेकर उसने "विहवावल" राजधानी बनाकर स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। यह सभी एक लाख भाई जुड़वाँ भाइयों के समान इतने मिलते-जुलते थे कि बाहर का कोई भी व्यक्ति उनमें से किसी की भी पहचान नहीं कर सकता था।

अरब में पाये जाने वाले फायनिक्स पक्षी (यह पक्षी वहाँ रेगिस्तान में ६वीं शताब्दी तक पाये जाते रहे) के संबंध में भी एक ऐसा ही पौराणिक आख्यान आता है, जिसमें यह बताया गया है कि रेगिस्तान में एक जगह राख पड़ी हुई थी। एक संत ने उसमें से ही युवा फायनिक्स को बनाया। ऐसा लगता है इस राख में प्रजनन वाले कोई अंश रहे होंगे और संत उनका जीव-विज्ञान से संबंध जानते रहे होंगे, तभी उनके लिए यह संभव हुआ होगा।

रघुवंश में "युवनाश्व" नामक राजा एक बार जंगल में भटककर ऋषियों के आश्रम में पहुँच गये, उन दिनों इस आश्रम में इस तरह का एक प्रयोग चल रहा था। विविध रसायनों से भरा एक घड़ा यज्ञ वेदी पर रखा गया था। यज्ञ के माध्यम से ऋषिगण उसमें जीवात्मा उतारने का प्रयत्न कर रहे थे। घड़े का अधिकांश भाग जल था। (स्मरण रहे प्रोटोप्लाज्मा, जिससे जीवित शरीरों का निर्माण होता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है, उसमें अधिकांश भाग जल का ही होता है।) रात में सब लोग सो गये। युवनाश्व भी यज्ञ मंडप के समीप ही सोये थे। रात में उन्हें प्यास लगी। वहाँ कहीं पानी नहीं दिखाई दिया। प्यास रोक सकने की स्थिति में भी वे नहीं थे, अंततोगत्वा उस घड़े से ही लेकर जल उन्होंने पी लिया। अभिमंत्रित जल उनके उदर में गर्भ के रूप में बढ़ने लगा। ऋषियों के लिए यह और भी कौतूहल की बात हो गई थी, इसलिए वे बराबर युवनाश्व की देखभाल करते रहे। अंत में पूर्ण विकास होने पर युवनाश्व की दाहिनी कोख की शल्य-क्रिया करके बच्चे को जीवित निकाला गया। यह बालक ही मांधाता नाम से विश्वविख्यात हुआ।

सुद्युम्न की कथा अग्नि पुराण में आती है। वह पुरुष से स्त्री बन गया था। तब उसका नाम "इला" हो गया। इला एक दिन राजकुमारी के वेष में वन-विहार के लिए निकली। सोम के पुत्र "बुध" ने उसे देखा तो वे कामासक्त हो उठे। उन्होंने 'इला' को वहीं स्वीकार कर लिया। "बुध" उसी प्रकार की नक्षत्रीय शक्ति है, जिस प्रकार सूर्य और चंद्रमा। वह कोई पुरुष नहीं था। बुध की चेतना शक्ति ने ही इला के गर्भ में प्रवेश किया था। इसी अमैथुनी सहवास से पुरुरवा नामक प्रतापी राजा का जन्म हुआ। भारतीयों में गोत्रों के नाम सूर्यवंशी, चंद्रवंशी आदि नाम से चलते हैं। यह इन्हीं आख्यानों से प्रारंभ हुए हैं, अर्थात् यहाँ अमैथुनी संतानों का प्रचलन किन्हीं दिनों में सामान्य बात थी। यहाँ का वैदिक युग और पुराण काल दोनों ही विज्ञान की चरम प्रगति के काल थे। उन दिनों देव-शक्तियों के आवाहन और धारण द्वारा अमैथुनी संतानें उत्पन्न करने के सैकड़ों सफल प्रयोग हुए। यदि भारतीय अपने आपको यों प्रत्यक्ष देव-वंश का मानें, तो इसमें आश्चर्य जैसी कोई बात नहीं होनी चाहिए। प्रारंभ के 'स्वयंभू' पुरुष की उत्पत्ति भी तो ईश्वरीय ही है। उस पद्धति के बीच में भी, कभी भी पुनः नया रूप देना संभव हो पाये, तो उसमें किसी को आश्चर्य नहीं करना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आज विज्ञान इस दिशा में तेजी से प्रयोग कर रहा है और एक दिन आने वाला है, जब प्रयोगशालाओं में बच्चे पैदा होंगे और उपरोक्त पौराणिक गाथाओं की पुष्टि करेंगे। आज जो लोग वेद-पुराणों को कल्पना की उड़ान कहते हैं, वही उन्हें सत्य सिद्ध होते, अपनी आँखों से देखेंगे।

वैज्ञानिकों ने जीवित शरीर की इकाई प्रोटोप्लाज्मा का विश्लेषण कर लिया। इसमें हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन, सिलिकन, कार्बन, सोडियम, कैल्शियम, क्लोरीन, गंधक, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम और आयोडीन तत्त्व पाये जाते हैं। उन सबको प्रकृति से प्राप्त किया जाना संभव हो गया है, अब उसमें चेतना डालना भर शेष रह गया है। जिस दिन यह भी हो जायेगा, उस दिन अमैथुनी संतानों का निर्माण भी होने लगेगा। तब संतान के लिए न स्त्री की आवश्यकता होगी, न पुरुष की। किन्हीं प्रकाश किरणों से कृत्रिम संतानें उसी प्रकार तैयार कर ली जाया करेंगी—जैसे घड़े से कुंभज ऋषि को पैदा कर लिया गया था। पैतृक गुणों की दृष्टि से यह संतानें देव-शक्तियों का ही प्रतिनिधित्व करेंगी।

कोश (सेल) जीवित पदार्थों द्वारा बनाये जाते हैं। पहले भोजन का प्रोटीन बनता है, फिर प्रोटीन से "सेल"। भोजन को निर्जीव कहें और कोश (सेल) को जीवित, तो प्रोटीन को उनके बीच की इकाई कहेंगे। प्रोटीन ही सजीव "सेल्स" का निर्माण करते हैं, इसके बिना हाथ-पाँव, पेट, मुँह, दाँत आदि कुछ नहीं बन सकते। मुर्गी के अंडों में प्रोटीन आश्चर्यजनक रूप से बढ़ता पाया गया है। इससे यह आशा हो गई है कि जिस प्रकार अन्न से अमीनो एसिड और अमीनो एसिड २४ तत्त्वों में बदलता हुआ जीवित कोश बन जाता है; उसी प्रकार प्रोटीन सीधे भी रासायनिक क्रियाओं से तैयार किया जा सकता है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि वंश परंपरा और विकास के लिए यह प्रोटीन की बनावट और विशेषता ही सहायक है। कोर्नेल विश्वविद्यालय और फेलर इन्स्टीट्यूट न्यूयार्क आदि में यह पता लगाया गया है कि, न्यूक्लिक एसिड [जो लक्षण बीज (जीन्स) के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मूल होते हैं] और अमीनो एसिड दोनों के अणु मिलकर ही शरीर का भवन और चेतना तैयार करते हैं। जीवित सेल में प्रोटीन के उत्पादन का पता लगते ही अमैथुनी सृष्टि का निर्माण प्रारंभ हो जायेगा।

मियामी (फ्लोरिडा) विश्वविद्यालय के आणविक विकास संस्थान के डॉ० सिडनी फाक्स और उनके सहयोगियों का ध्यान उस ओर गया है, जब पृथ्वी में पहली बार जीवन का आविर्भाव हुआ होगा। उस समय तो यहाँ गैस, ताप और पानी ही रहा होगा। इसलिए एक ऐसा थियेटर तैयार करके डॉ० फाक्स परीक्षण कर रहे हैं, जिसमें वैसा ही वातावरण रहे, जैसा जीवन के प्रादुर्भाव काल में रहा होगा। उन्होंने देखा, गैसों को गरम करने से अमीनो एसिड बनते हैं। इस एसिड को गर्म करने से वह प्रोटीनायड का रूप ले लेता है। यदि उसमें पानी मिला दें, तो एक ऐसा जटिल तत्त्व बन जाता है, जो हमारे कोषाणुओं से बहुत कुछ मिलता-जुलता है। यदि जीवित सेल की इस तरह रचना संभव हो गई, तो केवल उस ढाँचे का निर्माण ही शेष रह जायेगा—जिसमें भरकर मनुष्य, पशु-पक्षी, कुत्ते, बिल्ली कोई भी आकृतियाँ बना लेना संभव हो जायेगा।

समझा जाता है कि नर और मादा का संयोग होना संतानोत्पादन के लिए आवश्यक है, पर यह मान्यता बड़े आकार वाले विकसित जीवों पर ही एक सीमा तक लागू होती है। छोटे जीवों में अगणित जातियाँ ऐसी हैं, जिनमें प्रजनन के लिए साथी की सहायता लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती। अपने शरीर में रहने वाली उभय योनियाँ समयानुसार आप ही संयोग बना लेती हैं और उस आत्मरति से ही प्रजनन का अध्याय पूरा हो जाता है।

पुरुष प्रजनन कोष (स्पर्म) में स्त्री और पुरुष दोनों के ही गुण सूत्र संभाव्य हैं, उसी प्रकार बिना पुरुष के समायोजन के अकेले अंड (स्त्री का प्रजनन कोष) की निषेचन क्रिया से भी संतान उत्पन्न की जा सकती है। स्मरणीय है, गुण-सूत्रों का दुगना हो जाना ही गर्भाधान की क्रिया का कारण होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संसार के इतिहास में ऐसे उदाहरण सैकड़ों की संख्या में भरे पड़े हैं, जब केवल स्त्री ने ही संतान को जन्म दिया हो अथवा पुरुष ने अकेले ही कोई बच्चा पैदा किया हो। स्त्री-पुरुषों में से किसी का भी सहयोग न हो, ऐसे प्राणियों के जीवन की संभावनाएँ भी अब सत्य सिद्ध होने जा रही हैं और इस तरह विकासवाद के सिद्धांत की धीरे-धीरे धज्जियाँ उड़ने जा रही हैं।

● शरीर, मात्र आत्मा का आवरण

स्त्री के बीज-कोष (ओवम) और पुरुष के बीज-कोष (स्पर्म) के मिलन से नये शिशु का जन्म और संतति क्रम इस संसार में चल रहा है, पर यदि इसी क्रम को समय की लंबी पाबंदियाँ पार करते हुए पीछे सुदूर अतीत में ले जाएँ, तो एक प्रश्न वाचक चिह्न लग जाता है—सृष्टि का श्रीगणेश करने वाली सत्ता क्या थी ?

इस संबंध में जीवशास्त्रियों और दार्शनिकों ने अपनी-अपनी तरह से विचार किया है। जीवशास्त्री इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि सृष्टि का वर्तमान स्वरूप और विकसित मनुष्य की उत्पत्ति एक कोषीय जीव के क्रमिक विकास का प्रतिफल है।

किंतु अपनी शक्ल निरंतर बदलते रहने वाला एक कोष वाला जीव 'अमीबा' इस बात की घोषणा करता है कि संसार में प्राकृतिक नियम अंतिम सत्य नहीं। अंतिम व्यवस्था जीव चेतना के अंतराल में समाहित है। अमीबा नर-नारी के संयोग से जन्म नहीं लेता। अमीबा बढ़ते-बढ़ते जब पूर्ण प्रौढ़ावस्था में आता है, तो उसके शरीर का प्रथतावलास (प्रोटोप्लाज्म अर्थात् शरीर का रसायन भाग) और केंद्रक (न्यूक्लियस जिनमें इसके जीवन के लक्षण होते हैं) दोनों दो भागों में विभक्त हो जाते हैं और इस तरह के एक नये स्वस्थ शिशु अमीबा का जन्म हो जाता है। अमीबा की वंश-वृद्धि का क्रम इसी भाँति चलता रहता है, जो इस बात का उदाहरण है कि व्यवस्था की दृष्टि से सृष्टि ने आज जो भी रूप ले लिया हो, पर सृष्टि उद्भव और विकास की सारी शक्ति जीवन के मूल तत्त्व इच्छा शक्ति पर आधारित है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्पंज नाम का एक छिद्रिष्ठ (फाइलम पोरी फेरा) जीव भी इसी कोटि में आता है। स्पंज के शरीर से चार किलियाँ निकल आती हैं, मानो वह किसी बीज़ के अंकुर हों। कुछ दिन में यह किलियाँ हरकत करती हैं, जिससे स्पंज गोलाकार चक्कर काटने लगता है। यह किलियाँ एक स्पंज के बीज कीट के दूसरे के डिंब कोष से मिलने के कारण पैदा होती हैं और यही स्पंज के अंदर विकसित होकर, उसके किसी एक छेद से निकलकर नये स्पंज के रूप में जन्म ले लेती हैं, पर यह इनकी वंश-वृद्धि का एक तरीका है। दूसरा तरीका अमीबा की तरह का ही है। स्पंज का शरीर बढ़कर, बढ़ा हुआ हिस्सा ही शरीर से अलग होकर दूसरा स्पंज बन जाता है और इस बात को प्रमाणित करता है कि समष्टि जीवन चेतना एक अनादि तत्त्व है, वह तत्त्व अपनी ही इच्छा से सृजन की शक्ति से नितांत संपन्न और समर्थ है।

छत्रिक (जेलीफिश) और इसी तरह के कुछ अन्य जीव भारतीय दर्शन के "रयि और प्राण" तत्त्व का प्रतिपादन करते हैं। सृष्टि के मूल में प्रकृति और पुरुष की यह दो शक्तियाँ ही जहाँ इकट्ठी हो जाती हैं वहाँ एक स्वतंत्र ब्रह्मांड-जीव की सृष्टि हो जाती है। वैसे दोनों दो भिन्न पूरक तत्त्व हैं। छत्रिक के वृषण हाइड्रा के समान परिपक्व हो जाने पर फूट पड़ते हैं, उसमें से छितरी हुई शुक्र-कोशाएँ पानी में तैरने लगती हैं, जहाँ कहीं डिंब कोष का संयोग हो जाता है। शुक्र कोशाएँ १ से २, २ से ४ की गुणोत्तर गति से बढ़ने लगती हैं। छत्रिक प्रारंभ में डिंब कीट (लारवा) की शक्ल ले लेता है और फिर पानी की निचली जमीनी सतह पर जाकर बैठ जाता है। आधा इंच के इस लारवे में कई स्थानों पर दरार पड़ जाती है। धीरे-धीरे सभी दरारों वाले हिस्से टूटकर अलग हो जाते हैं और जितने भी टुकड़े हो जाते हैं—सबके सब नवजात छत्रिक बन जाते हैं।

भिन्न-भिन्न शरीर जीवात्मा के भिन्न-भिन्न क्षेत्र और यंत्र हैं। उनकी मूल चेतना एक ही समष्टि तत्त्व की अंश मात्र है, उसका यह महत्त्वपूर्ण उदाहरण है, किंतु मनुष्य एक सर्वांगपूर्ण यंत्र जो पा गया,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो उसकी लौकिकता और भौतिकता में ही वह फूला नहीं समाया। आज की भौतिकतावादी तृष्णाएँ और मानवीय समस्याएँ इसी आसक्ति के परिणाम हैं। यदि मनुष्य विचार और विवेक से काम ले तो मनुष्य और मनुष्येतर प्राणियों की विचित्रताएँ ही यह समझा देती हैं कि, मनुष्य का सत्य उसकी आत्म-चेतना है, शरीर नहीं। जो काम वह शरीर के विभिन्न अंगों से ले सकता है, वह अपनी मूल चेतना के विकास द्वारा चेतना से चेतना में ही ले सकता है।

कद्दूदाना (टेप वर्म) एक ऐसे ही उदाहरण वाला फीता-कीड़ा है। उसे न तो हाथ-पाँव उपलब्ध हैं और न मुँह। वह तो सुअर से लेकर मनुष्य-शरीर तक जहाँ कहीं भी पहुँच जाते हैं, रक्त शिराओं के द्वारा मांसपेशियों में घुस जाते हैं और अपने शरीर से ही दूसरे के अंग से रस चूसकर बढ़ते रहते हैं। यही स्थिति नर शक्ल कीट की होती है। पाँच इंच लंबे शरीर में आगे दो मूँछें, जो उसे बहिरंग जगत् की सूचना देने में एरियल का काम देती हैं। पेट के ऊपर पतली पूँछ और दो पंख मात्र होते हैं, कोई मुँह नहीं होता। ऐसी स्थिति में उसका एक ही काम रह जाता है—प्रजनन, मादा को गर्भान्वित कर, पड़े रहने भर तक ही उसका सारा जीवन सीमित है। मनुष्य भी यदि भोग-परायण जीवन मात्र जिये, तो उसमें और इन कीट-पतंगों में क्या फर्क रहे ? जबकि मनुष्य को परमात्मा ने एक बहुत ही उपयोगी यंत्रों से जटित मुकुट-मणि शरीर प्रदान किया है।

घ्राणेंद्रिय श्वास के लिए बनाई है। श्वास से ऑक्सीजन तत्त्व मिलता है, यही उसका उपयोग है। उसके लिए तरह-तरह की खुशबुएँ जुटाना उद्देश्य नहीं। ऐसा रहा होता तो परमात्मा ने मे-फ्लाई कीड़ों को भी बढ़िया वाली नाक से सुसज्जित किया होता। यह कीड़ा अपनी त्वचा से ही श्वास लेकर आधी जिंदगी काट देता है, पीछे उसके गलफड़ भी निकल आते हैं।

भँभीरी (ड्रेगन फ्लाई) नामक जीव की आँखों से मनुष्य की आँखें क्या तुलना कर सकती हैं ? इसके पंख और शरीर में ही विधाता ने सौंदर्य नहीं भरा, अंग-अंग में दिव्यता भर दी। संभव है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसे संसार को दिव्य भाव से देखने का गुण रहा हो और उसी के अनुरूप उसे ऐसा शरीर मिला हो। मनुष्य की दो आँखें, दोनों में कुल दो ताल (लेंस), वह भी अधिक से अधिक १८० डिग्री में घूमकर देख सकती हैं, पर ड्रेगन फ्लाई है, जिसकी आँखों में विधाता ने कई-कई हजार छपहल ताल जड़े हैं, वह अपनी गर्दन को स्वतंत्र रूप से ३६० डिग्री में घुमाकर देख सकता है।

सिल्वर मछली के मुँह में दो मूँछें होती हैं, आँखें नहीं होतीं, पर क्या मजाल कि आँखों वाले उसे पराजित कर दें या परेशान करें। उसकी यह मूँछें ही आँख का काम देती हैं। जो बातें अन्य लोग आँखों से भी नहीं देख सकते, वह अपने दोनों एंटीनाओं से सिल्वर मछली बखूबी देख लेती है।

घोंघों (लैंड स्नेल) के लिए पतझर-ऋतु मरण तुल्य होती है। पौधों से खुराक मिलनी बंद हो जाती है, तब घोंघे अपने कवच में घुस जाते हैं और किसी सुरक्षित स्थान में बैठकर बिना कुछ खाये, बिना पिये और साँस लिये, उसी स्थान पर बैठे रहकर जाड़ा बिता देते हैं।

एक बार एक वैज्ञानिक रोडनियस इल्ली का अध्ययन कर रहे थे। उन्होंने जहाँ अन्य आश्चर्यजनक सत्यों की खोज की, वहाँ एक बार यह भी देखा कि पाँचवीं अवस्था की रोडनियस इल्ली का सिर कट गया, तो भी वह ग्यारह महीने तक जीवित पड़ी रही। यह उदाहरण इस बात का प्रमाण है कि जीव-चेतना प्राकृतिक गुण नहीं—एक स्वतंत्र सत्ता है, जिसकी विशेषताएँ नैसर्गिक विशेषताओं से भिन्नकोटि की हैं। पूर्णता के गुण आत्म-चेतना में हैं, अतएव हमें आत्मा का अनुसंधान करना चाहिए।

शरीर तो यंत्र मात्र है। समुद्री झींगे (लोबस्टर) की दो मूँछें होती हैं, जो उसके शरीर से भी लंबी होती हैं। यह उसकी स्पर्शेंद्रिय का काम देती हैं, जिस प्रकार कोई रेडारयंत्र दूर-दूर की सूचनाएँ देता रहता है, उसी प्रकार झींगे की यह मूँछें जब वह सो रहा होता है, तब भी उसे आस-पास के वातावरण की सूचनाएँ देता रहता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसकी विचित्र आँखें इस तरह की होती हैं, मानो एक डंडे में दो मोती जड़ दिये हों, उन्हें वह इधर-उधर हिलाकर देखता रहता है।

प्रकृति के यह विलक्षण रहस्य जब तक अप्रकट हैं, तब तक हम स्थूलताओं से घिरे हैं। यह रहस्य पूर्णतया प्रकट होंगे तो चेतन शक्तियों की महत्ता का पता चलेगा। हम यह मानने को विवश होंगे कि चेतन शक्तियों ने जब धरती में मनुष्य का आविर्भाव किया होगा, तब प्राकृतिक परिस्थितियाँ ही उनके लिए पर्याप्त रही होंगी। विकासवाद की जटिलता से गुजरकर विकसित प्राणी तैयार करना उसके लिए आवश्यक न रहा होगा।

प्रकृति के विलक्षण रहस्यों को प्रकट करने में संलग्न विज्ञान अभी तो कई जीवों के बारे में यही निश्चित नहीं कर पाया है कि वह वनस्पति है अथवा जंतु, समुद्र में पाया जाने वाला एक कोषीय जीव 'डायटम' किस श्रेणी में रखा जाये ? यह अभी तक विवाद का विषय बना हुआ है। इसीलिए उसे उभयनिष्ठ माना है। भारतीय तत्त्व दर्शियों ने इस सारे गूढ़ ज्ञान के आधार पर वृक्षों को संधि-योनि कहा तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं है और न कोई अस्वाभाविकता है।

अथर्ववेद में कहा है—

इयं कल्याण्य जरा मर्त्यस्यामृता गृहि।
यस्यै कृता शये स यश्चकार नजार सः।।

अर्थात्—यह आत्मा जो कल्याण करने वाला है, अविनाशी तत्त्व है और मर्त्य प्राणी के घर शरीर में रहता है। जिसे इस आत्मतत्त्व का बोध हो जाता है, वह सुख प्राप्त करता है और वह सब प्रकार से आदरणीय तथा सम्मानास्पद है।

जो भी हो, इन प्रमाणों से यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि वृक्ष-वनस्पति हों अथवा जंतु, प्राणी, आत्म सत्ता सभी में विद्यमान है। वह स्वयं को किस प्रकार प्रकट करे या चुनने के लिए वह स्वतंत्र है, तथा यह भी कि कौन-सी योनि धारण करे, इसका चुनाव करने के लिए भी स्वतंत्र है ?

❒ ❒

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक ही शरीर में विद्यमान नर और नारी

आस्ट्रिया की एक खिलाड़ी युवती एरिका का लिंग परिवर्तन ऐसे ही हुआ था। १९६६ में जब वह १८ वर्ष की थी, बर्फ पर फिसलने की ओलंपिक प्रतियोगिता में वह विश्व-चैंपियन बन गई थी। १९६७ में पुनः वह प्रतियोगिता में भाग लेने की तैयारी कर रही थी। उसी क्रम में, सभी प्रतियोगियों के साथ उसकी भी शारीरिक जाँच हुई, तब डॉक्टरों ने बताया कि तुम्हारे भीतर का पुरुष-व्यक्तित्व विकसित हो चुका है।

एरिका खिलाड़ी थी। साहस उसमें भरपूर था। उसने विचार किया कि इस स्थिति में लड़की ही बने रहने पर जीवन में अनेक कठिनाइयाँ आएँगी। एक कठिनाई तो सामने ही थी। उसे यह कहकर प्रतियोगिता में भाग लेने से रोक दिया गया कि डॉक्टरी रिपोर्ट के नतीजों के आधार पर अब तुम्हें लड़कियों वाली प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होने के अयोग्य ठहरा दिया गया है।

एरिका ने अपना आपरेशन कराने का निर्णय कर लिया। सात महीनों तक आपरेशन और उपचार का क्रम चला। इसके बाद उसकी अस्पताल से छुट्टी हुई। अब वह एरिक नाम का एक पूर्ण विकसित लड़का था। नया जीवन वह उसी कुशलता से जीने लगा। उसने रीनेट नामक एक लड़की से १९७५ में विवाह किया। १९७६ में एरिक एक बच्चे का पिता बन गया। अपनी पत्नी और संतान के साथ वह आस्ट्रिया के सेंट अरबेन शहर में सुखी गृहस्थ जीवन जी रहा है और एक होटल तथा बर्फ में फिसलने का प्रशिक्षण देने वाला एक स्कूल चला रहा है।

अपने देश में सोलन शहर के निवासी जियालाल सुनार की तीसरी लड़की सुनीता के चार वर्ष की उम्र में आपरेशन के उपरांत पुरुष बन जाने की घटना ताजी है। सितंबर ७८ के प्रारंभ में उसका आपरेशन छह डॉक्टरों ने किया। यह लड़की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

४ वर्ष की थी। डॉक्टरों ने देखा कि उसके मूत्रमार्ग को पुरुषों के मूत्रमार्ग में बदलना एक आपरेशन द्वारा संभव है। दूसरे सभी लक्षण उसमें पुरुषों के ही विद्यमान थे। आपरेशन के बाद सुनीता लड़का हो गई।

आत्मा न स्त्री है न पुरुष, यह इस घटना से स्पष्ट हो जाना चाहिए। जीव सत्ता जिस प्रकार की इच्छा-आकांक्षा करती है, उसी के अनुरूप नया शरीर मिलता है, भारतीय दर्शन की यह मान्यता है। अचेतन मन में, व्यक्ति जिसका विश्लेषण अपने आप भी नहीं कर सकता, यदि इस तरह की आकांक्षा प्रबलतम रूप में घुमड़ रही हो, तो यह परिवर्तन इसी जीवन में परिलक्षित हो जाता है।

१६३४ में प्रकाशित अपनी उपलब्धियों के प्रसंग में फ्रांसीसी सर्जन डॉ० एंब्रोज पारे और मांतेग्ने ने जार्मे गार्नायर नामक एक १५ वर्षीय लड़की के एकाएक पुरुष योनि में बदल जाने की घटना का उल्लेख किया है। जार्मे गार्नायर का जन्म विट्री ले (फ्रांस) में हुआ। वह प्रायः सुअर चराने का काम करती थी। १५ वर्ष की आयु में एक दिन वह जंगल में सुअर चरा रही थी। उसके सुअर किसी किसान के खेत में घुस गये। खेत के किनारे-किनारे ऊँची खाई थी। जार्मे गार्नायर को पता चला तो वह भागी और रास्ते में पड़ रही खाई को लाँघने के लिए जोर से कूदी। कूदने पर उसे पेडू में जोर का धक्का लगा, जिससे उसे यह जान पड़ा मानो उसकी आँतें फटकर बाहर निकल पड़ी हों। लड़की दर्द से चीख उठी। कुछ लोगों ने उसे उठाकर घर पहुँचाया। डॉक्टरों को बुलाया गया। उन्होंने परीक्षा की और बड़े आश्चर्य के साथ घोषित किया कि लड़की लड़का बन गई है। डॉक्टर ने निरीक्षण करके बताया कि उसके पेडू में पुरुष जननेंद्रिय का विकास काफी दिनों से हो रहा था। डॉक्टरों ने इस बात पर आश्चर्य किया कि मनुष्य-शरीर की मूलभूत इकाई में दोनों प्रकार के गुण सूत्र किस प्रकार पाये जाते हैं ? इस घटना से सारे नगर में तहलका मच

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गया और वहाँ एक विशेष गीत गाया जाने लगा, जिसका यह अर्थ होता था—"जोर से मत उछलो, नहीं तो लड़का बन जाओगी।" इस घटना के बाद जार्मे गार्नायर का एक पादरी द्वारा विधिवत् नाम संस्कार कराया गया और तब वह जर्मे मेरिया हो गया।

इंग्लैंड से छपने वाले साप्ताहिक पत्र 'पियर्सन' में एक लेख छपा, जिसका शीर्षक 'कुमारी कौबकोवा से श्री कौबेक' है। कु० जेंकन कौबकोवा चेकोस्लोवाकिया की प्रसिद्ध महिला खिलाड़ी थी। यौवन में प्रवेश करते समय नारियों के विशेष लक्षण उभरते हैं, पर इनके साथ उल्टा ही हुआ। प्रारंभ में स्तन थे, वह छोटे होने लगे। पेडू में उन्हें प्रायः दर्द हुआ करता। डॉक्टरों को दिखाने पर पता चला कि उसके शरीर में पुंलिंग विद्यमान है, तब उसने अपना आपरेशन कराया। आपरेशन में कोई कष्ट नहीं हुआ और वह विधिवत् स्त्री से पुरुष बन गई।

ये घटनाएँ यह बताती हैं कि मनुष्य के शरीर का विकास करने वाला पहला कोश (सेल) स्त्री-पुरुष दोनों की संभावनाओं से परिपूर्ण था। लिंग वाले लक्षण-बीज (जीन्स) में से पहले एक उभार में आया, पीछे दूसरे ने उभार कर लिया और उस मनुष्य ने इसी शरीर में यौन परिवर्तन कर लिया।

अनेक बार शारीरिक दृष्टि से यौन परिवर्तन नहीं होता। शरीर पुरुष का ही रहता है, पर गुण सूत्र (क्रोमोसोम्स) स्त्री के गुणों वाले विकसित हो जाते हैं, ऐसी अवस्था में पुरुष शरीर में रहने वाली चेतना भी स्त्रियों जैसे काम करती रहती है, उसे उसी में अच्छा लगता है। कदाचित् यह पद्धति बदलनी पड़े तो उसमें उसे दुःख होता है। ऐसी अनेक घटनाएँ 'मिस्ट्रीज ऑफ सेक्स' नामक पुस्तक में श्री सी० जे० एस० टामस द्वारा दी गई हैं।

पेरिस के एक सरकारी पदाधिकारी में यह गुण असाधारण रूप में था। वह अपनी ड्यूटी के घंटों के अतिरिक्त जब घर में होता, तो प्रायः हमेशा ही स्त्रियों के कपड़े पहनता, वैसी ही बात-चीत करता, मुख के हाव-भाव भी बिल्कुल स्त्रियों जैसे ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होते। १९२६ में वह कई दिन तक घर से बाहर नहीं निकला, तब पुलिस ने संदेह में घर का ताला तोड़ा। उसने आत्महत्या कर ली थी। मृत्यु के कारणों का तो पता नहीं चला, पर छत से लटकने तक वह जो वस्त्र पहने था, उनसे नारी-वृत्ति का गहरा परिचय मिलता था। अन्य वस्त्रों की बात तो दूर रही, उसने अंडरबियर और मोजे, दस्ताने भी स्त्रियों के ही पहने थे। बाल भी वह स्त्रियों जैसे ही सजाये हुए था।

१९२३ में अमेरिका में एक दुर्घटना घटी। टेस्मर नामक दंपत्ति पर किन्हीं बदमाशों ने आक्रमण कर दिया। आक्रमणकारियों में एक स्त्री भी थी, जिसे श्रीमती टेस्मर ने पहचान लिया। प्रयत्न करने पर पुलिस ने एक शोफर और उसकी पत्नी को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार स्त्री को श्रीमती टेस्मर ने पहचान भी लिया। जेल में रह रही वह स्त्री तब लोगों के आश्चर्य का कारण बनी, जब लोगों ने देखा कि उसकी दाढ़ी-मूँछें निकलनी प्रारंभ हो गईं। पुलिस ने जाँच की तो पता चला, वह बदमाश पुरुष है। उसे स्त्री वेष, हाव-भाव इतने पसंद थे कि वह छोटी अवस्था से ही स्त्रियों जैसे रहता, इस पर घर वालों ने उसे निकाल दिया। १९१२ में उसने इडियाना के एक पुरुष से विवाह कर लिया। उसका स्वर बिल्कुल स्त्रियों जैसा था, इसलिए उसे कई बार स्त्रियों के मध्य गाने का भी अवसर मिला। १२ वर्ष बाद उसने एक लड़की से भी विवाह कर लिया, इस पर उसका पति नाराज हुआ, पर बाद में तीनों साथ-साथ रहने को सहमत हो गये। टामस नामक लेखक ने इस व्यक्ति के संबंध में लिखा है, उसमें पुरुषत्व के कोई भी लक्षण नहीं थे।

इंग्लैंड की 'बैबीजेम्स' तो इतिहास की एक मनोरंजक घटना बन गई थी। बैबीजेम्स को पुरुषत्व के हाव-भाव बहुत पसंद थे। उसने अपना स्त्रीत्व आजीवन छिपाये रखकर हास्पिटल में डॉक्टर का काम किया। कॉलेज के दिन भी उसने पुरुष वेश में ही बिताये। १८१६ में वह स्टाफ सर्जन के रूप में भरती हुई और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्नति करते हुए; १८५१ में डिप्टी-इन्स्पेक्टर जनरल, १८५८ में इन्स्पेक्टर जनरल के उच्च पद तक पहुँची। जब उसकी मृत्यु हुई तब जाकर पता चला कि आजीवन पुरुष का सफल अभिनय करने वाला इन्स्पेक्टर जनरल पुरुष नहीं, स्त्री था।

इतिहास के यह पृष्ठ हमें यह सोचने के लिए विवश करते हैं कि शरीर का आत्मा के लिए कोई महत्त्व नहीं। चेतना मन और विचार है और वह इच्छानुसार स्त्री या पुरुष हो सकता है। इच्छाएँ यदि अविकसित रहें तो परिवर्तन एक शरीर में से ही दूसरे शरीर में हो सकता है।

कुछ समय पूर्व अमृत बाजार पत्रिका में एक समाचार छपा था कि हैदराबाद—सिंध की शेरपुर रियासत में गंबात के पास के छोटे से गाँव में काबू नामक १८ वर्षीय लड़का अचानक लड़की हो गया। इसे अब स्त्रियों की तरह मासिक धर्म भी होने लगा है और वह स्त्री के समान गर्भ धारण करने की क्षमता से भी परिपूर्ण है, जबकि जन्म से उसके शरीर में ऐसी कोई संभावनाएँ न थीं।

विकासवाद में अंगों और जंतुओं के लुप्त होकर दूसरे जीवों में क्रमिक रूप से विकसित हो जाने की समय-सारिणियाँ बड़ी लंबी हैं। कई-कई परिवर्तन तो एक-एक लाख वर्ष में होते बताये गये हैं, जिनकी सत्यता कभी भी प्रमाणित नहीं हो सकती। उस समय का कोई जैविक (बायोलॉजिकल) इतिहास उपलब्ध न होने से यह नहीं कहा जा सकता कि विकास की कल्पना सत्य होगी ही। हड्डियों और ढाँचों के बारे में समय संबंधी मान्यताएँ गलत भी हो सकती हैं, पर यह प्रत्यक्ष घटनाएँ तो इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि आत्म-चेतना अपने आप में विलक्षण शक्ति है और वह इच्छानुसार शरीर धारण करने में समर्थ है। कई बार इच्छाएँ स्वयं अनिर्णीत रह जाती होंगी और इस तरह वह ऐसे गुण सूत्रों में फँस जाती होंगी, जिनमें स्त्री व पुरुष दोनों के वंश-बीज विद्यमान रहते होंगे। शरीर में आकस्मिक परिवर्तन इसी आधार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर होना संभव है। नील्स होपर ने 'मैन इनटु वुमन' नामक ग्रंथ में ऐसी अनेक घटनाएँ प्रस्तुत की हैं और अपनी सम्मति देते हुए लिखा है—"यह घटनाएँ सचमुच मानव-जीवन के अस्तित्व को और भी रहस्यपूर्ण बनाती हैं। लगता है कोई ऐसी सत्ता प्रकृति में काम कर रही है, जो अपने आप व्यक्त होने में समर्थ है, उसका स्वरूप और शरीर विचारमय ही हो सकता है।"

ऐसी घटनाएँ भारतीय संस्कृति के इतिहास में भी कम नहीं हैं, महाभारत में शिखंडी के स्त्री से पुरुष में परिवर्तित होने का वर्णन आता है। पांचाल नरेश द्रुपद को रुद्र के आशीर्वाद से एक कन्या हुई। रुद्र की आज्ञानुसार राजा द्रुपद और उनकी रानी के अतिरिक्त यह भेद और किसी को भी प्रकट न हुआ। शिखंडी का पालन-पोषण राजकुमारों की तरह ही हुआ। युवावस्था में पदार्पण करते ही राजा द्रुपद ने शिखंडी का विवाह दशार्ण के सम्राट हिरण्यवर्मा की पुत्री से कर दिया, किंतु राजकुमारी को शिखंडी के संपर्क में आते ही पता चल गया कि वह स्त्री है। उसने यह बात अपने पिता तक पहुँचा दी। शिखंडी को इस बात का पता चला तो उसने दुःखी होकर गृह-परित्याग कर दिया, वह वन में जाकर तप करने लगा। तप करते हुए शिखंडी की व्यथा स्थूणाकर्ण नामक यक्ष को मालूम हुई। उसने शिखंडी की शल्य-चिकित्सा की और उसे पुरुष बना दिया।

सूर्य पुत्र वैवस्वत मनु के पुत्र का नाम सुद्युम्न था। सुद्युम्न एक बार जंगल की ओर गये। वहाँ शिव व पार्वती एकांतवास में थे। सुद्युम्न की उस समय स्त्रियों की तरह काम-वासना भड़की। यों पौराणिक कथा यह है कि शिव ने शाप देकर उसे स्त्री बना दिया, पर ऐतिहासिक तथ्य यह है कि शिव ने औषधि द्वारा उसके प्रसुप्त नारीत्व के लक्षणों को जाग्रत् कर दिया था। इससे वह लड़की बन गया और उसका नाम "इला" पड़ गया। महान् सौंदर्यशाली राजकुमार पुरुरवा का जन्म इस यौन परिवर्तित इला के गर्भ से ही हुआ था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ये पौराणिक गाथाएँ पढ़कर लोग भारतीय धर्म और उसकी आख्यायिकाओं को कल्पना की विलक्षण उड़ान कहकर हँसते और टालते हैं, पर जब वही बात विज्ञान और वर्तमान प्रमाणों के द्वारा सत्य होती दीख पड़ती है, तब वेदों और पुराणों की वैज्ञानिकता को स्वीकार नहीं किया जाता। वही बातें भारतीय संस्कृति और अध्यात्म के लिए अंध-विश्वास बन जाती हैं, जबकि विज्ञान के लिए सत्य और तथ्य। बातें दरअसल दोनों ही एक हैं।

इंग्लैंड में मिडिल ग्रेट स्ट्रीट यारमाउथ नगर की दो बहिनों की घटना बड़ी विलक्षण है। इनका नाम था मार्जोरी और डेजी फेरो। मार्जोरी तब १३ वर्ष की थी और एक आर्ट-कॉलेज में पढ़ती थी, तभी उसे अपनी आवाज कुछ भारी और शरीर में विचित्र परिवर्तन से अनुभव हुए। विवश होकर उसे डॉक्टरों की शरण लेनी पड़ी। डॉक्टरों ने उनके शरीर में पुरुषत्व के लक्षण उभरते देखे। लंदन के एक अस्पताल में उसकी चिकित्सा हुई और वह लड़की से लड़का बन गई। अब उसका नाम मार्क रखा गया।

मार्क और डेजी फेरो कुछ दिन भाई-बहिन की तरह रहे, पर इसी बीच मार्क वाली शिकायत उसे भी उठ खड़ी हुई और उसका भी डॉक्टरों को ऑपरेशन करना पड़ा। मार्क की तरह डेजी फेरो भी लड़का बन गई। उसका नाम डेविड रखा गया। दोनों बहिनें—दो भाई हो गये और दोनों ने बाद में पुनः लड़कों के स्कूल में साथ-साथ शिक्षा ग्रहण की।

इस घटना के पीछे भी वही रहस्य है, जो उन पौराणिक घटनाओं के पीछे थी। इन्हें कोई भी व्यक्ति अंधविश्वास नहीं कहता, क्योंकि यह आधुनिक हैं। यदि ये घटनाएँ सत्य हैं, तो भारतीय अध्यात्म की आख्यायिकाओं को भी सत्य ही मानना पड़ेगा। पुराणकाल विज्ञान के विकास का चरम काल था, उस समय इन घटनाओं द्वारा वही बातें प्रमाणित की गई थीं, जो आज की जा रही हैं। अमैथुनी सृष्टि वस्तुतः आत्म-चेतना का यथार्थ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इतिहास है, उसमें गहन आध्यात्मिक रहस्यों का प्रवेश है, जिन्हें विज्ञान क्रमशः खोलता चला जा रहा है।

यौन परिवर्तन, कृत्रिम गर्भाधान

समाचार पत्रों में छपी कुछ और घटनाएँ इस प्रकार हैं। कैलासनगर (अगरतल्ला) निवासी एक क्लर्क की ६ वर्षीया पुत्री सुमित्रा के शरीर में काफी दिन से ही विलक्षण शारीरिक परिवर्तन के चिह्न प्रकट हो रहे थे। पिता ने अस्पताल में परीक्षण कराया। डॉक्टरों ने बताया कि बालिका का यौन परिवर्तन हो रहा है। बाद में लड़की पूर्ण लड़का बन गई।

नील्स होपर ने अपनी पुस्तक 'मैन, इनटु वुमन' में लिखा है कि ड्रेसडन (जर्मनी) के शल्य चिकित्सक डॉ० वार्नेक्रुत्स ने जिस ईनर वेलनर नामक डेनिश चित्रकार को पुरुष से स्त्री बना दिया, उसका वृत्तांत भी कम मनोरंजक नहीं। ईनर वेलनर जब बीस वर्ष का था, तभी उसने अपने साथ पढ़ने वाली एक लड़की से गंधर्व विवाह कर लिया। चित्रकार के हाव-भाव बहुत कुछ स्त्रियों जैसे थे, यह देखकर पत्नी प्रायः मुस्कराया करती, पर तब तक उनके दांपत्य जीवन के सुख में किसी प्रकार का अंतर नहीं आया।

एक दिन ईनर को उनकी स्त्री ने हँसी-हँसी में अपने कपड़े पहना दिये। इन कपड़ों में ईनर बिल्कुल लड़कियों जैसा लगा। पीछे उसे स्त्रियों के वेष में देखकर, उसके मित्रों ने उसका नाम भी स्त्रियों जैसा रख दिया। अब वह 'लिली' नाम से पुकारा जाने लगा। यह नाम मानो उसके लिए ही चुना गया था। अंत तक वह स्थायी रह भी गया, क्योंकि उसके भीतर सचमुच एक नारी का व्यक्तित्व छिपा था। समय बीतने के साथ-साथ वह लक्षण और स्पष्ट होता गया। उसकी मानसिक प्रक्रियाएँ तो तेजी से नारी के स्वभाव में बदलती गईं। उसे अपने ही यौन-अंगों के प्रति विलक्षण आकर्षण होता। इसे कुछ लोग उसकी मूर्खता और बहम बताते।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कई शल्य-चिकित्सकों ने तो उसे मूर्ख कहकर अपने यहाँ से भगा भी दिया।

वर्तमान विज्ञानवेत्ताओं का ध्यान प्रकृति की इस विलक्षणता की ओर गया होता कि उसके प्रत्येक कण में पुरुष और नारी भाव छिपा पड़ा है, तो वे विकासवाद को यों ही गले का हार न बनाते। वे यह भी सोचते कि जिस प्रकृति में विलक्षण सत्यों के लिए स्थान है, वह स्वतंत्र पुरुष या स्त्री का अमैथुनी निर्माण भी कर सकती है।

फरवरी १६३० में ईनर की अवस्था बहुत गंभीर हो गई। उसने आत्महत्या करने तक का निश्चय किया। सौभाग्य से इन्हीं दिनों ड्रेसडेन के डॉक्टर वार्नेक्रुत्स पेरिस आये हुए थे। सो ईनर के कई मित्रों ने उनसे परीक्षण कराने की सलाह दी। ईनर ने ऐसा ही किया। वार्नेक्रुत्स ने उसके शरीर की परीक्षा करके बताया कि उसके शरीर के भीतर स्त्री और पुरुष दोनों के ही लक्षण हैं, पर दोनों में से पूर्ण विकास के लिए किसी को भी अवसर नहीं मिल रहा है, इसलिए यह कष्टपूर्ण स्थिति है। स्त्री होने की संभावनाएँ अधिक थीं। वार्नेक्रुत्स ने उसे बर्लिन जाकर प्रोफेसर गेबहार्ड के पास शल्य-चिकित्सा की सलाह दी।

ईनर बर्लिन चला गया। वहाँ उसका कठिन ऑपरेशन किया गया। ऑपरेशन के कुछ ही समय बाद उसकी आवाज विलक्षण ढंग से बदलने लगी। अब उसकी आवाज कोमल और सुरीली हो रही थी। ऑपरेशन से उसकी पुरुष योनि स्त्री योनि में बदल ही चुकी थी। कुछ ही महीनों में उसके स्तन भी उभर आये और इस तरह एक अच्छा हृष्ट-पुष्ट युवक कोमल भोली-भाली स्त्री में बदल गया। प्रकृति की इस विलक्षणता पर वैज्ञानिक कुछ भी प्रकाश डालने में असमर्थ हैं, पर अब वे यह स्वीकार करते हैं कि प्रकृति में कोई विलक्षण मानसिक चेतना काम कर रही है और वह अपने आप ही ऐसे विलक्षण जीव और शरीर उत्पन्न करती रहती है। संभव है आरंभ में मनुष्य का आविर्भाव भी ऐसी ही अमैथुनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्थिति में हुआ हो। इसी प्रसंग में "अर्द्ध नारीश्वर" के रहस्यों पर अलग प्रकाश डाला जायेगा, जिसमें प्रकृति की सर्वशक्तिमत्ता का और भी विलक्षण प्रतिपादन होगा तथा उसमें ऐसे पुरुषों के उदाहरण भी पढ़ने को मिलेंगे, जिन्हें स्त्रियों के समान ही मासिक धर्म भी होता था और जो दूध भी दे सकने की स्थिति में थे।

● मनुष्य अपने आप में पूर्ण है

इन घटनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मनुष्य अपने आप में परिपूर्ण है और उसमें नर तथा नारी दोनों का अस्तित्व विद्यमान रहता है, जो समय पाकर कभी भी प्रकट हो सकता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

यह कहा जाता है कि नर-नारी एक-दूसरे के पूरक हैं; एक के बिना दूसरे का काम नहीं चलता। दोनों के बीच का आकर्षण उन्हें घनिष्ठता के सूत्र में बाँधता है। इसलिए उन्हें एक-दूसरे से पृथक् न रहकर साथ-साथ रहना चाहिए।

यह प्रतिपादन एक सीमा तक ही ठीक है। माता-पिता की सहायता के बिना पुत्र या पुत्री का काम नहीं चलता। बहिन-भाई के दुलार के बिना घर में उदासी रहती है। परिवार में चाची, ताई, बुआ, भाभी, बहिन, बेटी आदि का अपना पक्ष है और बेटे, पोते, भाई, चाचा, ताऊ आदि-आदि का अपना। दोनों पक्ष साथ-साथ मिल-जुलकर एक घर में रहते हैं, तो उसमें नर-नारी के समन्वय से उत्पन्न एक पूरक स्थिति बनती है और उस द्विपक्षीय स्नेह, सहयोग से परिवार का वातावरण खिल पड़ता है। यह तथ्य ऐसा है जिससे इनकार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। सहयोग हर क्षेत्र में सुखद होता है। नर-नारी का सहयोग भी इस दृष्टि से उचित भी है, आवश्यक भी और श्रेयस्कर भी।

पर इस प्रतिपादन में कोई सार नहीं कि यौनाचार के लिए नर-नारी का सम्मिश्रण हुए बिना—विवाह-बंधन में बँधे बिना कोई अपूर्णता रहती है। मनुष्य की क्या, सभी प्राणियों की रचना इस प्रकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हुई है कि वह अपने आप में पूर्ण है। उनके भीतर 'रयि' और 'प्राण' दोनों ही तत्त्व विद्यमान हैं और वे अपने भीतर ही नर-नारी मिलन से जो शक्ति उत्पन्न होने की बात कही जाती है, उसे अनायास ही पूरा करते रहते हैं। नारी पक्ष और नर पक्ष दोनों ही उसके भीतर विद्यमान हैं। उसमें से जो अधिक विकसित हो जाता है, प्रधानता अवश्य उसी स्तर की होती है, पर इसका अर्थ यह नहीं कि किसी तत्त्व की ऐसी कमी होती है जिसकी प्राप्ति के लिए नर को नारी से या नारी को नर से कामुक संबंध बनाये बिना काम ही न चले।

संसार के निम्नतर जीवधारी प्रत्यक्षतया उभयलिंगी होते हैं। वे अपने आप में ही नर और नारी की दोनों ही विशेषताओं से युक्त होते हैं। उन्हें किसी एक जाति का घोषित नहीं किया जा सकता। वनस्पतियों में यही बात होती है, पुष्पों के माध्यम से उनका रजोधर्म होता है। खिलने का अर्थ है गर्भ धारण करने योग्य यौवन का उभार। हवा के साथ उड़कर या मक्खी, तितली आदि कीड़ों के सहारे पुष्पों का पराग एक-दूसरे तक पहुँचता है। उससे उनका निषेचन होता है और गर्भ धारण करके फल देने लगते हैं। फलों में उभयपक्षीय पराग पाया जाता है। गर्भ धारण करने की और गर्भ धारण कराने की भी—दोनों ही क्षमताएँ उनमें पाई जाती हैं। न्यूनाधिक मात्रा होने की बात दूसरी है, पर सभी पुष्प होते उभयलिंगी हैं। उनके परागों में दोनों लक्षण पाये जाते हैं। प्रयत्नपूर्वक उनके किसी भी पक्ष को उभारा जा सकता है, जिसे आज नारी जाति का पराग कहते हैं, उसमें थोड़ा-सा प्रयत्न करके उन्हें नर जाति का बना दिया जाता है। अधिकांश वनस्पतियों में तो दूसरे पौधों का पराग पाने की आवश्यकता ही नहीं होती, उनके भीतर अपने आप ही अंतर्मिलन का उपक्रम बनता रहता है और फूल, फल, बीज उत्पन्न होते रहने की प्रक्रिया चलती रहती है। दूब जैसी घास अपने आप में वंश वृद्धि की दृष्टि से पूर्ण है। उसे इसके लिए किसी बाहरी सहयोग की जरूरत नहीं पड़ती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बहुत-से पौधे ऐसे हैं, जिनकी लकड़ी काटकर अन्यत्र गाड़ देने पर नया पौधा उग आता है। गन्ना इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। उसकी हर गाँठ में नर-नारी के उभयपक्षीय चिह्न होते हैं और वे अपने पेड़ से अलग होने पर स्वतंत्र वंश वृद्धि करने लगते हैं। गुलाब आदि कितने ही पुष्प जाति के पेड़-पौधे इसी प्रकार के हैं। बरगद, गूलर जैसे वृक्षों की डाली काटकर अन्यत्र लगा देने से नया पेड़ उत्पन्न होने लगता है। वनस्पति जगत् प्रायः पूरा ही इस प्रकार का है कि प्रजनन की उभयपक्षी आवश्यकताएँ अपने भीतर से ही उत्पन्न कर लें।

एक कोशीय 'अमीबा' जीवधारियों में सब से पुरातन है। वह अपने शरीर के टुकड़े काट-काटकर पृथक् करता रहता है और वे स्वयमेव एक स्वतंत्र जीव बनते रहते हैं।

यौन आकर्षण को प्रजनन प्रेरणा के नाम से वैज्ञानिक जगत् में पुकारा जाता है। उनका कहना है कि स्त्री और पुरुष के बीच जो भावनात्मक आकर्षण पाया जाता है, उसके पीछे प्रकृति की प्रजनन प्रेरणा ही काम करती है। उनकी बात उसी सीमा तक ही ठीक है। इन दो वर्गों में एक में वाम पक्षीय और दूसरे में दक्षिण पक्षीय विद्युत् शक्ति काम करती है और वे परस्पर मिलकर वंश वृद्धि का सरंजाम जुटाते हैं। इससे आगे बढ़कर यह कहना गलत है कि एक के बिना दूसरा अपूर्ण है और दोनों जब तक कामुक उद्देश्य से मिलेंगे नहीं, तब तक उनमें अभाव बना रहेगा एवं अतृप्ति अनुभव होगी। यह कहना इसलिए गलत है कि तृप्ति, उल्लास एवं अपूर्णता को पूर्णता में विकसित करने वाले आवश्यक तत्त्व हर प्राणी में मौजूद हैं। उनमें विकास की समस्त आवश्यकताएँ पूरी की जाती हैं, की जा सकती हैं। मनुष्य भी इनका अपवाद नहीं है।

छोटी जाति के जीवधारियों में अधिकांश उभयलिंगी होते हैं और वे अपनी प्रजनन आवश्यकता आत्मरति से ही पूर्ण कर लेते हैं। इनमें डिंब कीट भी होते हैं और शुक्र कीट भी। एक स्थान से दूसरे स्थान तक रेंगकर वे भीतर ही भीतर निषेचन एवं गर्भ धारण का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कार्य पूरा कर लेते हैं और वे जीव बिना दूसरे साथी की सहायता के अपनी वंश वृद्धि एकाकी पुरुषार्थ से करते रहते हैं।

कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के शोध विभाग ने छोटे जलचरों की ऐसी ३०० से अधिक जातियाँ ढूँढ़ निकाली हैं, जो प्रजनन के मामले में पूर्णतया आत्म-निर्भर हैं। जमीन पर रेंगने वाले और उड़ने वाले कीड़ों में भी हजारों ऐसे हैं, जिनमें काम सेवन के योग्य अवयव नहीं होते। उनका अपना यौवन ही उन्हें जनक एवं जननी दोनों का श्रेय प्रदान करने लायक रासायनिक द्रव्य अपने भीतर से ही उत्पन्न कर लेता है और वे स्वतंत्र रूप से एकाकी संतानोत्पादन करते रहते हैं।

'आर्थोपोडा' कीड़ा उस 'इनसेक्ट' वर्ग में आता है। उसकी बिरादरी आये दिन अपना लिंग परिवर्तन करती रहती है। कभी नर कभी नारी के अवयव विकसित होते और बदलते रहते हैं। कहा नहीं जा सकता कि वह कब तक नर रहेगा और कब तक नारी बन जायेगा। कब उसे पिता कहा जायेगा और कब उसे माता की श्रेणी में गिना जायेगा। उसके साथी ऐसी ही उलट-पुलट करते रहते हैं। पति कभी पत्नी बन जाता है और कभी पत्नी पति बनकर अकड़ती फिरती है। यह परिवर्तन कुछ अद्भुत नहीं है, क्योंकि उनके भीतर दोनों ही तत्त्व रहते हैं। थोड़ा प्रतिशत का ही अंतर रहता है, जिसे प्रकृति की छोटी-सी हलचल ज्वार-भाटे की तरह घटा-बढ़ा देती है और वे कभी इधर कभी उधर लुढ़कते-बदलते रहते हैं।

बड़ी जाति की मछलियों में यौन परिवर्तन तो नहीं—पर प्रजनन तत्त्व आसानी से घटाये-बढ़ाये जा सकते हैं। बर्लिन के जल-जीव शोध-संस्थान ने मछलियों में कई प्रकार के विशिष्ट विद्युत् प्रकाश देकर उनकी पिट्यूटरी ग्रंथि में पाये जाने वाले स्टियुर्लिटिंग और लूटिनाइजिंग हारमोनों की मात्रा बढ़ाने में सफलता प्राप्त कर ली है। इस प्रयोग से उन मछलियों में चार गुनी प्रजनन क्षमता बढ़ी और उनने उसी अनुपात में अंडे दिये। कैटफिश आमतौर से जुलाई और सितंबर के बीच केवल एक बार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अंडे देती है, उसे विशेष वातावरण में रखकर और विशेष चारा देकर साल में चार बार अंडे देने का अभ्यस्त बना दिया गया।

प्रो० रिचार्ड गोल्ड स्मिथ ने जिप्सी नोथ पतंगे पर प्रयोग करके उसे नर से नारी और नारी से नर बना देने में सफलता प्राप्त की है। उनका कहना है कि इसमें कोई आमूल-चूल परिवर्तन नहीं करना पड़ा। इसमें दोनों ही क्षमताएँ विद्यमान थीं, उनके अनुपात को थोड़ा-सा घटाने-बढ़ाने में ही जरा-सा श्रम करना पड़ा है। ऐसा ही प्रयोग फ्रांस के प्रो० वर्नाड जेम्स ने ड्रोजोफिला कीड़े पर किया है, वे भी लिंग-परिवर्तन के अपने प्रयोगों में पूर्ण सफल रहे हैं।

मनुष्यों में इस प्रकार के प्रत्यक्ष परिवर्तन अब बहुत बड़ी संख्या में प्रायः हर देश में सामने आ रहे हैं। नर में नारी के और नारी में नर के यौन चिह्नों का प्रकट, विकसित और परिपुष्ट होना—अस्पतालों में शल्य-चिकित्सा द्वारा उनका पूर्णरूपेण लिंग परिवर्तन होना, अब आश्चर्य कौतूहल का विषय नहीं रहा। ऐसी घटनाएँ आये दिन समाचार पत्रों में छपती रहती हैं। अब यह मान लिया गया कि ऐसा होना शरीर विकास का एक छोटा-सा दिशा परिवर्तन मात्र है, कोई असंभव या प्रकृति क्रम का व्यतिरेक या विपर्यय नहीं। अब ऐसी घटनाएँ जो अस्पतालों के रिकार्ड में दर्ज हैं—हजारों की परिधि को लाँघ चली हैं।

जोर्डन लेग्ले पाल तीस वर्ष की आयु तक एक प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक के रूप में विख्यात थे। उनकी अमेरिका में धाक थी। सम्मानित पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख छपते थे और इसी आधार पर वे अच्छी आजीविका उपार्जित करते थे। रहस्य प्रकट होने से पूर्व कई वर्ष से वे अनुभव कर रहे थे कि उनका सैक्स बदल रहा है। वे नर से नारी के रूप में क्रमशः परिवर्तित हो रहे हैं। मूँछों पर पहले सामान्य लोगों की तरह बाल आते थे, पीछे वे उगने बंद हो गये। वक्षस्थल पर स्तन उभरने लगे और जननेंद्रिय छोटी होते-होते मात्र मूत्र विसर्जन का माध्यम भर रह गई। उन्हें लगने लगा कि भीतर ही भीतर एक नई जननेंद्रिय उभर रही है—जो नारी जैसी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुछ समय ऐसे ही छिपाये रहने के पश्चात् उन्होंने अपनी डॉक्टरी परीक्षा कराई, तो विदित हुआ कि वे लगभग पूर्ण नारी की स्थिति में पहुँच चुके। इसके लिए एक छोटा आपरेशन करना मात्र शेष है। वह कराया गया और वे सचमुच ही नारी बन गये। अमेरिका के चार्ल्सटन नगर के लोगों ने कौतूहलपूर्वक इस समाचार को सुना और समाचार पत्रों में उनकी चर्चा हुई। बात इतने तक ही समाप्त नहीं हुई। उन्होंने अपना नाम बदला और एक नीग्रो युवक जानपाल सिमोंस से अपना विवाह कर लिया। यह विवाह भी बहुत चर्चा का विषय रहा और उसका भरपूर विरोध हुआ, क्योंकि दक्षिणी अमेरिका अपेक्षाकृत रंग भेद की नीति में अधिक कट्टर है और वहाँ गोरी लड़की का काले लोगों के साथ विवाह करने को सामाजिक अपराध माना जाता है। इतने पर भी वह विवाह हुआ और उन्होंने सफल दांपत्य जीवन निबाहा।

इन लिंग परिवर्तित व्यक्तियों के स्वभाव में तो बहुत पहले से ही अंतर आ गया था, पर परिवर्तित यौन उभार पीछे दिखाई पड़े। शल्य क्रिया के पश्चात् उनकी स्थिति परिपक्व होती चली गई और वे पिछली आदतों को भूलकर पूर्णतया नर से नारी की आकृति एवं प्रकृति में बदल गये। उन्होंने अपने विवाह किये और सुखी गृहस्थ भोगा। पिछले दिनों एक कमी थी, कि ऐसे परिवर्तित लिंग वाले विवाह जोड़े संतानोत्पादन नहीं कर पा रहे थे, अब यह बाँध भी टूट गया। कुछ पूर्व चार्ल्सटन (दक्षिणी कैलीफोर्निया) में जान लेग्ले पाल साइमन्स नामक महिला, नर-यौन परिवर्तन कराकर नारी बनी थी। उसने विवाह किया—गर्भिणी बनी और संतान को जन्म दिया। इस प्रकार की संसार में यद्यपि यह पहली घटना है, तो भी यह सिद्ध तो हो ही गया कि परिवर्तन उस सीमा तक भी संभव है।

यह परिवर्तन क्रम यों रिकार्ड में पिछले पचास वर्ष से ही आया है, पर इसका अर्थ यह नहीं कि भूतकाल में ऐसा होता नहीं रहा होगा। चूँकि यह विषय गोपनीय एवं लज्जास्पद माना जाता है; इसलिए जहाँ ऐसे परिवर्तन हुए होंगे, वहाँ छिपाकर रखा जाता रहा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होगा। जनखे तो अभी भी हर देश में पाये जाते हैं। भारत में तो उनकी एक बिरादरी ही बन गई है। अरब देशों में भी वे इसी तरह होते हैं। अन्य देशों में वे विन्यास तो नहीं बदलते, पर मनःस्थिति एवं आदतें तो अक्सर विपरीत लिंग वालों की तरह होती हैं। नपुंसकों का वर्ग ऐसा ही है। स्त्रियों जैसे वस्त्र आभूषण एवं शृंगार किये नाचने, गाने का पेशा करने वाले उसी प्रकार के हाव-भाव व्यक्त करने वाले जनखे कहीं भी पाये जा सकते हैं। इनमें से अधिकांश ऐसे होते हैं, जो पुरुष वर्ग के थे, पर यौन व्यवधान ने उन्हें स्त्री बना दिया। मुगल काल में उनके बहुत बड़े हरम—जिनमें सैकड़ों बीबियाँ रहती थीं, यह जनखे उनकी पहरेदारी करते थे।

नारियों में भी हर क्षेत्र में ऐसी अनेकों घटनाएँ पाई जाती हैं, जिसमें उनकी अधिकांश चेष्टाएँ पुरुषों जैसी होती हैं, उनमें से कितनी ही तो मर्दों जैसी पोशाक भी पहनती हैं और उसी ठसक से चलती, बोलती हैं। इनमें से कितनों की दाढ़ी-मूँछ भी निकलती हैं।

समलिंगी मैथुन एवं विपरीत रति का प्रकरण लज्जास्पद एवं अवांछनीय होने के कारण प्रायः पर्दे के पीछे ही छिपा रहता है, पर यदि पर्दे को उघाड़ा जाए तो प्रतीत होगा कि ऐसे नर-नारी भी कम नहीं—जिनकी यौन तृप्ति अपने वर्तमान लिंग से भिन्न प्रकार की चेष्टाओं से ही होती है। उनके कामुक चिंतन की धुरी प्रायः भिन्न वर्ग के अनुरूप होती है। ऐसे व्यक्तियों के बारे में यह अनुमान लगाया जाता रहा है कि वे पिछले जन्म में दूसरे लिंग के रहे होंगे अथवा जिस दशा में उनकी मनोभूमि चल रही है उसे देखते हुए वे अगले जन्म तक अपना लिंग बदल लेंगे। वैज्ञानिक विश्लेषण इस स्थिति का यह है कि हर मनुष्य में उभयलिंग के तत्त्व रहते हैं। सामान्यतया स्वाभाविक रूप से जो जिस संज्ञा का है, उसमें उसी प्रकार की आकृति-प्रकृति पाई जाती है, पर संभव यह भी है कि भिन्न स्थिति जो प्रायः सुप्त स्थिति में पड़ी होती है—क्रमशः जागती और प्रबल होती चली जाए। दोनों तत्त्वों में से जो बढ़ेगा—वह दूसरे को झीना करेगा। लिंग भेद की स्थिति में जो विपरीत कामुक विचारणाएँ एवं चेष्टाएँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पाई जाती हैं, उनका यही कारण है। यह सब अनायास आंतरिक परिवर्तनों एवं उभारों के कारण भी होता है किंतु यदि कोई चाहे तो संकल्पपूर्वक भी ऐसी विपरीत स्थिति में अपने को ढाल सकता है, क्योंकि मूलतः हर प्राणी में, हर मनुष्य में दोनों स्तर के तत्त्व मौजूद हैं। नारी तत्त्व को 'रयि' और नर तत्त्व को 'प्राण' कहते हैं। एक पाजेटिव है-दूसरा निगेटिव, पर जिस प्रकार विद्युत् यंत्रों से उनमें परिवर्तन किया जा सकता है, उसी प्रकार प्राणियों की शारीरिक व मानसिक स्थिति में भी हेर-फेर संभव है।

उपरोक्त विवेचन-विश्लेषण के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि प्रत्येक प्राणी—विशेषतया मनुष्य अपने आप में न केवल अन्य सभी दृष्टियों से वरन् लिंग भेद की दृष्टि से भी पूर्ण है। आत्मा पूर्ण से पैदा होती है, इसलिए पूर्ण है। **"पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते"** वाले श्रुति वचन में जिस तथ्य का प्रतिपादन किया गया है, वह हर कसौटी पर खरा है। मनुष्य पूर्ण है, उसकी दोनों इकाइयाँ नर और नारी के रूप में भिन्नता युक्त तो हैं, एक- दूसरे के लिए आवश्यक, उपयोगी एवं सहयोगी भी हैं, पर यह कहना उचित नहीं कि एक के बिना दूसरा अपूर्ण है, दूसरे पक्ष की सहायता बिना उसकी आत्मिक या भौतिक प्रगति रुकी पड़ी रहेगी। नारी-कला, कोमलता का और नर-शौर्य, साहस का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनकी विशेषता-अधिकता जरूर रहती है, पर इसका अर्थ यह नहीं कि दोनों पक्षों में से कोई ऐसी विशेषताओं से रहित है, जिससे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक पूर्णता में बाधा पहुँचती है। नर और नारी तथा नारी और नर परस्पर स्नेह-सहयोग से रहें, यह सब प्रकार उचित सराहनीय और मानवी गरिमा के उपयुक्त है, पर किसी को किसी की अनिवार्य रूप से ऐसी आवश्यकता है, जिसके बिना गुजारा ही नहीं, यह सोचना व्यर्थ है।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अमैथुनी सृष्टि होती है, हो सकती है

प्रगति के पथ पर अग्रसर होते हुए जड़ तत्त्व चेतन बनने की दिशा में क्रमिक विकास कर रहे हैं। यह एक तथ्य है। सुविकसित प्राणियों में प्रखर-चेतना भले ही उनमें न हो, पर उनमें किसी मात्रा में वह स्फुलिंग विद्यमान अवश्य है, जो चेतना का सूक्ष्म-सा परिचय देते हैं और अपनी दिशा जड़ता से मुक्ति पाकर चेतना के परम लक्ष्य की ओर रेंगते चलने का आभास देते हैं।

जड़ चेतना में भगवान् की सत्ता के विद्यमान होने का परिचय इसी दृष्टि से प्राप्त किया जा सकता है कि चेतन के स्तर की न सही, एक हल्की-सी झाँकी उसमें भी आगे बढ़ने की, ऊपर उठने की विकसित होने की आकांक्षा के रूप में पाई जाती है। इस अंश को ईश्वरीय चेतन सत्ता की विद्यमानता के रूप में लिया जा सकता है।

हलचल धातु-पाषाण जैसे जड़-पदार्थों में भी पाई जाती है। कोई भी वस्तु पूर्णतया निष्क्रिय नहीं है। उसके परिवर्तन आँखों से भी देखे जा सकते हैं। बारीकी से देखने पर अणु संरचना के भीतर चल रही अत्यंत द्रुतगामी हलचलें तो धूलि के छोटे कण में भी पाई जा सकती हैं, इस सक्रियता को भी ईश्वरीय अंश माना जा सकता है।

साधारणतया जीवन को वनस्पति-वर्ग और प्राणि-वर्ग में बाँटा जाता है, पर सर्वथा निर्जीव कहे जाने वाले धातु-पाषाण जैसे पदार्थों में भी प्रसुप्त चेतना का एक अंश पाया गया है; ऐसी दशा में असमंजस यह खड़ा हो गया है कि क्या जड़-पदार्थों को भी अल्प जीवन क्षमतासंपन्न प्राणधारियों में ही गिना जायेगा। मनुष्य यों प्राणि-वर्ग में ही आता है; पर असाधारण बुद्धिमत्ता, मस्तिष्कीय संरचना, इंद्रिय-चेतना और शरीर गठन को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देखते हुए एक अतिरिक्त चतुर्थ चेतन वर्ग की गणना करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। भोजन को ऊर्जा में बदल सकने की क्षमता वाले को जीवधारी मानने वाली परिभाषा अब बहुत पुरानी हो गई।

सेल में जीवन रस प्रोटोप्लाज्म भरा होता है। उस रस में १२ तत्त्व मिले होते हैं—कार्बन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, हाइड्रोजन, सल्फर, कैल्शियम, पोटेशियम, मैग्नीशियम, लोहा, फॉस्फोरस, क्लोरीन और सोडियम। इससे सिद्ध होता है कि जड़-पदार्थों का सम्मिश्रण जीवन तत्त्व की स्थिरता और प्रगति के लिए आवश्यक है। ऐसी दशा में इन रसायनों में भी जीवन की झाँकी की जाए तो कुछ अनुचित न होगा।

एक जीवित प्राणी में अगणित जीवन तत्त्व विद्यमान रहते हैं। एक बूँद खून में हजारों सेल रहते हैं। रक्त में छोटी-छोटी लाल रक्त की कोशिकाएँ हैं, जिनमें हीमोग्लोबिन नामक लौह मिश्रण बहुलता से भरा होता है। इनसे कुछ कम संख्या में सफेद रक्त कोशिकाएँ हैं। ये रुग्णता के आक्रमण से लड़ती हैं, जिनमें आत्मरक्षा और प्रतिरोधी से लड़ने का ज्ञान, विवेक मौजूद है, उन्हें अचेतन कैसे कहें ? ऐसी दशा में जड़ माने जाने वाले शरीर की प्रत्येक कोशिका को एक स्वतंत्र जीवधारी और जड़ माने जाने वाले शरीर को चेतन घटकों का समूह-संगठन कहने में कोई अत्युक्ति नहीं है।

केंब्रिज विश्वविद्यालय के अणु विज्ञानी फ्रेड होयल और प्रो० जे० वी० नार्बिकर इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि, विश्व रचना संबंधी अणुओं और मनुष्य शरीर के जीवाणुओं की संरचना में कोई मौलिक अंतर नहीं है। भले ही उनकी गतिविधियाँ भिन्न दिशाओं में चलती और भिन्न दिशाओं में काम करती दिखाई दें। इस दृष्टि से अणु भी चेतना के निकट ही जा पहुँचता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

● ईश्वरीय इच्छा का प्रतिफल

जीवन चेतना के अस्तित्व और विकास को लेकर वैज्ञानिक प्रायः विभिन्न मत, विवाद, प्रतिपादित किया करते हैं। इस संदर्भ में डार्विन और लेमार्क आदि के द्वारा प्रतिपादित विकासवाद (थ्योरी ऑफ एवोल्यूशन) का जो सिद्धांत है, यदि वह सत्य नहीं है, तो पृथ्वी में मानव की उत्पत्ति को ईश्वरीय इच्छा का प्रतिफल कहा जायेगा।

ईश्वरीय सत्ता और उसकी सर्वशक्तिमत्ता को काल्पनिक कहने वाले लोग, यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि यदि मनुष्य का प्रादुर्भाव आकस्मिक संयोग है और सबसे प्रथम ब्रह्मा का पुरुष वेष में जन्म हुआ, तो उनके द्वारा संतानोत्पत्ति कैसे संभव हुई ? संतान की उत्पत्ति के लिए स्त्री और पुरुष का समायोजन आवश्यक है, फिर अकेले ब्रह्मा जी अमैथुनी सृष्टि उत्पन्न करने में किस प्रकार समर्थ हुए ?

अमैथुनी सृष्टि का मातृक पक्ष भी है, जिसमें केवल स्त्रियों द्वारा संतान पैदा करने की बात आती है। यह बात केवल भारतीयों में ही प्रचलित नहीं है वरन् प्रायः सभी धर्मों में ऐसे आख्यान मिलते हैं, जिनमें अमैथुनी प्रजा का यह दूसरा रूप अर्थात् बिना पुरुष के संयोग के स्त्री द्वारा संतानोत्पत्ति का विवरण मिलता है। सामान्य श्रेणी के व्यक्तियों के लिए यह दोनों ही प्रसंग अप्रामाणिक हैं। इस संबंध में समुचित जानकारी न होने से ही आज तक अति-मानवता के उत्तर स्तर की उत्पन्न हुई विभूतियाँ कलंकित हुई हैं।

भगवान् राम अपने भाइयों सहित पिता के संयोग के बिना जन्मे थे। इतिहास प्रसिद्ध घटना है कि जब दशरथ की आयु ढलने लगी और उनके कोई संतान नहीं हुई, तो उन्होंने गुरु वशिष्ठ के पास जाकर अपना दुःख प्रकट किया। वशिष्ठ ने तब श्रृंगी ऋषि को बुलाकर पुत्रेष्टि यज्ञ कराया। इस यज्ञ में 'चरु' में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देव-शक्तियों का आह्वान कर, उसे तीनों रानियों को बाँट दिया गया। एक-एक भाग मिलने के कारण कौशिल्या और कैकेयी ने एक-एक और दो भाग मिलने के कारण सुमित्रा ने जुड़वाँ बच्चों को जन्म दिया। इस घटना ने सिद्ध कर दिया था कि देव-शक्तियों को कृत्रिम गर्भाधान द्वारा मानव आकृतियों में लाया जा सकता है। ऐसे जो भी शरीर पैदा हुए हैं, शारीरिक गुण-धर्म से वह भले ही मनुष्य जैसे रहे हों, पर उनकी अतींद्रिय क्षमताएँ बहुत बढ़ी-चढ़ी रही हैं; इसलिए उन्हें देवदूत, पैगंबर और साक्षात् भगवान् माना जाता रहा। देव उपासना के द्वारा पुरुष और स्त्री शरीरों में ऐसी शक्तियों का आह्वान, धारण और प्रजनन आज भी संभव है।

मरियम तब कुमारी ही थीं, जब उन्होंने महापुरुष ईसा को जन्म दिया। मरियम की ईश्वर भक्ति और उनकी आत्म-पवित्रता सर्वविदित थी, इसलिए तब उन पर किसी ने दुराचरण का दोषारोपण नहीं किया। पीछे जिन लोगों ने संदेह किया, वह उनकी अपनी भ्रांत धारणाएँ थीं। महापुरुष ईसा में जो विशेषताएँ थीं, वह बताती थीं कि इस आत्मा का प्रादुर्भाव वंशगत नहीं, वरन् ब्रह्मांड की किन्हीं अदृश्य शक्तियों से है। तभी तो वे हर किसी के मन की बात जान सकते थे, एक पाव रोटी से, सैकड़ों आदमियों की भूख मिटा सकते थे, किसी भी रोगी को केवल स्पर्श और आशीर्वाद से अच्छा कर सकते थे। विज्ञान ने अमैथुनी सृष्टि की पुष्टि कर दी है, एक दिन वह भी आयेगा, जब चमत्कार जैसी लगने वाली महापुरुषों की यह बातें भी विज्ञान ऐसे सत्य सिद्ध कर देगा—जैसे किसी छोटी-सी डाल के पत्ते गिनकर बता देना।

कर्ण का जन्म कुंती के उदर से हुआ था। कुंती एक दिन गायत्री मंत्र का जप कर रही थीं। महाभारत में कथा आती है कि वे उस दिन अत्यधिक ध्यानावस्थित थीं। उन्हें लगा जैसे भगवान् सूर्यदेव उनके पास हैं, उन्हें स्वीकार कर रहे हैं, उनका भर्ग (तेज) उनके गर्भ में प्रविष्ट हुआ और वे सचमुच गर्भवती हो गईं। कर्ण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सूर्य के समान तेजस्वी और अप्रतिम दानी थे। वह क्षमता महाभारत के और किसी योद्धा में नहीं थी।

पांडु ने एक बार ऐसे मृग के जोड़े का वध कर दिया था, जो उस समय काम-क्रीड़ा कर रहे थे। पांडु को मृगों ने शाप दिया। "तुम्हारी मृत्यु भी ऐसे ही होगी" और इसके बाद की घटना है कि उनकी दोनों रानियों कुंती और माद्री ने देव शक्तियों के आह्वान द्वारा अमैथुनी पुत्रों को जन्म दिया। यम के पुत्र युधिष्ठिर साक्षात् धर्मावतार थे। इंद्र के पुत्र अर्जुन के शौर्य और पराक्रम का कोई और जोड़ीदार नहीं था। भीम मरुत् पुत्र थे, उनमें वायु से भी प्रचंड बल विद्यमान था, नकुल सोम के अंश से जन्मे होने के कारण ज्योतिर्विद्या के अद्वितीय पंडित थे। एक मात्र सहदेव ही ऐसे थे, जो सहवास से पैदा हुए थे और वही ऐसे थे, जिनमें अन्य भाइयों की अपेक्षा सांसारिकता का भाव और कामनाएँ अधिक थीं। हम देव-शक्तियों के संपर्क में आकर आत्मतेज विकसित करते हैं, उसका प्रभाव पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता हुआ चला जाता है। यह बात हमें इन उदाहरणों से देखने को मिलती है। भारतीय अपने आपको देव-शक्तियों का अंश, ऋषि पुत्र आदि मानते हैं, उनके ज्ञान, गुण, सौंदर्य आदि की समता पाश्चात्य जगत् नहीं कर सकता।

कौरव भ्रूण संतान थे। अंजनी पुत्र हनुमान् पितृहीन संतान थे। इन घटनाओं से यह सिद्ध हो गया कि संसार में ऐसे तथ्य विद्यमान हैं, जो गुण और स्वभाव से मानव प्रकृति के होकर भी ज्ञान, शक्ति और गुणों की दृष्टि से बहुत विकसित होते हैं, उनसे अतींद्रिय संपर्क स्थापित कर कोई भी स्त्री या पुरुष अपने आपमें उन दैवी प्रतिभाओं को विकसित कर सकता है।

प्रमाण और वैज्ञानिक व्याख्याएँ इस तथ्य का समर्थन ही करती हैं। बच्चे का जन्म, स्त्री के अंड (ओवम) और पुरुष के शुक्राणु (स्पर्म) के मिलने से होता है। अभी तक लोगों को पता था कि अंड और शुक्राणु की भेंट केवल संभोग से ही संभव है, किंतु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

डॉ० स्टीवर्ड ने गाजर पर कई तरह के प्रयोग करके यह सिद्ध कर दिया है कि प्रत्येक कोशिका (सेल) में जीव-निर्माण की क्षमताएँ विद्यमान रहती हैं। इसलिए केवल अंड (ओवम) से ही संतान का जन्म संभव है, यह मान बैठना उचित नहीं। इस दिशा में विज्ञान की शोध अब काफी आगे तक बढ़ चुकी है।

१८९९ में डॉ० जैंबीस लौव ने एक प्रयोग किया। उन्होंने समुद्र में पाये जाने वाले 'अर्चिन' नामक जंतु की मादा के अंड को मैग्नीशियम क्लोराइड से उद्दीप्त किया, उससे अंड में गर्भाधान (फर्टिलाइजेशन) बिना किसी शुक्राणु की सहायता से हो गया। इस घटना से वैज्ञानिक जगत् में तीव्र प्रतिक्रिया हुई और कृत्रिम गर्भाधान की खोज के लिए वैज्ञानिकों में सर्वत्र होड़ मच गई।

स्त्री के अंड (ओवम) में गर्भाधान के लिए यह आवश्यक है कि २४ गुणसूत्र (क्रोमोसोम्स) स्त्री के और २४ गुणसूत्र पुरुष के मिलना आवश्यक है। पुरुष के गुणसूत्रों में एक विशेषता यह होती है कि एक ग्रुप में २४ गुणसूत्र समान होते हैं, किंतु दूसरे ग्रुप में २३ गुणसूत्र समान धर्म वाले होते हैं और एक गुण सूत्र ऐसा होता है, जो ४७ से किसी प्रकार भी नहीं मिलता। यह एक गुणसूत्र ही पुरुष के जन्म का कारण है, यदि स्त्री और पुरुष के वह ग्रुप मिलें, जिनमें २४ गुणसूत्र समान (इन्हें अंग्रेजी में एक्स एक्स क्रोमोसोम कहते हैं) होते हैं, तो कन्या जन्म लेगी, किंतु यदि स्त्री के २४ गुणसूत्रों से पुरुष के गुणसूत्रों का ग्रुप मिले, जिसमें एक गुणसूत्र भिन्न प्रकृति का होता है (इसे वाइ क्रोमोसोम कहते हैं), तो संतान पुत्र होगा। अर्चिन के मामले में शुक्राणु का कार्य मैग्नीशियम द्वारा संपन्न होना यह बताता है कि अंतरिक्षीय शक्तियों के माध्यम से गर्भ में पितृहीन संतानों को स्थापित किया जा सकता है। इस पर डॉ० यूजीन बटाइलोन ने मेंढक के अंड में पिन चुभोकर निषेचन की क्रिया के लिए प्रयास किया और इसमें उन्हें सफलता भी मिल गई। निषेचन का अर्थ है, गुणसूत्रों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संख्या दुगुनी हो जाना। यदि गुणसूत्रों की संख्या दुगुनी हो जाती है, तो बिना पिता की सहायता के अंड में संतान रह सकती है, इस प्रयोग में ऐसा ही हुआ, पिन चुभोने से मेंढक का निषेचन हो गया और उसको इस कृत्रिम गर्भाधान से ही संतान हो गई। यह प्रयोग खरगोशों पर भी सफल हुए। १५ जुलाई, १९६७ को, लंदन से प्रकाशित होने वाली 'टिटबिट्स' पत्रिका में डॉ० जेराल्ड मैकनाइट ने यह लिखा है कि ब्रिटेन में इस तरह का क्रमबद्ध प्रयोग चल रहा है। १०० स्त्रियों ने अपने आपको कृत्रिम निषेचन के लिए प्रस्तुत किया, जिनमें कम-से-कम ८ महिलाएँ ऐसी थीं, जिन्हें बच्चा पैदा करने में किसी प्रकार पुरुष के सहयोग की आवश्यकता नहीं पड़ी। श्रीमती एमोनेरी जोन्स ने 'मोनिका' नामक पुत्री को जन्म दिया। वैज्ञानिकों ने जोन्स की पूरी देखरेख की थी। वे इनके बारे में निर्विवाद थे, मोनिका के रंग-रूप, आकृति, प्रकृति में मानवोचित गुण, धर्म एवं प्रकृति में बिल्कुल अंतर नहीं था। वैज्ञानिक अब उन तत्त्वों की खोज में हैं, जो कृत्रिम गर्भाधान की क्रिया में शुक्राणु (स्पर्म) का स्थान ले सकते हैं। इन प्रयोगों की सफलता देवों या ब्रह्मांड स्थित चेतन शक्तियों के रहस्यों का भी उद्घाटन करेगी।

अब एक ही प्रश्न शेष रह जाता है, वह है—स्त्री के प्रजनन कोषों में 'वाई' किस्म के गुणसूत्र की विद्यमानता। अभी तक स्त्रियों के शरीर में इस गुणसूत्र की उपस्थिति का समर्थन नहीं हो पाया। यदि इतना और हो जाए तो किसी को भी यह मानने में आपत्ति शेष न रहेगी कि अमैथुनी सृष्टि का सिद्धांत गलत है।

वैज्ञानिक स्पष्ट रूप से व्याख्या भले ही न कर पाये हों, किंतु ऐसे प्रमाण मिल चुके हैं, जिनसे पुरुषों में पर्याप्त मात्रा में स्त्रियोचित गुण और स्त्रियों में पुरुषोचित गुण पाये गये हैं। अमेरिका में इन दिनों यौन-परिवर्तन सामान्य ऑपरेशन की श्रेणी में आता जा रहा है। वहाँ के अखबारों में आये दिन किसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लड़की को लड़का और लड़के को लड़की की योनि में बदल जाने के समाचार छपते रहते हैं। यह ऑपरेशन उन दशाओं में ही संभव हैं, जबकि यौन परिवर्तन की इच्छा करने वालों में परिवर्तन के लिए उपयुक्त गुण किसी न किसी अंश में पहले से ही विद्यमान हों। इतिहास ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है, जिनसे पता चलता है कि स्त्रियों में पुरुषों के और पुरुषों में स्त्रियों के तत्त्व भी होते हैं और यह तभी संभव है, जबकि उनके वंश को निर्धारित करने वाले गुणसूत्रों में भी यह विशेषताएँ विद्यमान हों। यदि यह सच है तो यह मानने में किसी को कोई आपत्ति न होगी कि प्रकृति के प्रत्येक कण में पुरुष और स्त्री दोनों स्वभाव सनातन हैं, इसी को प्रकृति और परमेश्वर की—"गिरा—अरथ जल-बीचि सम" अभिन्नता कहते हैं। मैड्रिड (स्पेन) में मेडिकल फैकल्टी के एक सर्वेक्षण में डॉ० जान केस्लर नामक एक डॉक्टर का बयान छपा है, डॉ० केस्लर ने बताया कि लोजानो नामक व्यक्ति की स्त्री को दो जुड़वाँ संतानें हुईं। एक बालक था, एक बालिका। माँ के स्तनों में उतना दूध नहीं होता था, जितने से बच्चों की भूख मिट जाती। इस कारण बच्चे दिन भर रोया करते थे। संयोग से लोजानो के स्तन सामान्य पुरुषों के स्तनों से कुछ बड़े थे, सो वह बच्चों को बहलाने के लिए उन्हें अपने स्तनों में लगा लेता। बच्चे दूध पीने लगते, धीरे-धीरे लोजानो के स्तनों से दूध निकलने लगा। दूध इतना निकलने लगा कि उसने अपने बच्चों को ५ माह तक दूध पिलाया, पिता का दूध पी-पीकर बच्चे खूब स्वस्थ हो गये।

नीमेस के डॉ० रेबाल ने एक ९५ वर्षीय बालक का परिचय छापा था, जिसके दोनों स्तन बालिकाओं की तरह के थे, कुछ दिन में उनसे इतना दूध निकलने लगा कि उसे शर्म से स्तनों में रुई बाँधे रहना पड़ता था।

जनवरी १९२४ के एक अमेरिकन समाचार पत्र में जबोटा जियोबिच नाम के २२ वर्षीय सर्वियन युवक का समाचार छपा है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और उसमें आश्चर्यपूर्वक स्वीकार किया गया है कि बेलग्रेड के अस्पताल में उसके पेट का ऑपरेशन करके १० और ५ इंच लंबे दो भ्रूण निकाले। इन भ्रूणों के गर्दन, छाती, हाथ, पाँव काफी पुष्ट हो चुके थे।

यह घटनाएँ पुरुषों की हैं और यह प्रमाणित करती हैं कि पुरुषों में स्त्रियोचित संस्कार होना असंभव नहीं। भले ही वे प्रसुप्त अवस्था में हों, पर यदि वे विकसित किये जा सकें तो मनुष्य स्वयं भी अपने शरीर से अमैथुनी सृष्टि पैदा कर सकता है।

यही बात स्त्रियों के संबंध में भी है। उनमें अनेक बार पुरुषोचित गुण स्पष्ट रूप से देखने में आते हैं, यह तभी संभव हो सकता है, जब पुरुषों के गुण धर्म वाले सूत्र उनके शरीर में पहले से ही विद्यमान हों।

अमेरिका की श्रीमती टेलर जैसी वृद्ध होती गईं, उनकी दाढ़ी-मूँछें काफी बड़ी निकल आईं। इनकी दाढ़ी के बाल स्तनों के नीचे तक पहुँच गये थे। १७३२ में ड्रेसडेन में रोजिने मार्गरेट मुलर का निधन हुआ। उनके निधन का समाचार छापते हुए डॉ० गाल्ड और डॉ० पाइले ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'एनामलीज एंड क्युरियोसिटीज ऑव मेडिसन' में लिखा है कि श्रीमती मार्गरेट मुलर की खूब घनी और लंबी-लंबी दाढ़ी-मूँछें थीं।

१८ अप्रैल, १९४३ के 'हिंदुस्तान स्टैंडर्ड' (जो कलकत्ता से छपता है) में जोरहाट के पास चारबाल गाँव के केवट की १७ वर्षीया पुत्री सईदा खातून के पुरुष बन जाने का समाचार छपा है।

ये घटनाएँ प्रमाणित करती हैं कि पुरुषों में स्त्रियोचित और स्त्रियों में पुरुषोचित गुणों की विद्यमानता प्रकृति का विलक्षण रहस्य है और उससे अमैथुनी सृष्टि का सिद्धांत सत्य प्रमाणित होता है। प्रमाण और विज्ञान दोनों ही उसकी पुष्टि करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

● नर और नारी में श्रेष्ठ कौन ?

इस पर भी नर और नारी के शरीर की व आंतरिक सामर्थ्य की दृष्टि से विवेचन कर विश्लेषण करने की स्थिति आये तो नारी का पलड़ा ही भारी होगा।

नर शारीरिक दृष्टि से नारी की तुलना में बलिष्ठ भले ही हो, पर इसके अतिरिक्त हर क्षेत्र में नारी की गरिमा बढ़ी-चढ़ी है। भावनात्मक उत्कृष्टता के क्षेत्र में तो वह निस्संदेह पुरुष की तुलना में कहीं आगे है।

नारी गरिमा का एक तथ्य विज्ञान की कसौटी पर और भी स्पष्ट हुआ है। नारी एकाकी प्रजनन कर सकती है। पुरुष के संयोग के बिना भी उसके लिए संतानोत्पादन संभव है। पुरुष के लिए यह सर्वथा असंभव है। इस दृष्टि से पुरुष अपूर्ण हुआ और नारी पूर्ण ठहरी। यदि सृष्टि-संचालन की बात का ही भौतिक मूल्यांकन किया जाए तो एक एकड़ भूमि का मूल्य पचास हजार रुपया और उसमें प्रयुक्त होने वाले पच्चीस किलो बीज का मूल्य एक सौ रुपया होता है। संतानोत्पादन का श्रेय यदि दिया जाना हो तो वह नारी को ही मिल सकता है। नर तो उस महान् प्रक्रिया में मात्र एक स्वल्प सहयोग भर प्रदान करता है। सो भी इतना कम कि उसके बिना भी काम चल सकता है।

यदि किसी कारणवश ऐसी स्थिति आ जाए कि नर और नारी में से इस सृष्टि में एक ही वर्ग शेष रह जाए, दूसरा समाप्त हो जाए, तो नारी में वह क्षमता है कि वह अकेले भी सृष्टि क्रम को संचालित रख सकती है; किंतु पुरुष के लिए ऐसा कर सकना सर्वथा असंभव है; उसके पास वे यंत्र उपकरण ही नहीं हैं, जिनसे गर्भ धारण संभव होता है।

अब तक यही माना जाता था कि नर संयोग के बिना अकेली नारी प्रजनन में असमर्थ है, पर विज्ञान ने सिद्ध किया है कि इस क्षेत्र में भी नारी अपूर्ण नहीं संपूर्ण है। उसमें यह संभावना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भी विद्यमान है कि यदि वह चाहे तो स्वावलंबी रहकर, सृष्टि-संचालन कर सकती है। अभी विज्ञान इतना ही सिद्ध कर सका है कि नारी केवल कन्याओं को ही जन्म दे सकती है। पुत्र जन्म के लिए पुरुष सहयोग अपेक्षित है। फिर अगले दिनों यह कमी जो आज अनुभव की जाती है, उसका भी समाधान मिल सकता है।

विज्ञान का हर विद्यार्थी जानता है कि प्रत्येक मनुष्य के भीतर उभयलिंग का अस्तित्व विद्यमान रहता है। नारी के भीतर भी नर का अस्तित्व रहता है। इस अंतर्नर को ऐनिमस कहते हैं और हर नर के भीतर नारी की सूक्ष्म सत्ता विद्यमान रहती है। इस अंतर्नारी को, ऐनिमेट कहते हैं। कोई मनुष्य न पूर्णतया नर है और न नारी। स्तन नारी के विकसित होते हैं, पर उनका अस्तित्व नर के भीतर भी रहता है। उसी प्रकार प्रजनन अंगों के गह्वर में विपरीत लिंग का अस्तित्व भली प्रकार देखा जा सकता है। शरीर शास्त्र का कोई भी छात्र इसे सहज ही समझ सकता है। इतना ही नहीं—स्वभाव और प्रवृत्तियों में भी बहुत-सी बातें ऐसी होती हैं, जिनसे नर में नारी का और नारी में नर का अस्तित्व देखा जा सकता है।

अविकसित जीवों में नर और मादा का संयोग बिना हुए भी संतानोत्पत्ति का क्रम चलता रहता है। बहुत-से पौधे ऐसे हैं, जिनकी टहनियाँ काटकर जमीन में गाड़ दी जाएँ, तो वे उगती हैं और एक स्वतंत्र पेड़ बन जाता है। ईख इसी किस्म का पौधा है। गाजर की हर कोशिका से एक नया गाजर का पौधा उगाकर अमेरिका के वनस्पति विज्ञानी प्रो० स्टीवर्ड ने दिखाया है। हाइड्रा नामक एक सूक्ष्म प्राणी के शरीर का कोई टुकड़ा गिर पड़े, तो वह एक स्वतंत्र हाइड्रा बन जाता है। बैक्टीरिया भी इसी तरह दो खंडों में बँटते और अपनी वंश वृद्धि करते हैं। हर वनस्पति की भिन्न लिंगी पराग या बीज में उभयपक्षी लिंग भेद हो ही—यह आवश्यक नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पेड़-पौधों के प्रजनन में भी जीवधारियों की तरह परागण क्रिया ही मूल कारण होती है। रज-वीर्य की तरह इनमें भी स्त्री केशर और पुंकेशर तत्त्व होते हैं और इनके मिलन पर ही फल एवं बीज की उत्पत्ति होती है और यहीं से वंशवृद्धि का आधार बनता है।

कुछ पौधों में दोनों तत्त्व पाये जाते हैं और हवा के साथ उड़कर अथवा मधुमक्खियों, तितलियों अथवा अन्य छोटे कीड़ों द्वारा अपने पंख या पैरों के सहारे इधर-उधर किया जाता है और जब भिन्न लिंग पराग का परस्पर सम्मिश्रण होता है, तो वे गर्भ धारण करते हैं। यह भ्रूण ही फल है। फल के अंदर बीज उसकी अगली पीढ़ी की तैयारी समझी जानी चाहिए।

बहुत-से पेड़-पौधे एकलिंगी होते हैं। इस प्रकार के मादा पौधे यदि किसी अन्य पेड़ से नर केशर प्राप्त न कर सकें, तो वे फलित नहीं होंगे। विज्ञान ने इन पौधों में भी कृत्रिम गर्भाधान की प्रक्रिया आरंभ की है। समर्थ पुंकेशर का संयोग हल्की जाति के मादा केशर से कराने से पौधों के स्तर को अधिक विकसित करने का सफल प्रयोग इन दिनों बहुत चल रहा है।

अच्छी जाति के बीज कठिनाई से मिलते हैं। फसल के समय जो बीज़ अच्छा होता है, वह भी ऋतु प्रभाव या छूत के कीड़े चिपक जाने से अपना प्रभाव खो बैठता है और अच्छा दीखने वाला बीज भी घटिया सिद्ध होता है; इसलिए एक नई विधि यह निकाली गई है कि गन्ना आदि की तरह पेड़ के टुकड़े काटकर उन्हें बोने को ही ऐसा योग कर दिया जाए कि अन्य पौधे भी उसी प्रकार बिना बीज के उगने और बढ़ने लगें। टहनियाँ काटकर बोने और उसी से पौधा उत्पन्न हो जाने की विधि अब तक कुछ खास किस्म के पौधों तक ही सीमित थी, पर अब यह प्रयत्न किया जा रहा है कि अधिकांश पौधों में यह सुधार कर दिया जाए कि वे संयोग परागण की या बाहरी बीज की प्रतीक्षा किये बिना अपने आप में ही वह प्रयोजन पूरा कर लिया करें और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परागण की प्रतीक्षा किये बिना ही टहनियों के द्वारा ही अपनी वंश वृद्धि जारी रख सकें।

पर प्राणि-जगत् में यह बात आश्चर्य की समझी जाती थी। निर्जीव अंडा देने वाली मुर्गियाँ बिना नर के संयोग के अंडे तो दे लेती हैं, पर उनसे बच्चे नहीं हो सकते। मनुष्य जैसे विकसित प्राणी के लिए तो यह और भी कठिन है।

पुराणों में ऐसी कथा मिलती है, जिनमें यह बताया गया है कि यौन संपर्क के बिना बच्चे हो सकते हैं। लंका दहन के पश्चात् हनुमान् समुद्र में नहाये, उनका पसीना मछली पी गई और उससे मकरध्वज का जन्म हुआ। देवताओं और ऋषियों के बारे में भी ऐसा वर्णन मिलता है, पर उन्हें अलंकारिक माना जाता है। पीछे के इतिहास काल में भी जब इस प्रकार की घटनाएँ देखने को मिलती हैं, तब यह सोचने को विवश होना पड़ता है कि क्या यह संभव है कि बिना संयोग के संतान उत्पन्न हो सके ? वृद्ध दशरथ जी की तीन रानियों की संतानें यज्ञ चरु से हुई थीं। व्यासजी ने वंश नाश के संकट को बचाने के लिए राजा विचित्र-वीर्य की रानियों को नग्न देखा भर था और उन्हें पांडु, धृतराष्ट्र तथा विदुर के रूप में तीन संतानें मिलीं। इस दिशा में खोज करने पर और भी उदाहरण मिलते हैं। कुंती ने कर्ण को कुमारी अवस्था में ही उत्पन्न किया था। कर्ण ही नहीं, धर्मराज से युधिष्ठिर की, इंद्र से अर्जुन की, पवन से भीम की उत्पत्ति मानी जाती है। क्या अशरीरी देव शक्तियों का आवेश नर तन धारियों में संतानोत्पन्न कर सकता है ? इस श्रृंखला में तब एक कड़ी और जुड़ जाती है, जब हम कुमारी मरियम के पेट से ईसा मसीह के जन्म की बात पढ़ते हैं।

पुराने उदाहरणों के संबंध में कई तरह की आशंकाएँ की जा सकती हैं और यह कहा जा सकता है कि नर संयोग को उन दिनों लोक-लाजवश देव आवेश कहकर छिपाया गया होगा। चूँकि वे घटनाएँ बहुत पुरानी हो गईं और अब उनका परीक्षण-विवेचन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करने का समय नहीं रहा, इसलिए इन उदाहरणों को लेकर इस निष्कर्ष पर पहुँचना कठिन है कि ईख, गुलाब की तरह टहनियों से अथवा हाइड्रा और बैक्टीरिया जैसे जीवों की तरह क्या मनुष्य भी बिना संयोग के संतानोत्पन्न कर सकता है। केला केवल मादा अंडाशय का ही परिष्कृत रूप है। प्रकृति में तो यह एकलिंगी प्रजनन (पार्थिनोजेनेसिस) चिरकाल से चला आ रहा है। प्रश्न केवल मनुष्य के संबंध में है।

बात असंभव-सी लगती है, पर विज्ञान के बढ़ते हुए चरणों ने इस संभावना को एक सच्चाई के रूप में प्रस्तुत कर दिया है कि बिना नर की सहायता के नारी द्वारा अपने कौमार्य और ब्रह्मचर्य की रक्षा करते हुए संतानोत्पन्न कर सकना संभव है। नर ऐसा कर सके यह कठिन दीखता है, क्योंकि उसके पास भ्रूण धारण करने के वे अवयव नहीं होते, जो नारी को उपलब्ध हैं।

कुछ समय पूर्व जीव विज्ञानी प्रो० हाल्डेन की सहयोगिनी सहधर्मिणी डॉ० हेलेन स्पर्न ने यह दावा किया था कि—"किसी असंदिग्ध कुमारी के गर्भवती होने की उतनी ही संभावना है, जितनी एक साथ कई बच्चे किसी स्त्री के पेट से पैदा होने की। दोनों ही बातें अपवाद हैं, पर असंभव नहीं। एक साथ कई बच्चे हर स्त्री के नहीं होते, पर उनका होना असंभव नहीं। इसी प्रकार यदि कोई कुमारी बिना नर की सहायता के गर्भ धारण करे, तो इसे असाधारण भर कहा जाना चाहिए, असंभव नहीं।"

इस दावे को लेकर पाश्चात्य देशों में एक बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ। दावे को सिद्ध करने की चुनौती दी गई। अस्तु डॉ० स्पर्न ने ब्रिटिश पत्रों में विज्ञापन छपाया कि—जो महिलाएँ अपनी संतान की पिता भी स्वयं ही बनना चाहती हों, वे वैज्ञानिक परीक्षा के लिए आगे आवें।

इस विज्ञापन के आधार पर लगभग १०० महिलाओं ने इसके लिए अपने को प्रस्तुत किया। उनमें से प्राथमिक परीक्षा में ८६ उत्तीर्ण हुईं। इस प्रयोग की परीक्षा के लिए सुप्रसिद्ध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवशास्त्रियों की डॉ० स्टेनली वाल्फेर लिन की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई। इसके दल में सम्मिलित सदस्य थे प्रख्यात डॉक्टर वर्नाडे केंबर, डॉ० सिडनी, डॉ० डेविड बिन विलियम्स।

प्रयोग के लिए सबसे उपयुक्त शरीर पाया गया श्रीमती ऐमी मोरी जोन्स का। प्रयोग सफल हुआ। श्रीमती जोन्स ने एक लड़की को जन्म दिया। इसमें कहीं किसी चालाकी की गुंजायश न रहे, इस दृष्टि से प्रतिबंधों की सारी व्यवस्था पूरी कर ली गई और पूरे गर्भकाल में चिकित्सक मंडली की निरंतर देखभाल रही। नियत समय पर कन्या को जन्म देकर श्रीमती जोन्स ने उस असंभव मानी जाने वाली बात को संभव करके दिखा दिया, जिसमें सृष्टि-संचालन के लिए नर-नारी संपर्क आवश्यक कहा जाता था।

इस प्रजनन से यह तथ्य स्पष्ट हो गया कि पानी के पूँछदार कीड़ों की तरह शुक्र कीटकों के सिर में २३ गुण सूत्र और पूँछ में माइटोकोंड्रिया नामक पिंड होते हैं। यह पिंड ही शुक्राणुओं को गतिशील होने की शक्ति प्रदान करते हैं। नारी अंडकों का उद्दीपन और विभाजन आमतौर से शुक्राणु करते हैं। पर यह अनिवार्य नहीं, यह उत्तेजना दूसरे प्रकार से भी उत्पन्न की जा सके तो नारी स्वयं ही प्रजनन करने में सफल हो सकती है, क्योंकि उसके रज अंड में उत्पादन के सारे तत्त्व मौजूद हैं। नारी अंड में २३ गुण सूत्र होते हैं, वे ४६ हो जाएँ तो भ्रूण धारण हो सकता है। यह कार्य नारी के दो अंडों को मिला देने की वैज्ञानिक पद्धति से भी संभव हो गया और श्रीमती जोन्स ने कन्या को जन्म दिया। नर का शुक्राणु रहने से यह लाभ था कि संतान में पिता की वंश परंपरा—माता की वंश परंपरा में मिलकर संतान को मिश्रित धर्मी बना सकती थीय पर यदि वैसा नहीं हुआ तो केवल माता के स्वरूप और स्वभाव की ही संतान उत्पन्न होगी। यह मिश्रण तो संभव नहीं, पर अंडाणु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को उत्तेजित करना और उसके गुण सूत्रों को द्विगुणित कर देना विज्ञान की पकड़ में है। यदि नर का इस धरती पर से किसी कारणवश लोप हो जाए तो नारी अपने बलबूते पर सृष्टि उत्पन्न करती रह सकती है। हाँ, वर्तमान उपलब्धियों के आधार पर यह केवल कन्याएँ ही उत्पन्न कर सकती है। प्रकृति तो कुछ भी कर सकती है। उसके लिए मरियम के पेट से ईसा और कुंती के गर्भ से कर्ण का जन्म उनकी कुमारी माताओं द्वारा पूर्णतया संभव है। पर विज्ञान अभी वहाँ तक नहीं पहुँचा। वह नारी के पेट से कन्या उत्पन्न कर सका है। अभी नारी केवल कन्या की पिता बन सकी है। आगे पुत्र की संभावना के लिए विज्ञान के अगले चरणों की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

श्रीमती जोन्स के गर्भ से उत्पन्न 'मोनिका' नाम की लड़की अब किशोरावस्था में है। वह वैज्ञानिकों के लिए कौतूहलपूर्ण शोध का विषय बनी हुई है। इन माँ-बेटी के शरीर में इतना साम्य है कि किसी भी परीक्षण में उन दोनों की शरीर रचना में कोई अंतर दिखाई नहीं पड़ता। रंग, रूप और अंगों की बनावट में इतनी समता है कि देखने वाले बड़ी उम्र की जोन्स को छोटी उम्र की जोन्स में बदली हुई ही कहने लगते हैं। बच्ची को ट्रू कापी—सत्य प्रतिलिपि के रूप में देखने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं।

नारी पर किया गया उपरोक्त प्रयोग अब वैज्ञानिकों के लिए एक उत्साह और आशा का विषय बन गया है। जो पशु केवल दूध के काम आते हैं, उनके नर बच्चे बेकार सिद्ध होते हैं और खाल-मांस के लिए उन्हें मौत के घाट उतारना पड़ता है। बकरे और भैंसे जितना खाते हैं, जगह घेरते हैं, उसकी तुलना में लाभ कम देते हैं; इसलिए उन्हें कसाई के हवाले ही किया जाता है। यदि वे दुधारू पशु केवल मादाएँ ही जनने लगें, तो फिर दूध की भी कमी न रहे और मार-काट भी उतनी न मचानी पड़े; इसलिए पशुओं पर तथा दूसरे जंतुओं पर यह प्रयोग किये जा रहे हैं कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मादा प्रजनन के संबंध में नर की आश्रित न रहकर, अपने पैरों पर आप खड़ी हो सके। इसके लिए केवल उस विधि को व्यापक भर बनाना है, जिसके अनुसार मादा का अंड उत्तेजित और एकत्रित हो सके। यह कार्य सब असंभव नहीं रहा, केवल कष्ट साध्य भर रह गया है, उसी को सरल बनाने के प्रयत्न बहुत जोरों से चल रहे हैं।

फ्रांस के जीव विज्ञानी विग्यूर ने 'सी अर्चिन' नामक समुद्री जंतु पर संयोगरहित प्रजनन के सफल प्रयोग किये हैं। डॉ० ए० स्टाल्क भी ऐसी ही सफलता शार्क मछलियों पर प्राप्त कर चुके हैं। अब अन्य पक्षियों और पशुओं पर यह परीक्षण हो रहे हैं। संग्रहीत अनुभवों के आधार पर मनुष्य की काया को यह सिद्ध करने के लिए हाथ में लिया जायेगा कि नर-नारी संपर्क दूसरी दृष्टि से भले ही उपयुक्त हों, पर संतानोत्पादन का क्रम तो उसके बिना भी चल सकता है। अब उन प्राचीन पौराणिक उपाख्यानों की सत्यता से इनकार नहीं किया जा सकता, जिसमें बिना नर संयोग के संतान जन्म का वर्णन है।

□ □

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गर्भस्थ शिशु का इच्छानुवर्ती निर्माण

महाभारत में एक कथा आती है कि—"एक बार कुपित होकर अश्वत्थामा ने उत्तरा के गर्भस्थ शिशु (परीक्षित) पर आग्नेयास्त्र प्रयोग किया। परीक्षित माँ के उदर में ही असह्य पीड़ा से जलने लगा। माँ ने भी उसे जाना। उन्होंने संपूर्ण समर्पण भाव से परमात्मा का स्मरण किया, तब उस बच्चे की रक्षा हो पाई।"

गर्भस्थ शिशु को कोई अस्त्र तब तक नहीं छेद सकता—जब तक माँ का शरीर न छिदे। दरअसल आग्नेयास्त्र मंत्र शक्ति थी, जो संकल्प-शक्ति के द्वारा चलाई गई थी। बाहरी व्यक्ति द्वारा दूर से संकल्प-प्रहार से यदि गर्भस्थ बच्चा जल और मर सकता है और फिर परमेश्वर के प्रति अटल विश्वास और रक्षा की भावना से उस बच्चे को बचाया जा सकता है, तो उसके शरीर और मनोभूमि में भी इच्छानुवर्ती परिवर्तन लाया जा सकता है।

सती मदालसा के बारे में कहा जाता है कि वह अपने बच्चे के गुण, कर्म और स्वभाव की पूर्व घोषणा कर देती थी, फिर उसी प्रकार निरंतर चिंतन, क्रिया-कलाप, रहन-सहन, आहार-विहार और व्यवहार-बर्ताव अपनाती थी, जिससे बच्चा उसी मनोभूमि में ढल जाता था, जिसमें वह चाहती थी। प्रसिद्ध घटना है कि उनके पहले सभी बच्चे ज्ञानी, संत और ब्रह्मनिष्ठ होते गये। अपने पति की प्रार्थना पर उन्होंने अंतिम गर्भस्थ बच्चे को राजनेता के अनुरूप ढाला। उसी ने पिता का राज्य-सिंहासन सँभाला और कुशल राजनीतिज्ञ हुआ।

डॉ० फाउलर ने इस संबंध में काफी खोज की है, गर्भावस्था में भी गर्भिणी के हाव-भाव का बच्चे के शरीर और मन पर कैसा प्रभाव पड़ता है, इस संबंध में उनके पास कई प्रमाण हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रत्यक्षदर्शी घटना का वर्णन करते हुए फाउलर लिखते हैं—"एक स्त्री अपने बच्चे को नींद लाने वाली गोली देकर किसी आवश्यक कार्य से बाहर चली गई। लौटने पर वह बच्चा मरा पाया। स्त्री को इससे बहुत दुःख हुआ और वह शोक-मग्न रहने लगी। उसी अवस्था में उसने दूसरी बार गर्भ धारण किया। पहले बच्चे के प्रति उसका शोक ज्यों का त्यों बना रहा, इसलिए दूसरा लड़का रोगी हुआ। दूसरे वर्ष ही उसकी मस्तिष्क रोग से मृत्यु हो गई। अब वह और दुःखी रहने लगी। इस अवस्था में तीसरा पुत्र हुआ, वह हठी, सुस्त और कमजोर हुआ। दाँत निकलते समय उसकी भी मृत्यु हो गई। चौथा पुत्र भी ऐसे ही गया, किंतु पाँचवीं बार उसकी परिस्थितियों में सुखद परिवर्तन आये, जिससे उस स्त्री की मानसिक प्रसन्नता बढ़ी। वह पहले की तरह हँसने-खेलने लगी। इस बार बच्चा हुआ, वह पूर्ण स्वस्थ, नीरोग और कुशाग्र बुद्धि का हुआ।"

डॉ० फाउलर का मत है कि क्रोध, आश्चर्य, घृणा, अहंकार, गंभीरता आदि के अवसर पर माता की नासिका, मुख और आकृति में जैसे परिवर्तन, उठाव, गिराव होते हैं, वैसे ही बच्चे की नाक, मुँह, माथे आदि अवयवों की शक्ल भी बनती है। गर्भाधान के बाद स्त्री प्रसन्न नहीं रहती, शोक या चिंता-ग्रस्त रहती है, तो बालक के मस्तिष्क में पानी की मात्रा बढ़ जाती है। यदि ४ वर्ष के बच्चे के सिर का व्यास बीस इंच से अधिक हो, तो मानना चाहिए कि वह जल-संचय का शिकार हुआ है, उसकी माँ गर्भावस्था में दुःखी रही है।

भय, विक्षेप, अशुभ चिंतन, उत्तेजना से जिस तरह अंगों में भद्दापन, बेडौल और खराब मुखाकृति बनती है, उसी तरह शुभ-संकल्प और प्रसन्नतापूर्ण विचारों से बच्चा स्वस्थ, सुंदर और चरित्रवान् बनता है; इसीलिए कहा जाता है—गर्भावस्था में माँ को सत्य भाषण, उत्साह, प्रेम, दया, सुशीलता, सौजन्यता, धर्माचरण और ईशभक्ति का अनुगमन करना चाहिए। यह बच्चे होनहार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और प्रतापी होते हैं, जबकि क्रोध, ईर्ष्या, भय, उद्विग्नता आदि अधम वृत्तियों से बच्चे भी अधम, उत्पाती और स्वेच्छाचारी होते हैं। गलत खान-पान भी उसमें सम्मिलित हैं।

इसके अतिरिक्त जो महत्त्वपूर्ण बातें गर्भस्थ शिशु को प्रभावित करती हैं, उनमें से वातावरण मुख्य है। ध्रुव ऋषि-आश्रम में जन्मे थे। उनकी माँ सुनीति बड़ी नेक स्वभाव और ईश्वर भक्त थीं। ध्रुव के महान् तेजस्वी होने में वातावरण भी मुख्य सहायक था, जबकि उत्तानपाद के दूसरे बेटे में वैसी तेजस्विता न उभर सकी।

एक पाश्चात्य डॉ० ने वातावरण के प्रभाव का अध्ययन इस प्रकार किया—"एक बार एक कमरे का फर्श और दीवार सबको नील पोतकर नीला कर दिया। उस कमरे में श्वेत रंग के खरगोशों का एक जोड़ा रखा गया। कुछ समय बाद खरगोश के दो बच्चे हुए, दोनों के बालों में नीले रंग की झलक थी। इससे पता चलता है कि बच्चे के मस्तिष्क में ही नहीं, वातावरण का सूक्ष्म प्रभाव स्थूल अंगों पर भी पड़ता है। गर्भवती का निवास ऐसे स्थान पर होना चाहिए, जहाँ चारुता हो, मोहकता और आकर्षण हो। हरे बगीचों, केले, फलों आदि से घिरे स्थान, देवस्थान और विशेष रूप से सजे-सजाए, साफ-सुथरे स्थान गर्भस्थ बच्चों पर सुंदर प्रभाव डालते हैं।

स्पेन के किसी अंग्रेज परिवार में एक बार एक स्त्री गर्भवती हुई। गर्भवती जिस कमरे में रहती थी, उसमें अन्य चित्रों के साथ एक इथोपियन जाति के बहादुर का चित्र लगा हुआ था। वह चित्र उस स्त्री को अतिप्रिय था। कमरे में वह उस चित्र को बहुत भावनापूर्वक देखा करती थी। दूसरे काम करते समय भी उसे चित्र का स्मरण बना रहता था। अंत में जब उसे बालक जन्मा तो उसके माता-पिता अंग्रेज होते हुए भी लड़के की आकृति और वर्ण इथोपियनों जैसा ही था। उस चित्र की मुखाकृति से बिल्कुल मिलता-जुलता, उसी के अनुरूप था। घरों में भगवान् के, महापुरुषों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के चित्र लगाये भी इसीलिए जाते हैं कि उनकी आकृतियों से निकलने वाले सूक्ष्म भावना-प्रवाह का लाभ मिलता रहे।

वातावरण के अतिरिक्त गर्भिणी के साथ किये गये व्यवहार, बर्ताव और बातचीत का भी गर्भस्थ शिशु पर प्रभाव पड़ता है। क्रोध, मारपीट, धमकाना, डाँटना, दबाकर रखना आदि कुटिलताओं का बच्चे पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कई बार इस प्रकार के आचरण बहुत ही दु:खदायी और कष्टप्रद परिलक्षित होते हैं। एक बार एक व्यक्ति ने समुद्री यात्रा के दौरान किसी बात से अप्रसन्न होकर, अपनी गर्भवती पत्नी को जोर का धक्का मारा। गिरते-गिरते जहाज की जंजीर हाथ में पड़ गई। उससे वह गिरने से सँभल गई ! किंतु वह व्यक्ति बड़ा क्रूर निकला। उसने छुरे का वार किया, जिससे उस स्त्री की जंजीर पकड़े हुए हाथ की तीन उँगलियाँ कट गईं, वह स्त्री समुद्र में चली गई।

जहाज के चले जाने पर कुछ मल्लाहों ने उसकी रक्षा की। बाद में उस स्त्री को जो संतान हुई, उसे देखकर सब आश्चर्यचकित रह गये कि उसकी तीन उँगलियाँ ही नहीं थीं और वह बालक मानसिक दृष्टि से अपूर्ण, क्रोधी तथा शंकाशील स्वभाव का था।

धमाका पैदा करने वाला ऐसा कोई व्यवहार गर्भवती से नहीं करना चाहिए, जिससे मस्तिष्क में तीव्र आघात लगे, इससे बच्चे के शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

बच्चों के मानसिक निर्माण में माता-पिता की घनिष्ठता, प्रगाढ़ प्रेम, परस्पर विश्वास का सबसे सुंदर प्रभाव पड़ता है। सच बात तो यह है कि माता-पिता का संकल्प बच्चे को उसी प्रकार पकाता है, जिस प्रकार मादा कछुआ पानी में रहकर रेत में रखे अपने अंडों को पकाती है। दिव्य गुणों का बच्चे में आविर्भाव ही प्रेमपूर्ण भावनाओं से होता है; इसलिए गर्भावस्था में स्त्री-पुरुष को अधिकांश समय साथ-साथ बिताना चाहिए, पवित्र आचरण और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रगाढ़ मैत्री रखनी चाहिए। ऐसे बच्चे शरीर से ही नहीं मिजाज से भी पूर्ण स्वस्थ होते हैं।

इस उदाहरण से यह बात और भी स्पष्ट होगी। एक अंग्रेज ने किसी ब्राजील की लड़की से विवाह किया। लड़की का रंग साँवला था, पर उसमें मोहकता अधिक थी। पति-पत्नी में घनिष्ठ प्रेम था। पर उन्हें कोई संतान प्राप्त नहीं हुई।

कुछ समय पश्चात् वह स्त्री मर गई। पति को बड़ा दुःख हुआ। कुछ दिन बाद उसने दूसरा विवाह अंग्रेज स्त्री से किया। वह गौरवर्ण की थी, पर इस अंग्रेज को अपनी पूर्व पत्नी की याद बनी रहती थी, इसलिए वह अपनी नई पत्नी को भी उसी भाव से देखा करता था। इस स्त्री से एक कन्या उत्पन्न हुई, जो ब्राजीलियन लड़की की तरह साँवली ही नहीं, मुखाकृति से भी मिलती-जुलती थी। यह गर्भावस्था में पिता के मस्तिष्क में जमा हुआ पत्नी-प्रेम का संस्कार ही था, जिसके कारण बालिका ने उसका रंग और आकार ग्रहण किया।

इन समस्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि गर्भस्थ शिशुओं का इच्छानुवर्ती निर्माण संभव है। अपने रहन-सहन, स्वभाव और संकल्पों को स्वस्थ और सुंदर बनाकर भावी बच्चों में भी स्वास्थ्य, सौंदर्य, सद्गुण, तेजस्विता और मनस्विता का विकास किया जा सकता है। यह बात माता-पिता दोनों को मालूम होनी चाहिए।

● विज्ञान के इस दिशा में प्रयास

गर्भस्थ शिशु का इच्छानुवर्ती निर्माण करने की दिशा में अब विज्ञान भी सक्रिय हुआ है। पिछले दिनों संतान पर पड़ने वाले माता-पिता के शरीर, रोग, स्वभाव और गुण-दोषों को लेकर जीव विज्ञान की एक शाखा 'जेनेटिक्स' जिसे 'जनन-विज्ञान' या आनुवंशिकी भी कह सकते हैं, का निर्माण हुआ। उसकी भी एक उपशाखा है—'यूजेनिक्स', जिसे हिंदी में 'सुप्रजनन अथवा नस्ल सुधार' कह सकते हैं, में यह माना गया है कि मनुष्यों की वर्तमान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पीढ़ी से पूर्वज लंबाई, मजबूती, निरोगता, दीर्घ जीवन आदि सभी दृष्टि से बढ़े चढ़े थे और हम उनकी अपेक्षा कहीं अधिक निर्बल एवं रुग्णताग्रस्त हो गये हैं। इस कमी को पूरा करके पूर्वजों की अथवा उससे भी अच्छी स्थिति में पहुँचने की अपनी इच्छा स्वाभाविक है। यूजेनिक्स के अंतर्गत इसके लिए उपाय ढूँढ़े जा रहे हैं। इतना ही नहीं, मानसिक संरचना एवं व्यक्तित्व की अनेक धाराओं में भी ऐसे सुधार किये जाने अपेक्षित हैं, जिनके आधार पर मनुष्य को सुविकसित कहा जा सके।

अच्छा बीज अच्छी जमीन में बोया जाए तो उससे मजबूत पौधा उगेगा और उस पर बढ़िया फल-फूल आवेंगे, इस तथ्य से क्या शिक्षित क्या अशिक्षित सभी परिचित हैं। जिन्हें कृषि एवं उद्यान से अच्छा प्रतिफल पाने की आकांक्षा है, वे इस तथ्य पर आरंभ से ही ध्यान रखते हैं कि उत्पादन के मूलभूत आधारों को सतर्कता के साथ जुटाया जाए और उनका स्तर ऊँचा रखा जाए।

यों विवाह एक निजी मामला समझा जाता है और संतानोत्पादन को भी व्यक्तिगत क्रिया-कलाप की परिधि में सम्मिलित करते हैं। पर वस्तुतः यह एक सार्वजनिक, सामाजिक एवं सार्वभौम प्रश्न है, क्योंकि भावी पीढ़ियों के निर्माण की आधारशिला यही है। राष्ट्र और विश्व का भविष्य उज्ज्वल एवं सुसंपन्न बनाने की प्रक्रिया धन-समृद्धि पर नहीं टिकी हुई है, वरन् इस बात पर निर्भर है कि भावी नागरिकों का शारीरिक, बौद्धिक एवं चारित्रिक स्तर कैसा होगा ? धातुएँ, इमारतें या हथियार नहीं, वरन् किसी राष्ट्र की वास्तविक संपदा वहाँ के नागरिक ही होते हैं। वे जैसे भी भले या बुरे होंगे, उसी स्तर का समाज, समय एवं वातावरण बनेगा। इसलिए भावी प्रगति की बात सोचने में हमें सुसंतति के निर्माण की व्यवस्था जुटाने की बात ध्यान में रखनी चाहिए।

घरेलू पशुओं यहाँ तक कि कुत्ते, बिल्लियों तक के बारे में हमारे प्रयास यही होते हैं कि उनकी संतानें उपयुक्त स्तर की हों।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिन्हें इस उद्देश्य को पूरा करने में रुग्ण, दुर्बल अथवा अयोग्य समझते हैं, उनका प्रजनन प्रतिबंधित कर देते हैं। इस प्रतिबंधन, प्रोत्साहन में उचित वंशवृद्धि की बात ही सामने रखी जाती है। क्या मानव प्राणी की नसलें ऐसे ही अस्त-व्यस्त बनने दी जानी चाहिए, जैसी कि इन दिनों बन रही हैं? क्या इस संदर्भ में कुछ देख-भाल करना या सोचना-विचारना समाज का कर्त्तव्य नहीं है ? क्या बच्चे मात्र माता-पिता की ही संपत्ति हैं ? क्या उनका स्तर समाज को प्रभावित नहीं करता ? इन बातों पर यदि गंभीरतापूर्वक विचार किया जाए, तो प्रतीत होगा कि किसी राष्ट्र या समाज का भविष्य उसकी भावी पीढ़ियों पर निर्भर है। यदि सुयोग्य नागरिकों की जरूरत हो, तो भोजन, चिकित्सा अथवा शिक्षा का प्रबंध भरकर देने से काम नहीं चलेगा। इस सुधार का क्रम सुयोग्य जनक-जननी द्वारा सुविकसित संतान उत्पन्न करने का उत्तरदायित्व निबाहने से होगा। यह तैयारी विवाह के दिन से ही आरंभ हो जाती है। यदि पति-पत्नी की शारीरिक, मानसिक और आर्थिक स्थिति सुयोग्य संतान के उत्पादन तथा भरण-पोषण के उपयुक्त नहीं है, तो उनके द्वारा की जाने वाली वंशवृद्धि अवांछनीय स्तर की ही बनेगी और उनका दुष्परिणाम समस्त समाज को भुगतना पड़ेगा।

वंशानुक्रम विज्ञान की चर्चा इन दिनों जोरों पर है। जनन-रस में पाये जाने वाले गुण-सूत्रों को भावी पीढ़ियों के निर्माण का सारा श्रेय दिया जा रहा है। इन जीव कणों में हेर-फेर करके ऐसे उपाय ढूँढ़े जा रहे हैं, जिनके आधार पर मनचाहे आकार-प्रकार की संतानों को जन्म दिया जा सके। इस अत्युत्साह में अभी तक आंशिक सफलता ही मिली है, क्योंकि गुण सूत्रों ने आकृति तक में अभीष्ट परिवर्तन प्रस्तुत नहीं किया, फिर प्रकृति के परिवर्तन की तो बात ही क्या की जाए ?

प्रयोगशालाओं में—रासायनिक पदार्थों की अथवा विद्युत् उपचार की ऐसी विधि-व्यवस्था सोची जा रही है, जिससे अभीष्ट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्तर की संतानें पैदा की जा सकें। इस दिशा में जी तोड़ प्रयत्न हो रहे हैं और सोचा जा रहा है कि बिना माता का स्तर सुधारे अथवा बिना वातावरण की चिंता किये वैज्ञानिक विद्या के आधार पर सुसंतति उत्पादन की व्यवस्था यांत्रिक क्रिया-कलाप द्वारा संपन्न कर ली जायेगी।

जनन-रस में पाये जाने वाले गुण-सूत्र में एक व्यक्त रूप—डामिनेंट है। दूसरा अव्यक्त रूप है—रिसेसिव। व्यक्त भाग को भौतिक माध्यमों से प्रभावित किया जा सकता है और उस सीमा तक भले या बुरे प्रभाव संतान में उत्पन्न किये जा सकते हैं। पर अव्यक्त स्तर को केवल जीव की निजी इच्छा-शक्ति ही प्रभावित कर सकती है। महत्त्वपूर्ण परिवर्तन इस चेतनात्मक परिधि में ही हो सकते हैं, इसके लिए रासायनिक अथवा चुंबकीय माध्यमों से काम नहीं चल सकता। इसके लिए चिंतन को बदलने वाली अंतःस्फुरणा अथवा दबाव भरी परिस्थितियाँ होनी चाहिए। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह सोचा जाने लगा है कि माता-पिता का स्तर सुधारे बिना सुसंतति की समस्या प्रयोगशालाओं द्वारा हल न हो सकेगी। वनस्पति अथवा पशुओं में सुधार और उत्पादन सरल है, पर मनुष्यों में पाये जाने वाले चिंतन तत्त्व में उत्कृष्टता भरने की आवश्यकता यांत्रिक पद्धति कदाचित् ही पूरी कर सकेगी।

गुण-सूत्रों में हेर-फेर करके तत्काल जिस नई पीढ़ी का स्वप्न इन दिनों देखा जा रहा है, उसे म्यूटेशन—आकस्मिक परिवर्तन प्रक्रिया कहा जा सकता है। म्यूटेशन के संदर्भ में पिछले दिनों पैवलव, मैकडूगल, मारगन, मुलर जैसे जीव विज्ञानियों ने अनेक माध्यमों और उपकरणों से विविध प्रयोग किये हैं। जनन-रस को प्रभावित करने वाले उन्होंने विद्युतीय और रासायनिक उपाय अपनाये। सोचा यह गया था कि उससे अभीष्ट शारीरिक और मानसिक क्षमतासंपन्न पीढ़ियाँ उत्पन्न होंगी, पर उनसे मात्र शरीर की ही दृष्टि से थोड़ा हेर-फेर हुआ। विशेषतया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बिगाड़-प्रयोजन में ही सफलता अधिक मिली, सुधार की गति अति मंद रही, गुणों में पूर्वजों के आनुवंशिक प्रभाव की अपेक्षा कोई अतिरिक्त सुधार संभव न हो सका।

एक जाति के जीवों में दूसरे जाति के जीवों की कलमें लगाई गईं और वर्णसंकर संतानें उत्पन्न की गईं। यह प्रयोग उसी जीवधारी तक अपना प्रभाव दिखाने में सफल हुए। अधिक से अधिक एक पीढ़ी कुछ बदली-बदली-सी जन्मी, इसके बाद वह क्रम समाप्त हो गया। घोड़ी और गधे के संयोग से उत्पन्न होने वाले खच्चर अगली पीढ़ियों को जन्म देने में असमर्थ रहते हैं।

वर्णसंकर संतान उत्पन्न करके पूर्वजों की अपेक्षा अधिक सशक्त और समर्थ पीढ़ियाँ उपजाने का उत्साह अब क्रमशः घटता चला जा रहा है। इस संदर्भ में प्रथम आवश्यकता तो यही रहती है कि प्रकृति एक ही जाति के जीवों में संकरण स्वीकार करती है। मात्र उपजातियों में ही प्रत्यारोपण सफल हो सकता है। यदि शरीर रचना में विशेष अंतर होगा, तो संकरण प्रयोगों में सफलता न मिलेगी, दूसरी बात यह है कि काया की दृष्टि से थोड़ा सुधार इस प्रक्रिया में हो भी सकता है, गुणों में नहीं। वर्णसंकर गाएँ मोटी, तगड़ी तो हुईं, पर अपने पूर्वजों की अपेक्षा अधिक दुधारू न बन सकीं। इन प्रयोगों से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि उत्कृष्टता जीव के अपने विकास-क्रम के साथ जुड़ी हुई है, वह बाहरी उलट-पुलट करके विकसित नहीं की जा सकती।

सुसंतति के संबंध में वैज्ञानिक प्रयोग अधिक से अधिक इतना ही कर सकते हैं कि रासायनिक हेर-फेर करके शारीरिक दृष्टि से अपेक्षाकृत थोड़ी मजबूत पीढ़ियाँ तैयार कर दें, पर उनमें नैतिक, बौद्धिक एवं सामाजिक उत्कृष्टता भी होगी, इसकी गारंटी नहीं दी जा सकती। ऐसी दशा में उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकने वाले नागरिकों का सर्वतोमुखी सृजन कहाँ संभव होगा ?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उस अत्युत्साह से अब वंशानुक्रम लगभग हतोत्साहित हो चला है और सोचा जा रहा है कि अभिभावकों को ही सुयोग्य बनाने पर ध्यान दिया जाए। एक ओर अयोग्य व्यक्तियों को अवांछनीय उत्पादन से रोका जाए, दूसरी ओर सुयोग्य, सुसंस्कृत एवं समुन्नत लोगों को प्रजनन के लिए प्रोत्साहित किया जाए। विवाह निजी मामला न रहे, वरन् सामाजिक नियंत्रण इस बात का स्थापित किया जाए कि शारीरिक ही नहीं, अन्य दृष्टियों से भी सुयोग्य और समर्थ को विवाह-बंधन में बँधने और संतानोत्पादन के लिए स्वीकृति दी जाए।

जर्मनी के तीन प्रसिद्ध जीव विज्ञानियों ने वंशानुक्रम विज्ञान पर एक संयुक्त ग्रंथ प्रकाशित कराया है। नाम है 'ह्यूमन हैरेडिटी'। लेखकों के नाम हैं—डॉ० आरवेन वेवर, डॉ० अयोजिन फिशर और डॉ० फ्रिट्ज लेंज। उन्होंने वासना के उभार में चल रहे अंधाधुंध विवाह संबंधों के कारण संतान पर होने वाले दुष्प्रभाव को मानवी-भविष्य के लिए चिंताजनक बताया है। लेखकों का संयुक्त मत है कि—'अनियंत्रित' विवाह प्रथा के कारण पीढ़ियों का स्तर बेतरह गिरता जा रहा है, उन्होंने इस बात को भी दुःखद बताया है कि निम्न वर्ग की संतानें बढ़ रही हैं और उच्चस्तर के लोगों की संख्या तथा संतानें घटती चली जा रही हैं।

पीढ़ियों में आकस्मिक परिवर्तन म्यूटेशन के विशेष शोधकर्ता टर्नियर का निष्कर्ष यह है कि मानसिक दुर्बलता के कारण गुण सूत्र में ऐसी अशक्तता आती है, जिसके कारण पीढ़ियाँ गई-गुजरी बनती हैं। इसके विपरीत मनोबल संपन्न व्यक्तियों की आंतरिक स्फुरणा उनके जनन-रस में ऐसा परिवर्तन कर सकती है, जिससे तेजस्वी और गुणवान् ही नहीं—शारीरिक दृष्टि से भी परिपुष्ट संतानें उत्पन्न हों। वंश परंपरा से जुड़े हुए कुष्ठ, उपदंश, क्षय, दमा, मधुमेह आदि रोगों की तरह विधेयात्मक पक्ष यह भी है कि मनोबल के आधार पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उत्पन्न चेतनात्मक समर्थता पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़े और उसका सत्परिणाम शरीर, मन अथवा दोनों पर प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर हो सके। चमत्कारी आनुवंशिक परिवर्तन इसी आधार पर संभव है, मात्र रासायनिक परिवर्तन के लिए भौतिक प्रयास इस प्रयोजन की पूर्ति नहीं कर सकते। यह तथ्य हमें इस निष्कर्ष पर पहुँचाता है कि जिस प्रकार परिवार नियोजन के द्वारा अवांछनीय उत्पादन रोकने का प्रयास किया जाता है, उसी प्रकार समर्थ और सुयोग्य संतानोत्पादन के लिए आवश्यक ज्ञान, आधार-साधन एवं प्रोत्साहन उपलब्ध कराया जाए।

● क्या मनुष्य पूर्वजों की प्रतिकृति है ?

आनुवंशिकी-विज्ञान के अंतर्गत पिछले दिनों यह सिद्ध किया जाता रहा है कि प्राणी अपने पूर्वजों की प्रतिकृति होते हैं। माता-पिता के डिंब-कीट और शुक्रकीट मिल-जुलकर भ्रूण-कलल में परिणत होते हैं और शरीर बनना आरंभ हो जाता है। उस शरीर में जो मनःचेतना रहती है, उसका स्तर भी पूर्वजों की मनःस्थिति की भाँति ही उत्तराधिकार में मिलता है। शरीर की संरचना और मानसिक बनावट के लिए बहुत हद तक पूर्वजों के उन जीवाणुओं को ही जिम्मेदार ठहराया गया है, जो परंपरा के रूप में वंशधरों में उतरते चले जाते हैं।

इस प्रतिपादन से यह निष्कर्ष निकलता है कि व्यक्ति अपने आप में कुछ बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है। पूर्वजों के ढाँचे में ढला हुआ एक खिलौना मात्र है। यदि संतान को सुयोग्य-सुविकसित बनाना हो, तो वह कार्य पीढ़ियों पहले आरंभ किया जाना चाहिए। अन्यथा साँचे में ढले हुए इस खिलौने में कुछ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन न हो सकेगा। आनुवंशिकी का प्रतिपादन, जहाँ तक मानव प्राणी का संबंध है, बहुत ही अपूर्ण और अवास्तविक है। पशु-पक्षियों में एक हद तक यह बात सही भी हो सकती, पर मनुष्य के लिए यह कहना अनुचित है कि वह पूर्वजों के साँचे में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ढला हुआ एक उपकरण मात्र है। यह मानवी इच्छा-शक्ति, विवेक-बुद्धि, स्वतंत्र-चेतना और आत्मनिर्भरता को झुठलाना है। समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री और मनोविज्ञानवेत्ता वातावरण एवं परिस्थितियों के उत्थान-पतन का कारण बताते रहे हैं। आत्मवेत्ताओं ने एक स्वर से सदा यही कहा है—मनुष्य की अंतःचेतना स्वनिर्मित है। वह वंश परंपरा से नहीं, संचित संस्कारों और प्रस्तुत प्रयत्नों के आधार पर विकसित होती है। इच्छा-शक्ति और संकल्प-शक्ति के आधार पर अपने मानसिक ढाँचे में कोई चाहे तो आमूलचूल परिवर्तन कर सकता है।

आनुवंशिकी की मान्यताएँ 'एक हद तक ही सही' ठहराई जा सकती हैं। चमड़ी का रंग, चेहरा, आकृति, अवयव आदि पूर्वजों की बनावट के अनुरूप हो सकते हैं, पर गुण, कर्म, स्वभाव भी पूर्वजों जैसे ही हों—यह आवश्यक नहीं। यदि ऐसा ही रहा होता, तो किसी कुल में सभी अच्छे और किसी कुल में सभी बुरे उत्पन्न होते। रुग्णता-स्वस्थता, बुद्धिमत्ता-मूर्खता, सज्जनता-दुष्टता, कुशलता, अस्त-व्यस्तता भी परंपरागत होती, तो प्रगतिशील वर्ग के परिवार के सभी सदस्य सुविकसित होते ओर पिछड़े लोगों का स्तर सदा के लिए गया-गुजरा ही बना रहता। तब उत्थान-पतन के लिए किये गये प्रयत्नों की भी कुछ सार्थकता न होती। वातावरण का भी कोई प्रभाव न पड़ता, पर ऐसी स्थिति है नहीं। पूर्वजों की स्थिति से सर्वथा भिन्न स्तर की संतानों के अगणित उदाहरण पग-पग पर सर्वत्र बिखरे हुए देखे जा सकते हैं। इससे मनुष्य की स्वतंत्र चेतना और इच्छा-शक्ति की प्रबलता का साक्ष्य ही स्पष्ट रूप से सामने आता है।

मद्यप मनुष्यों की संतान क्या जन्मजात रूप से उस लत से ग्रसित होती है ? इस खोज-बीन में पाया गया कि ऐसी कोई बात नहीं है, वरन् उलटा यह हुआ कि बच्चों ने बाप को मद्यपान के कारण अपनी बर्बादी करते देखा, तो वे उसके विरुद्ध हो गये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और उन्होंने न केवल मद्यपान से अपने को अछूता रखा, वरन् दूसरों को भी उसे अपनाने से रोका।

मनुष्यों में गुण सूत्रों के हेर-फेर से जो परिणाम सामने आये हैं, उससे स्पष्ट है कि बिगाड़ने में अधिक और बनाने में कम सफलता मिली है। विकलांग और पैतृक रोगों से ग्रसित संतान उत्पन्न करने में आशाजनक सफलता मिली है, क्योंकि विषाक्त मारकता से भरे रसायन सदा अपना त्वरित परिणाम दिखाते हैं। यह गति विकासोन्मुख प्रयत्नों की नहीं होती। नीलाथोथा खाने से उलटी तुरंत हो सकती है, पर पाचन-शक्ति सुधार देने के प्रयोग उतने सफल नहीं होते। देव से असुर की शक्ति को अधिक मानने का यही आधार है। मनुष्यों में मनचाही संतान उत्पन्न करने का प्रयोग सिर्फ इतनी मात्रा में कुछ अधिक सफल हुआ है कि रंग-रूप और गठन की दृष्टि से जनक-जननी का सादृश्य दृष्टिगोचर हो सके। काया की आंतरिक दृढ़ता, बौद्धिक तीक्ष्णता एवं भावनात्मक उत्कृष्टता उत्पन्न करने में वैज्ञानिक प्रयोगों का उत्साहवर्धक परिणाम नहीं निकला है।

गुण-सूत्रों को बदलने में इन दिनों विद्युत्-ऊर्जा एवं रासायनिक हेर-फेर के साधन जुटाये जा रहे हैं, पर वे यह भूल जाते हैं कि यह बाहरी थोप-थाप स्थिर न रह सकेगी। उससे क्षणिक-चमत्कार भले ही देखा जा सके। शरीर के प्रत्येक अवयव को मस्तिष्क प्रभावित करता है और मस्तिष्क का सूत्र-संचालन इच्छा-शक्ति के हाथ में रहता है। अस्तु, शारीरिक, मानसिक समस्त परिवर्तनों का तात्त्विक आधार इस इच्छा-शक्ति को ही मानना पड़ेगा। गुण-सूत्रों पर भी इसी ऊर्जा का प्रभाव पड़ता है और इसी माध्यम से वह परिवर्तन किये जा सकते हैं, जो मन-चाही पीढ़ियाँ उत्पन्न करने के लिए वैज्ञानिकों को अभीष्ट हैं।

अभीष्ट स्तर की पीढ़ियाँ क्या रासायनिक हेर-फेर अथवा विद्युतीय प्रयोग उपकरणों द्वारा प्रयोगशालाओं में विनिर्मित हो सकती हैं। यह एक जटिल प्रश्न है। यदि ऐसा हो सका तो यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मानना पड़ेगा कि मनुष्य इच्छा-शक्ति का धनी नहीं, वरन् रासायनिक पदार्थों की परावलंबी प्रतिक्रिया मात्र है। यदि यह सिद्ध हो सका, तो मनोबल और आत्मबल की गरिमा समाप्त कर देने वाली दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति ही कहा जायेगा, पर ऐसा हो सकना संभव दिखाई नहीं पड़ता-भले ही उसके लिए एड़ी-चोटी के प्रयत्न कितने ही किये जाते रहें।

शरीर के विभिन्न अंगों पर दबाव डाले जाते रहे हैं, पर प्राणी की मूल इच्छा ने उस दबाव को आवश्यक नहीं समझा, तो उस तरह के परिवर्तन नहीं ही हो सके। चीन में शताब्दियों तक स्त्रियों के पैर छोटे होना—सौंदर्य का चिह्न माना गया, इसके लिए उन्हें कड़े जूते पहनाये जाते थे। उससे पैर छोटे बनाने में सफलता मिली। पर वंश-परंपरा की दृष्टि से वैसा कुछ भी नहीं हुआ। हर नई लड़की के पैर पूरे अनुपात से ही होते थे।

प्राणियों के क्रमिक-विकास में इच्छा-शक्ति का ही प्रधान स्थान रहा है। मनुष्य तो मनोबल का धनी है, उसकी बात जाने भी दें और अन्य प्राणधारियों पर दृष्टिपात करें, तो प्रतीत होगा कि उनकी वंश-परंपरा में बहुमुखी परिवर्तन होता रहा है। इसका सामयिक परिस्थितियों का चेतना पर पड़ने वाला दबाव ही प्रधान कारण रहा है। असुविधाओं को हटाने और सुविधाएँ बढ़ाने की आंतरिक आकांक्षा ने प्राणियों की शारीरिक स्थिति और आकृति में ही नहीं, प्रकृति में भी भारी हेर-फेर प्रस्तुत किया है। जीव-विज्ञानी इस तथ्य से भली-भाँति परिचित हैं।

यदि पूर्वजों के गुण लेकर ही संतानें उत्पन्न होने वाली बात को सही माना जाए तो जीवों की आकृति-प्रकृति में परिवर्तन कैसे संभव हुआ ? उस स्थिति में तो पीढ़ियों का स्तर एक ही प्रकार का चलता रहना चाहिए था।

लेमार्क ने प्राणियों का स्तर बदलने में वातावरण को, परिस्थितियों को श्रेय दिया है। वे कहते हैं, इच्छा-शक्ति इन्हीं दबावों के कारण उभरती, उतरती है। सुविधा-संपन्न परिस्थितियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के ऊपर किसी प्रकार का दबाव नहीं रहता। अतएव उनका शरीर ही नहीं, बुद्धिकौशल भी ठप्प पड़ता जाता है। अमीरी के वैभव में पले हुए लोग अक्सर छुईमुई बने रह जाते हैं और उनका चरखा बखेर देने के लिए छोटा-सा आघात ही पर्याप्त होता है।

लेमार्क ने नये किस्म के अनेक जीवधारियों की उत्पत्ति का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हुए कहा है कि बाहर से मौलिक जीव दीखने पर भी वस्तुतः किसी ऐसे पूर्व प्राणी के ही वंशज होते हैं, जिन्हें परिस्थितियों के दबाव से अपने परंपरागत ढाँचे में आमूलचूल परिवर्तन करना पड़ा।

जीवों के विकास-इतिहास के पन्ने-पन्ने पर यह प्रमाण भरे पड़े हैं कि प्राणियों के अंग-प्रत्यंग निष्क्रियता के आधार पर कुंठित हुए हैं और सक्रियता ने उन्हें विकसित किया है। प्रवृत्ति, प्रयोजन और चेष्टाओं का मूल इच्छा-शक्ति ही प्राणीसत्ता में विकास, अवसाद उत्पन्न करती है। रासायनिक पदार्थों और गुण-सूत्रों की वंश-परंपरा विज्ञान में कायिक क्षमता को एक अंश तक प्रभावित करने वाला आधार भर माना जाना चाहिए। आधुनिक विज्ञानवेत्ता मौलिक-भूल यह कर रहे हैं कि मानवी-सत्ता को उन्होंने रासायनिक प्रतिक्रिया मात्र समझा है और उसका विकास करने के लिए जनक-जननी को नहीं-उनके जनन-रसों को अत्यधिक महत्त्व दे रहे हैं। इस एकांगी आधार को लेकर मनचाही आकृति-प्रकृति की पीढ़ियाँ वे कदाचित् ही पैदा कर सकें।

वैज्ञानिक बीजमन ने चूहों और चुहियों की लगातार बीस पीढ़ियों तक पूँछें काटीं और देखा कि, क्या इसके फलस्वरूप बिना पूँछवाले चूहे पैदा किये जा सकते हैं ? उन्हें अपने प्रयोग में सर्वथा असफल होना पड़ा। बिना पूँछ के माँ-बाप भी पूँछ वाले बच्चे ही जनते चले गये। इससे यह निष्कर्ष निकाला कि मात्र शारीरिक हेर-फेर से वंशानुक्रम नहीं बदला जा सकता। इसके लिए प्राणी की अपनी रुचि एवं इच्छा का समावेश होना नितांत आवश्यक है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हर्बर्ट स्पेंसर ने अपनी खोजों में ऐसे कितने ही प्राणियों के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं, जिन्होंने शरीर के किसी अवयव को निष्क्रिय रखा, तो वह क्षीण होता चला गया और लुप्त भी हो गया। इसके विपरीत ऐसे उदाहरण भी कम नहीं हैं, जिनमें "आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है" वाले सिद्धांत को सही सिद्ध करते हुए अपने शरीर में कई तरह के नये पुर्जे विकसित किये और पुरानों को आश्चर्यजनक स्तर तक परिष्कृत किया।

समुद्र-तट की गहराई में रहने वाली मछलियों को प्रकाश से वंचित रहना पड़ता है। अतएव उनके आँखों का चिह्न रहते हुए भी उनमें रोशनी नहीं होती है। आँख वाले अंधों में उनकी गणना की जा सकती है। अँधेरी गुफाओं में जन्मने और पलने वाले थलचरों का भी यही हाल होता है। उनकी आँखें ऐसी होती हैं, जो अँधेरे में ही कुछ काम कर सकें। प्रकाश में तो वे बेतरह चौंधिया जाती हैं और निकम्मी साबित होती हैं।

समर्थ का चुनाव मात्र शारीरिक बलिष्ठता पर निर्भर नहीं है, वरन् सच पूछा जाए तो उनकी मनःस्थिति की ही परख इस कसौटी पर होती है। पशुवर्ग और सरीसृप वर्ग के विशालकाय प्राणी आदिमकाल में थे। उनकी शरीरगत क्षमता अद्भुत थी, फिर भी वे मंद-बुद्धि अदूरदर्शिता, आलस जैसी कमियों के कारण दुर्बल संज्ञा वाले ही सिद्ध हुए और अपना अस्तित्व खो बैठे। जबकि उसी समय में छोटी काया वाले प्राणी अपने मनोबल के कारण न केवल अपनी सत्ता सँभालते रहे, वरन् क्रमशः विकासोन्मुख भी होते चले गये।

जीवों के विकास क्रम का एक महत्त्वपूर्ण आधार यह है कि उन्हें परिस्थितियों से जूझना पड़ा-अवरोध के सामने टिके रहने के लिए अपने शरीर में तथा स्वभाव में अंतर करना पड़ा। यह परिवर्तन किसी रासायनिक हेर-फेर के कारण नहीं, विशुद्ध रूप से इच्छा शक्ति की प्रवाह-धारा बदल जाने से ही संभव हुआ है। जीवन-संग्राम में जूझने की पुरुषार्थ-परायणता का उपहार ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अल्प-प्राण जीवों को महाप्राण स्तर का बन सकने के रूप में मिला है। जिन्होंने विपत्ति से लड़ने की हिम्मत छोड़ दी और हताश होकर पैर पसार बैठे, उन्हें प्रकृति ने कूड़े-कचरे की तरह बुहारकर घूरे पर पटक दिया। किसान और माली भी तो अपने खेत-बाग में अनुपयोगी खरपतवार की ऐसी ही उखाड़-पछाड़ करते रहते हैं। विकास की उपलब्धि पूर्णतया जीवन-संग्राम में विजय प्राप्त करने के फलस्वरूप ही मिलती है और इस संघर्षशीलता का पूरा आधार साहसी एवं पुरुषार्थी मनोभूमि के साथ जुड़ा रहता है।

आनुवंशिकी-विज्ञान की अन्यान्य शोधें कितनी ही महत्त्वपूर्ण क्यों न हों, पर यह प्रतिपादन स्वीकार्य नहीं हो सकता कि प्राणियों का, विशेषतया मनुष्यों का स्तर पूर्वजों के परंपरागत गुण सूत्रों पर निर्भर है। इच्छा-शक्ति की प्रचंड समर्थता के आधार पर शारीरिक, मानसिक और सामाजिक परिवर्तनों की संभावना को मान्यता देने के उपरांत ही वंशगत विशेषताओं की चर्चा की जाए, यही उचित है।

मानव जाति के उज्ज्वल भविष्य का प्रश्न बहुत कुछ सुसंतति के निर्माण की प्रक्रिया पर निर्भर है। इसके विभिन्न पक्षों पर विचार करना पड़ेगा और आवश्यक आधार खोजना पड़ेगा। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि भारतीय मनीषियों ने बहुत पहले ही सामान्य गृहस्थ जीवन में भी ब्रह्मचर्य का अधिकाधिक पालन करने पर ही सुविकसित संतान के जन्म की संभावना व्यक्त की थी और अनियंत्रित कामोपभोग को न केवल स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बताया था, वरन् उससे अविकसित, निर्बल तथा अयोग्य संतानों के जन्मने की आशंका व्यक्त की थी।

विज्ञान भी अब इस तथ्य की पुष्टि करने लगा है। फिलाडेल्फिया मेडिकल सेंटर द्वारा किये गये अनुसंधान प्रयोगों के जो निष्कर्ष पिछले दिनों प्रकाशित हुए हैं, उनमें यही बताया गया है—कामुक और लंपट व्यक्ति योग्य संतानों को जन्म देने में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अक्षम-असमर्थ रहते हैं, इस मनःस्थिति वाले स्त्री-पुरुषों के संयोग से उत्पन्न जीवाणु भी निष्क्रिय और निस्तेज ही पाये गये हैं। ऐसे निस्तेज-निराश गर्भाधान से मनस्वी और प्रतिभाशाली बालक उत्पन्न नहीं हो सकते।

अधिक संख्या में संतानोत्पादन शरीर की रासायनिक स्थिति पर निर्भर नहीं है, वरन् हारमोन उत्तेजता से संबंधित है। रासायनिक दृष्टि से जिस स्थिति का एक शरीर बंध्यत्व ग्रस्त होगा, उस स्थिति का दूसरा शरीर बहु प्रजनन की अति भी कर सकता है। ऐसे शरीरों का विश्लेषण करने पर उनके आंतरिक विद्युत्-प्रवाह को ही उस भिन्नता के लिए उत्तरदायी ठहराया जां सकता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

रूस की एक महिला ने २७ बार गर्भवती होकर २३ शिशुओं को जन्म दिया। यह महिला अपने समय में बहुत प्रख्यात हुई थी और सम्राट जार द्वितीय ने उसे सम्मानित किया था।

फ्रांस की एक ग्रामीण नारी ने २१ संतानों की माँ बनकर इस समय में सर्वाग्रणी जननी का पद प्राप्त किया है। इंडोनेशिया की एक महिला गत २८ वर्षों से हर साल एक संतान को अनवरत रूप से जन्म देती चली आ रही है। मांटीमिलेटो (इटली) की एक महिला श्रीमती रोसा अब तक २६ बच्चों को जन्म दे चुकी हैं।

केवल कन्याओं को जन्म देने वाली महिलाओं में प्रथम हैं इंडियाना पोलिश की श्रीमती सिसिल, जिन्होंने लगातार १४ कन्याओं को जन्म दिया है। इसके बाद दूसरे नंबर पर आती हैं श्रीमती लाइड ब्रुक्स, उनके १३ कन्याएँ ही हैं। इन दोनों महिलाओं ने कभी भी पुत्र प्रसव नहीं किया।

आयु के न्यून या अधिक होने पर भी प्रजनन अवयव इस स्थिति में हो सकते हैं कि वे संतानोत्पादन कर सकें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुआर्राटगुएट (ब्राजील) में २३ बच्चों के पिता जोसे पार फरियो डी० एराओ ने १०६ वर्ष की आयु में ४८ वर्षीय महिला के साथ चौथा विवाह किया है। पूछने वालों को उसने बताया कि यदि मेरे और संतान होती है, तो उसे पूर्णतया स्वाभाविक समझूँगा। नव-वधू का यह प्रथम विवाह था। वह बहुत समय से उसकी प्रेयसी रही। लोगों ने इस वृद्ध विवाह का मखौल उड़ाया, तो वधू ने इससे असहमति प्रकट की और उसने कहा—मेरा पति शारीरिक दृष्टि से पूर्ण सक्षम है और मैं उससे संतुष्ट हूँ।

दक्षिण पेरू के आरिक्या अस्पताल में एक ११ वर्षीय बालिका ने ३ किलोग्राम वजन के बच्चे को जन्म दिया। जच्चा और बच्चा दोनों ही स्वस्थ रहे।

इससे पूर्व कम उम्र की लड़की द्वारा प्रजनन का पहला रिकार्ड यह है कि १९३८ में एक सात वर्षीय बालिका लिंडा मैडिना ने कैंस्ट्रोविरीना के अस्पताल में पुत्र को जन्म दिया था।

यह प्रमाण बताते हैं कि शरीर की स्थिति पर प्रजनन निर्भर नहीं, वरन् उसका सीधा संबंध ऐसी चेतना से है, जो कायगत रासायनिक पदार्थों से कहीं ऊँचा है।

इन तथ्यों पर विचार करने से काम-प्रवृत्ति को नियंत्रित परिष्कृत, परिपुष्ट, प्रबल और शिथिल बनाने को ही नहीं, अपितु अभीष्ट संतानोत्पादन के लिए उस विशिष्ट चेतना के साथ संपर्क बनाना पड़ेगा, जो अस्थि-मांस से नहीं, वरन् अंतःचेतना से संबंधित है। चेतना का यह स्तर योगाभ्यास की कुंडलिनी उत्थान जैसी साधना पद्धतियों से संबंधित है। ब्रह्मचर्य का परिपूर्ण पालन और उस ओजस् शक्ति का प्रखर व्यक्तित्व के रूप में परिवर्तन भी इसी स्तर की साधनाओं द्वारा संभव हो सकता है।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्मचर्य से शक्ति और संयम द्वारा प्रसन्नता

❑

काम वासना का मनुष्य जीवन में बहुत छोटा-सा स्थान है। प्रकृति ने उसमें एक आनंद इसलिए भर दिया है कि सृष्टि का क्रम चलता रहे, परंतु आधुनिक सभ्यता और उसके विचारक काम प्रवृत्ति को ही सब कुछ, सर्वप्रधान मानने लगे हैं। यह भी कहा जाता है कि इस काम प्रवृत्ति को उन्मुक्त रूप से खुलने देना चाहिए अन्यथा मन और शरीर में कई एक रोगों की उत्पत्ति हो सकती है। इस विचार को प्रतिपादित करने में प्रसिद्ध मनोविज्ञान शास्त्री सिगमंड फ्रायड का नाम अग्रणी है। उनका यह बहुचर्चित प्रतिपादन सर्वविदित है कि काम वासना की अतृप्त इच्छाएँ ही मनोविकारों को उत्पन्न करती हैं और उस अवरोध से प्रतिभा कुंठित होती है। मानसिक ही नहीं-शारीरिक स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ता है और व्यक्तित्व दब जाता है। वे कहते रहे हैं—मनुष्य इंजन है और कामवासना उसमें बनती-बढ़ती भाप। यदि इस भाप को निकलने का अवसर न मिले, तो विस्फोट होगा और व्यक्तित्व बिखर जायेगा। उन्होंने उन्मुक्त काम सेवन की वकालत की है और उस पर लगे प्रतिबंधों को हानिकारक बताया है।

उस प्रतिपादन ने यौन सदाचार पर बुरा प्रभाव डाला है और लोगों का जितना विश्वास फ्रायड के प्रतिपादन पर जमा है—उतना ही असंयम और व्यभिचार को प्रोत्साहन मिला है। सुशिक्षित वर्ग में इस तथाकथित मनोविज्ञान के आधार पर यह मान्यता जड़ जमाती जा रही है कि कामेच्छा की पूर्ति आवश्यक है। उसे स्वच्छंद उपभोग का अवसर मिलना चाहिए। संयम से शारीरिक और मानसिक हानि होती है। इस प्रतिपादन का कुप्रभाव नर-नारी के बीच पावन-संबंधों की समाज-व्यवस्थापरक सुव्यवस्था एवं पवित्रता पर पड़ रहा है। दांपत्य जीवन में यदि कुछ अतृप्ति रह जाती है, तो उसे बाहर पूरा करने में भय, लज्जा, संकोच का अनुभव नहीं किया जाता, वरन् उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उद्धत आचरण को शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से आवश्यक माना जाता है। यह व्यभिचार का खुला समर्थन है। दांपत्य मर्यादाओं को फिर कैसे स्थिर रखा जा सकेगा ? अविवाहित या विधुर यदि व्यभिचार पथ पर प्रवृत्त होते हैं, तो उन्हें किस तर्क से समझाया जा सकेगा ? फिर जो छेड़छाड़ और गुंडागर्दी की अश्लील शर्मनाक घटनाएँ आये दिन होती रहती हैं, उन्हें अवांछनीय या अनावश्यक कैसे ठहराया जा सकेगा ? फ्रायड का शास्त्र दूसरे शब्दों में व्यभिचार शास्त्र ही है, जिसे मनोविज्ञान में दार्शनिक मान्यता देकर समाज व्यवस्था पर कुठाराघात ही किया जा रहा है। एक तो वैसे ही पशु-प्रवृत्तियाँ यौन उच्छृंखलता की ओर प्रोत्साहित करती थीं—सामाजिक परिस्थितियाँ भी उसी ओर आकर्षण बढ़ाती थीं, इस पर उस प्रवृत्ति को वैज्ञानिक समर्थन मिलने लगे और संयम को हानिकारक बताया जाने लगे, तब तो ब्रह्मचर्य और दांपत्य जीवन की पवित्रता का ईश्वर ही रक्षक है।

इस प्रकार के प्रतिपादन का उत्साह संभवतः फ्रायड को पाश्चात्य धर्म मान्यताओं से भी मिला होगा, क्योंकि उनका तत्त्वदर्शन कुछ ऐसा ही अटपटा है।

यहूदी और ईसाई धर्म मान्यताओं के अनुसार मनुष्य जन्म-जात पापी है। वह पाप वृत्तियाँ लेकर अवतरित हुआ है। उसकी प्रकृति पापमूलक है। इस 'ओरीजिनल सिन'—को ही संभवतः फ्रायड ने मनुष्य की मूलभूत प्रवृत्ति माना है। जो कुछ वह सोचता है, करता है—उसमें पाप ही प्रधान होना चाहिए। पाप में से प्रधानता किसे दी जाए ? फ्रायड को इसके लिए सबसे सरल और आकर्षक 'सेक्स' ही जँचा और उसने यह मान्यता गढ़ डाली कि मनुष्य की स्थिरता एवं प्रगति 'सेक्स' पर अवलंबित है। उसकी निरंतर इच्छानुरूप-स्वच्छंद पूर्ति न हो सकेगी, तो मन में कॉम्प्लेक्स—ग्रंथियाँ बनेंगी। मनोविकार उत्पन्न करेंगी, बीमारी लाएँगी और न जाने क्या-क्या करेंगी ? इसलिए उन समस्त उपद्रवों और हानियों से बचने का एक ही आकर्षक तरीका है कि स्वच्छंद काम सेवन की सुविधा प्राप्त की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाए। इस दिशा में लगे हुए प्रतिबंधों और मर्यादाओं को अमान्य किया जाये। स्वेच्छाचार और स्वच्छंदतावाद संभवतः इसलिए उन्हें उचित प्रतीत हुआ, क्योंकि उस दर्शन में—जिसमें फ्रायड पले, यह माना जाता रहा है कि मनुष्य जन्मजात पापी है। पाप उसकी प्रकृति है। जब ऐसा ही है तो उस मूल प्रवृत्ति को क्यों रोका जाए ? उसे तृप्त ही क्यों न होते रहने दिया जाए ? यही है फ्रायड का अधूरा और बेतुका चिंतन, जिसे न जाने क्यों विचारशील लोगों ने आँखें बंद करके स्वीकार कर लिया है।

मनुष्य की प्रकृति में कामुकता का भी एक स्थान है, पर वह है सीमित। उसे मान्यता मिली है, उसे हर्षोल्लास के विकास की दृष्टि से प्रयुक्त भी होने दिया जाता है, उसकी दिशा ऊँची रखी जाती है और यह प्रयत्न किया जाता है कि वह ऊर्ध्वगामी होकर विकसित हो। विवाह के समय पत्नी प्रियतमा व प्रेयसी होती है, रस-रंग में सहायक होती है, पर उसकी इस स्थिति की अवधि बहुत स्वल्प है। जल्दी ही वह माँ बन जाती है और फिर पति भी-पत्नी भी अपने उत्तरदायित्वों और गृहस्थ के कर्तव्यों को देखते हुए बालकों पर पड़ने वाले प्रभाव को ध्यान में रखते हुए उस प्रणय-प्रवृत्ति को जल्दी ही शालीनता में परिणत करने लगते हैं। आरंभिक दिनों में चंद्रवदनी, मृगनयनी आदि कहा जाता था, पर थोड़े ही दिनों बाद वह मुन्नी की मम्मी, श्याम की माँ कहकर पुकारी जाती है। फिर परस्पर संबोधन बच्चों के नाम पर उनकी माता जी या उनके पिताजी कहकर किये जाते हैं। वासनात्मक दृष्टिकोण बदलकर अभिभावकों का, बुजुर्गों का बन जाता है। यही स्वस्थ दृष्टिकोण है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की चार उपलब्धियों में एक गणना काम की भी है, पर उसकी प्रधानता नहीं, तीसरा नंबर है। पहले धर्म-कर्तव्य-इसके बाद अर्थ-पुरुषार्थ-तब कहीं काम-सो भी मोक्ष से तनिक ही पूर्व शीघ्र छुटकारे के लिए ही आता है। सूर्य चंद्र पर ग्रहण लगता तो है, पर उसका मोक्ष काल भी जल्दी ही आ जाता है। यही है तथ्यपूर्ण काम मर्यादा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

माना कि पशु-प्रवृत्तियाँ भी मनुष्य के भीतर हैं, पर इसका अर्थ यह तो नहीं है कि उन्हें खुलकर खेलने के लिए छुट्टल कर दिया जाए। उनका उदात्तीकरण ही तो 'संस्कृति' है। बालों को काट-छाँटकर साज-सँभाल कर ही तो उन्हें सुंदर बनाया जाता है। यदि उन्हें मूल रूप में ही बढ़ने दिया जाए तो फिर मनुष्य की शकल आदम मानव जैसी कुरूप बन जायेगी। बगीचे की कटाई, छटाई, खुदाई, निराई न की जाए तो वह झाड़-झंखाड़ के रूप में कुरूप बना खड़ा होगा। पशु प्रवृत्तियों का उदात्तीकरण ही तो 'कला' है। कलारहित को सींग, पूँछ-रहित पशु कहा गया है। 'काम' को भारतीय दर्शन में भी उसके मूल स्वरूप में स्वीकार किया गया है और उसका सम्मान भी किया गया है। उसे 'पाप' नहीं माना गया, वरन् हर्षोल्लास, विनोद, कौतुक के भावांदोलन का लाभ लेकर उसे श्रद्धासिक्त अध्यात्म की दिशा में उन्मुख कर दिया गया है। शिव लिंग की प्रतिमाएँ देव मंदिरों में पूजी जाती हैं, यह नर-नारी की जननेंद्रियाँ ही हैं। उन्हें सृष्टि बीज चेतना केंद्र के रूप में श्रद्धासिक्त दृष्टि से देखा जाता है और अर्चना-अभ्यर्थना के उच्च स्तर पर उन्हें बिठाकर वंदन-अभिनंदन किया जाता है। उच्छृंखल उन्माद के लिए कोमल भावनाओं के रूप में उन्हें मृदुल रस धारा बनाकर जीवन की मरुभूमि में प्रवाहित करना ही ललित कलाओं का उद्देश्य है। शिव द्वारा काम दहन के पौराणिक कथानक ने स्थूल काम सेवन को विक्षोभकारी, असंतुलित, उत्पादन का अधिकारी ठहराकर विवेक के तृतीय नेत्र से उसे भस्म कराया है। साथ ही उसे अशरीरी बनकर अजर-अमर रहने का वरदान भी मिला है और उसे देवताओं की पंक्ति में बिठाया गया है। यही है काम संबंधी परिष्कृत दृष्टिकोण।

लेकिन फ्रायड ने काम-प्रवृत्ति को उपभोग-क्रीड़ा की दिशा में ही सरल रखना उचित बताया। उनका कहना था कि काम-प्रवृत्ति की प्रेरणा है और वह बच्चों में जन्म के साथ ही विद्यमान रहती है। इसी प्रवृत्ति के कारण बच्चे अपने माता-पिता की ओर आकर्षित होते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अबोध बालकों में इस तरह का यौन आकर्षण होना अयुक्तिपूर्ण ही नहीं, बहुत हास्यास्पद बात भी है। भारतवर्ष में मृत्यु पर्यंत माता के प्रति लोगों में इतनी पवित्रता होती है कि ऐसे गंदे और फूहड़ विचार मस्तिष्क में आते तक नहीं। माता-पिता के प्रति दुर्भाव आना सहज वृत्ति रही होती तो श्रवणकुमार अपने माता-पिता को कंधों पर चढ़ाये हुए न घूमता। राम दशरथ की बात ठुकरा देते और अयोध्या में गृह-युद्ध की स्थिति पैदा कर देते। दुर्योधन जैसा अत्याचारी शासक भी अपने माता-पिता का उतना ही भक्त था, जितना किसी आदर्श संतान को होना चाहिए। भरतकुमार के लिए तो वन में कोई अवरोध नहीं था, पर उसने अपनी माँ की उपासना देवताओं की तरह की।

फ्रायड के इस थोथे सिद्धांत की वास्तविकता प्रकट करते हुए, श्री इलाचंद जोशी लिखते हैं—"फ्रायड अपनी सुंदरी माता आमेलिया फ्रायड का पहला पुत्र था। आमेलिया के पति याकोब फ्रायड ने यह दूसरा विवाह किया था। जब फ्रायड का जन्म हुआ था, तब आमेलिया की आयु कुल २१ वर्ष की थी, प्रथम संतान के प्रति माँ का भी अत्यधिक स्नेह और लाड़-प्यार होता है, फ्रायड जन्मजात प्रतिभाशाली और तीव्र अनुभूतिशील बालक था। आश्चर्य नहीं कि इस प्रीकोशस बालक के मन में सचेत ही रूप में अपनी स्नेहशीला और सुंदरी माता के प्रति बहुत छोटी अवस्था में ही तीव्र यौनाकांक्षा जाग उठी हो। फ्रायड कुतूहली और ईर्ष्यालु स्वभाव का भी था। पिता उसे कई बार डाँटता भी था, इसलिए पिता के प्रति दुर्भाव हो जाना स्वाभाविक हो सकता है।"

अपने जीवन की इसी संस्कारजन्य कमजोरी को लगता है, फ्रायड ने एक सर्व साधारण सिद्धांत मान लिया और उसे ही सत्य सिद्ध करने में जीवन भर लगा रहा। मनुष्य जीवन की साधारण गति अधोमुखी होती ही है, सो उसे समर्थक भी मिलते ही गये और देखते-देखते फ्रायड के सेक्स ने सारे पाश्चात्य समाज को अपनी कुंडली में बाँध लिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

● प्रवृत्तियाँ और भी हैं

किंतु ऐसा नहीं समझा जाना चाहिए कि मनोविज्ञान के कर्ता-धर्ता केवल फ्रायड ही हैं। उन्हीं की तरह दूसरे अन्वेषक भी हुए हैं और वे भी शोध कार्य में इस क्षेत्र के अग्रणी समझे जाते हैं। उन्होंने मूल प्रवृत्तियों की व्याख्या की है, उसमें कामुकता को नहीं, अन्य प्रवृत्तियों को प्रमुख माना है। उनकी खोज में कामुकता एक प्रवृत्ति तो है, पर उसका स्थान बहुत ही हलका एवं गौण है। इसे बदलने, सुधारने में उनके कथनानुसार कोई बड़ी कठिनाई नहीं होनी चाहिए। सामाजिक एवं नैतिक आवश्यकता के अनुरूप यदि उस पर एक सीमा तक प्रतिबंध लगाया जाए, तो उससे किसी बड़ी हानि की आशंका नहीं है।

मनोविज्ञानियों के विश्लेषणों में प्रधान मूल-प्रवृत्तियों के संबंध में भारी मतभेद है। उदाहरणार्थ, हॉब्स ने मूल-प्रवृत्तियों के अनुसार मनुष्य को निर्दयी तथा स्वार्थी माना है। एडम स्मिथ ने अपने ग्रंथ, "सिंपथेटिक बेसिस ऑफ ह्यूमन एक्टिवटीज" में "सहानुभूति" को मूल प्रवृत्ति एवं मनुष्यों का पारस्परिक व्यवहार का प्रधान आधार माना है। ट्रोटर ने अपने ग्रंथ—"इन्स्टिन्क्ट्स ऑफ दि हर्ड इन पीस एंड वार" में मनुष्य को सामाजिकता एवं सामूहिकता की प्रवृत्तियों से ओत-प्रोत सिद्ध किया है।

डॉ० पेमाख मूल प्रवृत्तियों के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, पर वे कहते हैं कि उत्तेजना मिलने पर ही वे जाग्रत् होती हैं, यदि उन्हें छेड़ा न जाए तो उनका क्वचित् प्रभाव ही दृष्टिगोचर होगा। वह भी इतना हल्का होगा कि उसे थोड़े प्रयत्न से मोड़ा-मरोड़ा जा सके।

"जिन्सवर्ग" यह मानते हैं कि मूल-प्रवृत्तियाँ मनुष्य की अभिरुचि को अपनी दिशा में आकर्षित तो करती हैं, पर वे इतनी प्रबल नहीं होतीं कि रोकने-मुड़ने पर कोई विग्रह खड़ा कर दें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मैक्डूगल ने अपने ग्रंथ "आउट लाइन ऑफ साइकोलॉजी" में इस तथ्य को और भी अधिक स्पष्ट किया है कि मूल-प्रवृत्तियों में ज्ञानात्मक, क्रियात्मक और रागात्मक तीनों प्रकार की मानसिक क्रियाएँ जुड़ी हुई हैं। फिर भी वे शरीर-मस्तिष्क को चलाने वाली स्वसंचालित सहज क्रियाओं जैसी नहीं। रक्ताभिसरण, श्वास-प्रश्वास, आकुंचन-प्रकुंचन जैसा अपरिहार्य उनका वेग नहीं है, वे परिवर्तनशील हैं और सुधारी जा सकती हैं। शहद की मक्खी में छत्ता बनाने की जो प्रवृत्ति है, वह सहज क्रिया है, पर कुत्ते की मूल प्रवृत्ति जहाँ भी आहार मिले, वहाँ से झपट लेने की आदत बदली जा सकती है। उसे लिखा-पढ़ाकर शिष्ट बनाया जा सकता है और रोटी पाने के लिए उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करने के लिए अभ्यस्त किया जा सकता है।

मनोविज्ञानी जेम्स के अनुसार ६ प्रकार की मूल-प्रवृत्तियाँ मनुष्यों में पाई जाती हैं, पर यह आवश्यक नहीं कि हर किसी में वे समान रूप से उभरी हुई हों। किसी में इनमें से किसी का संवेग तीव्र हो सकता है और किसी में उसका स्तर इतना क्षीण हो सकता है कि उनके अस्तित्व की संभावना ही संदिग्ध प्रतीत होने लगे। जेम्स इन्हें छह की संख्या में गिनते हैं—(१) सार्वभौमिकता-यूनिवर्सिलिटी (२) जन्मजात-इनेट (३) संशोधन क्षमता-एडाप्टेबिलिटी (४) प्रयोजन-परपज (५) प्राथमिक पूर्णता-परफेक्शन फर्स्ट परफॉरमेंस (६) संपूर्ण मानसिक क्रिया-कंपलीट मेंटल एक्शन।

थार्न डाइक का कथन है कि—मनुष्य की मूल-प्रवृत्तियाँ एक सौ तक गिनी जा सकती हैं, जिनमें से चालीस तो ऐसी हैं जिनका अस्तित्व न्यूनाधिक मात्रा में प्राय: हर किसी में देखा जा सकता है। डॉ० बर्नार्ड ने अने "ए स्टडी ऑफ सोशल साइकोलॉजी" ग्रंथ में लगभग उतनी ही संख्या में मूल-प्रवृत्तियों की गणना की है, जितनी कि थार्न डाइक बताते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'ड्रेवर' ने अपने ग्रंथ 'इन्स्टिन्क्ट इन मैन' में वासनात्मक और प्रतिक्रियात्मक दो वर्गों में मूल-प्रवृत्तियों का विभक्तीकरण किया है। किल पेट्रिक ने—(१) आत्म रक्षा की प्रवृत्ति—सेल्फ प्रिजर्वेटिव इन्स्टिंक्ट (२) संतानोत्पत्ति की प्रवृत्ति—रिप्रोडक्टिव इन्स्टिंक्ट (३) सामूहिक जीवन की प्रवृत्ति—ग्रेगेरियस इन्स्टिंक्ट (४) परिस्थितियों के अनुकूल जीवन चलाने की प्रवृत्ति—एडाप्टिव इन्स्टिंक्ट (५) आदर्श पालन की प्रवृत्ति—रेगुलेटिव इन्स्टिंक्ट को ही प्रधान माना है। शेष को या तो प्रवृत्तियों में गिनते ही नहीं या फिर उन्हें वे तुच्छ-उपेक्षणीय कहते हैं।

वुडवर्थ ने उनका विभाजन नौ श्रेणियों में किया है—(१) आंगिक आवश्यकता (२) काम प्रेरणा (३) पलायन प्रेरणा (४) लड़ना (५) अनुसंधान (६) सामाजिक चेतना (८) संस्थापन (६) विनीतता।

मैक्डूगल के ग्रंथ 'सोशल साइकोलॉजी एंड आउट लाइन आफ साइकोलॉजी' में मूल-प्रवृत्तियों की संख्या तेरह बताई गई है—(१) पलायन—एस्केप (२) युयुत्सा—कंबैट या पॅग्नैसिटी (३) निवृत्ति—रिपल्सन (४) संवदेना—अपील (५) भोग—मैटिंग आर सेक्स (६) जिज्ञासा—क्यूरियोसिटी (७) दैन्य—सबमिशन (८) आत्म गौरव—सेल्फ एसर्शन (६) सहजीवन—ग्रेगेरियसनेस (१०) आहारान्वेषण—फूडसीकिंग (११) संचय—एक्विजिसन (१२) विधायकता—कान्स्ट्रक्टिवनेस (१३) हास—लाफ्टर।

मनःशास्त्री वेब्लोनस्की का कथन है कि मनुष्य की मूल प्रवृत्तियाँ इतनी अधिक हैं, जितना अनंत आकाश, उन्हें गणना की सीमा से परे सार्वभौम कहना चाहिए। सार्वभौमिकता—भूख-प्यास, निद्रा, जैसी उन प्रवृत्तियों को कहते हैं, जो समस्त विश्व के मनुष्यों में एक समान पाई जाती हैं। 'जन्मजात'—वे हैं, जो बच्चों में जन्मते ही साथ आती हैं—दूध चूसना, अंग-संचालन आदि। 'समयोजन की क्षमता' का तात्पर्य है—परिस्थितियों के अनुरूप उपाय खोजना और अपने को ढालना, 'प्रयोजन' किसी सामयिक आवश्यकता की पूर्ति के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिए सहज बुद्धि से तत्पर हो जाना। संपूर्ण मानसिक क्रिया का स्वरूप है, विपत्ति सामने आते ही उसका सामना करने के लिए हर अंग का क्रियाशील हो जाना। शेर सामने आते ही मुँह से चिल्लाने, हाथों से पत्थर उठाने, पैरों से भागने जैसे बहुमुखी क्रियाकलाप का एक साथ तत्काल आरंभ हो जाना।' जिज्ञासा, संग्रहशीलता, अहमन्यता का प्रदर्शन, दूसरों की तुलना में श्रेष्ठ सिद्ध होने की इच्छा जैसी अनेकों अन्य प्रवृत्तियाँ भी ऐसी हैं, जो न्यूनाधिक मात्रा में हर मनुष्य के अंदर विद्यमान रहती हैं।

मनःशास्त्रियों के अन्यान्य प्रतिपादनों को देखते हुए फ्रायड के काम स्वेच्छाचार का प्रतिपादन बहुत ही बचकाना और एकांगी प्रतीत होता है। खेद इसी बात का है कि ऐसे अधूरे और अवांछनीय निष्कर्षों को अग्रिम पंक्ति में बिठाने की ऐसी भूल की जा रही है, जिसका परिणाम मानव समाज का भविष्य अंधकारमय ही बना सकता है।

'रेतस्' को ऊर्ध्वगामी बनाकर जो उल्लास, शक्ति, प्रसन्नता, प्रमोद और आनंद मिलता है, योग-शास्त्रों में उसकी बड़ी प्रशंसा की गई है और उसे अनवरत काममुख से भी बढ़कर बताया गया है। यौनाकर्षण तो क्षणिक सुख की प्रेरणा देता है, इस प्रकार की तृप्ति से आंशिक सुख भले ही मिल जाता हो, पर बाद में शरीर और आत्मा की दुर्गति ही होती है। मनुष्य के विचार और क्रिया-कलाप सब निम्नगामी होते चले जाते हैं, व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में वह विद्रूप और उपद्रव उठ खड़े हो जाते हैं, जिनकी चर्चा इतिहास पुराणों में मिलती है।

महाराजा ययाति वैसे तो बड़े ही विद्वान् और ज्ञानवान् राजा थे; किंतु दुर्भाग्यवश उन्हें वासनाओं का रोग लग गया और वे उनकी तृप्ति में निमग्न हो गये। स्वाभाविक था कि ज्यों-ज्यों वे इस अग्नि में आहुति देते गये, त्यों-त्यों वह और भी प्रचंड होती गई और शीघ्र ही वह समय आ गया, जब उनका शरीर खोखला और शक्तियाँ बूढ़ी हो गईं। सारे सुकृत खोये, बेटे के प्रति अत्याचारी प्रसिद्ध हुए, परमार्थ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का अवसर खोया और मृत्यु के बाद युग-युग के लिए गिरगिट की योनि पाई, किंतु वासना की पूर्ति न हो सकी। पांडु जैसे बुद्धिमान् राजा पीलिया रोग के साथ वासना के कारण ही अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए। शांतनु जैसे राजा ने बुढ़ापे में वासना के वशीभूत होकर अपने देवव्रत भीष्म जैसे महान् पुत्र को गृहस्थ सुख से वंचित कर दिया। विश्वामित्र जैसे तपस्वी और इंद्र जैसे देवता वासना के कारण ही व्यभिचारी और तप-भ्रष्ट होने के पातकी बने। वासना का विष निःसंदेह बड़ा भयंकर होता है, जिसके शरीर का शोषण पाता है, उसका लोक-परलोक पराकाष्ठा तक बिगाड़ देता है। इस विष से बचे रहने में ही मनुष्य का मंगल है।

● लाभ नहीं, हानि ही हानि

कुछ भौतिकवादी मानसिक उपचारकों का विचार है कि काम-प्रवृत्ति मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति होने से, उसके प्रकाशन और तृप्ति की प्रक्रिया में तब तक रोक नहीं लगाई जानी चाहिए, जब तक कि उससे समाज के किसी अन्य घटक को कोई क्षति या पीड़ा न पहुँच रही हो। उनकी मान्यता है कि कामोत्तेजना का दमन स्नायविक तनाव का कारण बनता है और इससे विभिन्न शारीरिक-मानसिक रोगों की उत्पत्ति होती है।

इस संदर्भ में अनेक ऐसे लोगों का परीक्षण किया गया जो कि बुद्धि और हृदय से काम-वासना संबंधी उपरोक्त मत को ही सत्य मानते थे और स्वयं डॉक्टर थे तथा शरीर की भली-भाँति जानकारी रखते थे। पाया यह गया कि उच्छृंखल काम सेवन या 'काम-चिंतन' से इन लोगों को भी शारीरिक थकावट, निराशा, चिंता वृद्धि, शंकालुता के अकारण उदय आदि से ग्रस्त-त्रस्त होना पड़ा। अधिक समय तक इसी में लगे रहने वाले ऐसे डॉक्टरों को भी औरों की तरह 'न्यूरेस्थेनिया' का रोग हो गया। "साइकोलॉजी एंड मोरल्स" नामक पुस्तक में मनोविज्ञानवेत्ता प्रोफेसर हेडफील्ड

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ने लिखा है कि स्वच्छंद यौनाचरण का परामर्श देना, व्यक्ति को विनाश के मार्ग में ले जाने की विधि है।

तब क्या यह सही नहीं है कि काम-वासना का दमन रोगों को जन्म देता है ? वस्तुतः सही यह है कि जब किसी तरह के भय के कारण काम-वासना दमित की जाती है, तो वह मात्र चेतन मन में दमित होती है। अचेतन मन में उसकी आग धधकती ही रहती है और वह काम-कुटेवों तथा शारीरिक-मानसिक विकृतियों के रूप में फूटती है।

एक ओर, काम-क्रीड़ा के प्रति जब व्यक्ति-मन में प्रबल पाप-भावना घर कर लेती है और दूसरी ओर अचेतन मन के प्रशिक्षण की विधियाँ जाने बिना मन की स्वाभाविक कामोत्तेजनाएँ बार-बार उभरकर उद्विग्न-उद्वेलित करती रहती हैं, तो एक प्रचंड संघर्ष का जन्म स्वाभाविक है। इस संघर्ष के बावजूद अनियंत्रित-अप्रशिक्षित मन में कामोद्वेग तो उठेगा ही, इससे आत्मग्लानि की भावना उत्पन्न होने लगती है। साथ ही दमन की अस्वाभाविक आकांक्षा दुराग्रही और हठी बनती जाती है। यह अपने को ही अपना शत्रु मान बैठने की स्थिति होती है। परिणाम स्पष्ट है—क्षति स्वयं की ही होती है। दमित भावना अचेतन मन में चली जाती है और असामान्य क्रम में होने वाले स्वप्नदोषों से लेकर विभिन्न यौन-रोगों तथा शारीरिक-मानसिक विकृतियों का कारण बनती है।

काम को मनुष्य की मूल-प्रवृत्तियों में से एक मान लेना एक हास्यास्पद भ्रांति ही है। युंग ने फ्रायड की इस स्थापना पर कि मानवीय इच्छाएँ, चेष्टाएँ प्रधानतया काम वासना से प्रेरित-निर्देशित हैं, अपनी टिप्पणी यह की थी कि—"फ्रायड का यह कथन, अंतःकरण और व्यवहार के बीच की एक धुँधली-सी परत की चर्चा भर है। यह मन की वास्तविक स्थिति नहीं, उसकी काली-कुरूप छाया मात्र है। मन में अनेक लहरें उठती रहती हैं। क्रिया-प्रतिक्रिया की इन्हीं तरंगों में से एक कामवासना की तरंग भी है। उसे चेतना की मूल प्रेरणा मानना भ्रांति ही है।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मनोविज्ञान में किसी व्यक्ति की ही स्थापना को प्रमुखता देने वाले व्यक्तियों के भी मन का विश्लेषण अनिवार्य है। आज मनोविज्ञान बहुत आगे बढ़ा है; फिर भी अपनी आंतरिक कुरूपता-दुर्बलता को गरिमा मंडित करने की निर्लज्ज चेष्टा में निरत लोग फ्रायड की उक्त स्थापना की ही दुहाई दिए चले जाते हैं, जबकि स्वयं फ्रायड ने जीवन के अंतिम दिनों में अपनी कई मान्यताओं का परिशोधन परिमार्जन किया था। हॉब्स, एडम स्मिथ, मैक्डूगल, जेम्स, किल पेट्रिक, ड्रेवर, थानेडाइक, वुडवर्थ आदि ने मूल-प्रवृत्तियों का भिन्न-भिन्न रीति से विभाजन किया है। बेब्लोनस्की का कथन है कि—"मनुष्य की मूल-प्रवृत्तियाँ अनंत आकाश के समान गणनातीत हैं।"

'जीन्सवर्ग' ने कहा है कि—"मूल-प्रवृत्तियाँ मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित तो करती हैं, किंतु वे ऐसी प्रचंड कदापि नहीं होतीं कि रोकने-मोड़ने पर कोई अनर्थमूलक विग्रह खड़ा कर दें।"

अपनी पुस्तक "साइकोलॉजी एंड साइकोथेरेपी" में डॉ० विलियम ब्राउन ने कहा है—"रियलिटी" समय से परे है। वह समय से बाहर नहीं, समयातीत है। 'रियलिटी' की यह कालातीत होने की विशेषता ही हमें वह 'स्वतंत्रता' देती है, जिसके कारण हम अपनी मूल-प्रवृत्तियों को नियंत्रित कर सकते हैं। भौतिक विज्ञान की शब्दावली से मूल-प्रवृत्तियों के नियंत्रण की बात समझ में ही नहीं आ सकती। जहाँ तक भौतिक विज्ञान की वर्तमान पहुँच है, वहाँ तक 'डिटर्मिनिज्म' बिल्कुल सही है। उसके अनुसार मूल-प्रवृत्ति का प्रकाशन अनिवार्य है। इसमें अन्यथा हम कुछ नहीं कर सकते। लेकिन मात्र नियंत्रक नहीं, प्रेरक-निर्देशक भी हैं। उनके बिना जीवन में किसी भी क्षेत्र में सार्थक क्रियाशीलता ही संभव न हो सकेगी। उसे परिष्कृत किया जाना चाहिए। उल्लास के रूप में परिणत करने के कितने ही सौम्य प्रयोजन हैं, जो हमें हास-विलास, विनोद, क्रीड़ा-कौतुक के रूप में न केवल आनंद देते हैं, वरन् उत्साह, साहस और कौशल की वृद्धि भी करते हैं। काम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भावना को इसी दिशा में परिष्कृत किया जा सके तो वह न तो विनाशकारी बनेगी और न अनैतिक रहेगी। उसे जीवन को उत्कृष्ट और आनंदित बनाने के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण रीति से मोड़ा जाय तो वह हर दृष्टि से लाभदायक सिद्ध होगा।

'रियलिटी' दिक्कालातीत है और स्वरूपत: आध्यात्मिक (या चेतनात्मक-स्प्रिचुअल) है। हम इसी ब्रह्मांड-व्यापी चेतना के अंश हैं और इसी रूप में हम स्वतंत्र हैं, मनुष्य की इच्छा शक्ति स्वतंत्र है, पर कैसे स्वतंत्र है ? यह निरी भौतिक-विज्ञानी विधियों तथा शब्दावलियों द्वारा हम न समझ सके हैं, न कभी समझ सकेंगे।

काम-कुटेवों समेत समस्त स्वेच्छाचारिता की प्रेरणा अचेतन मन से होती है। अचेतन मन पर अधिकार पाने के लिए इच्छा-शक्ति की महत्ता तथा स्वरूप को समझना आवश्यक होता है। हमारी सचेत इच्छा-शक्ति हमारे चेतन-मन की ही उत्पत्ति है। अचेतन मन का विस्तार इससे बहुत अधिक है।

स्नेह-प्रेम के अभाव तथा जीवन में विफलता के गहरे बोध से व्यक्ति की जीवनी-शक्ति का प्रवाह सहज नहीं रह जाता और वह विकृत रूपों में व्यक्त होता है। यह विकृति चेतन मन के समक्ष जब पहली बार आती है, तो व्यक्ति की नैतिक मान्यता उसे सहन नहीं कर पाती और उसे ग्लानि होती है। यह ग्लानि संकल्प से जुड़ने पर सृजनात्मक हो सकती है। दिशा-निर्देश के अभाव में यह आत्मविश्वासहीनता को जन्म देती और इच्छाशक्ति को क्षीण करती है। क्षीण इच्छाशक्ति से विकृतियाँ रुकती नहीं, बढ़ती ही जाती हैं।

कामवेग जन्य विकृतियों से बचने के लिए एक उपाय यह भी सुझाया जाता है कि नैतिक मान्यताएँ ही इसके स्वच्छंद प्रकाशन को अनुचित ठहरातीं तथा ग्लानि उत्पन्न करती हैं, अत: उन्हें ही ध्वस्त कर दिया जाए, किंतु नैतिक मान्यताएँ इतनी मामूली वस्तु नहीं। वे हमारी प्रगतिशीलता का आधार हैं। वे विवेकपूर्ण हों, तभी नैतिक मानी जाएँगी और विवेक से उत्पन्न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नैतिक मान्यताओं की अस्वीकृति का अर्थ है—विवेक की अस्वीकृति। विवेक के बिना व्यक्ति विचित्र गतिविधियों का पिटारा मात्र बनकर रह जायेगा। उसे किसी भी कार्य में न तो बौद्धिक आस्वाद प्राप्त होगा, न ही हार्दिक उल्लास। तब जीवन में आनंद की भी स्पष्ट अनुभूति न हो सकेगी।

नैतिक मान्यताओं का क्षेत्र अध्यात्म का क्षेत्र है। धर्म से अविरुद्ध काम को गीता में भगवान् ने अपना स्वरूप बताया है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार फलों में एक काम भी है। अस्तु, उसे घृणित नहीं कहा जा सकता। इस बात की भी आवश्यकता नहीं कि उसे निरंतर धिक्कारने और दबाने में ही लगा रहा जाए। विवेक का नियंत्रण भर रखने से काम चलाऊ हल निकल आता है और उच्छृंखलता की सीमा तक बढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती किंतु इस महाशक्ति को निरर्थक भी क्यों जाने दिया जाए ? यौन भावना को नियंत्रित किया जाए। यौन-शक्ति का श्रेष्ठतम उपयोग तो उसे सृजनात्मक दिशा देना ही है। दीपक का तेल बाती से होता हुआ उसके सिरे पर पहुँचकर प्रकाश उत्पन्न करता है। यदि दीपक की पेंदी में छेद हो, तेल की दिशा अधोमुखी हो तो, न दिया जलेगा न तेल बचेगा। यौन-शक्ति को ऊर्ध्वगामी बनाना प्रयत्न और अभ्यास साध्य है। कालिदास ने प्रयत्न और अभ्यास से इसे सिद्ध कर जड़ बुद्धि से महाकवि बनने में सफलता प्राप्त की। पत्नी को एक क्षण के लिए छोड़ने को तैयार नहीं—तुलसी ने जब यह दिशा पकड़ी, तो वे कामुक और लंपट पुरुष से रामचरितमानस जैसे ग्रंथ के प्रणेता और संत महापुरुष बन गये। गृहस्थ होते हुए भी यौन भावना को परिमार्जित और सृजनात्मक दिशा देकर बोलते समय काँपने वाले मोहनदास, अपनी आवाज से करोड़ों लोगों में प्राण फूँकने वाले महात्मा गांधी हो गये। यौन-भावना को ऊर्ध्वमुखी बनाकर संसार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त करने वाली ज्ञात-अज्ञात विभूतियों का विवरण इकट्ठा किया जाए तो उनकी संख्या हजारों में नहीं लाखों में हो सकती है। यदि इतना एकदम संभव न हो सके तो कम से कम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसे नियंत्रित तो किया ही जा सकता है। सफलता का मतलब यश, कीर्ति ही नहीं है।

नैपोलियन २५ वर्ष की आयु तक काम-सुख तो क्या, नारी के प्रति भी आकृष्ट नहीं हुआ था। न्यूटन के मस्तिष्क में यौनाकर्षण उठा होता तो उसने अपना बुद्धि-कौशल सृष्टि के रहस्य जानने की अपेक्षा अपरिमित काम-सुख प्राप्त करने में झोंक दिया होता। भीष्म और हनुमान् प्रतिज्ञाबद्ध हो सकते हैं, पर न्यूटन के सामने तो वैसी कठिनाई थी ही नहीं। जन्मजात प्रतिभाएँ अधोमुखी ही नहीं, ऊर्ध्वमुखी भी होती रही हैं और उनसे काम-सुख की अपेक्षा अधिक सुख लोगों को मिलता रहा है। हमारे देश में तो सच्चे और शाश्वत सुख की प्राप्ति में काम-वासना को प्रधान बाधा माना गया है। रामकृष्ण परमहंस विवाहित होकर भी योगियों की तरह रहे, वे सदैव आनंद विह्वल रहते थे। स्वामी रामतीर्थ और भगवान् बुद्ध ने तो ऊर्ध्व सुख के लिए तरुणी पत्नियों का परित्याग तक कर दिया था। महर्षि दयानंद ब्रह्मचारी होकर जिये। महात्मा गांधी ने ३६ वर्ष की अवस्था के बाद काम-वासना को बिल्कुल नियंत्रित कर दिया था, तो भी उनके जीवन से प्रसन्नता का फब्बारा छूटता रहता था, फिर क्या 'काम-सुख को प्रधान जीवन सुख और लक्ष्य' की मान्यता दी जा सकती है।

● फ्रायड के सेक्स का प्रतिवाद

लिसैस्टर विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान के प्राध्यापक श्री डैविड राइट ने अनेक बंदी-शिविरों, फौजी संस्थानों, खेल-कूद और पर्वतारोहण जैसी सामाजिक-सामुदायिक और राष्ट्रीय संधि के कार्यों में भाग लेने वालों के जीवन का विस्तृत अध्ययन करने के बाद पाया कि उनमें से अधिकांश सामान्य परिस्थितियों में ही संभोग का आनंद लेते रहे। उन्हें अपने अभियान अथवा उसके बाद विषय-भोग की कभी भी इच्छा नहीं होती, जब तक कि वे या तो स्वयं भूतकालीन संभोग का स्मरण नहीं करते या उनके सामने इस तरह की चर्चा के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विषय नहीं आते। यदि वे इच्छा न करें अथवा उनके सामने कामुकता भड़काने वाली प्रवृत्तियाँ न आएँ तो काम-वासना के लिए कभी परेशान नहीं होंगे, वरन् उनमें मनो-विनोद और आह्लाद के स्वभाव का विकास ही होने लगता है।

श्री डैविड राइट ने द्वितीय महायुद्ध के दौरान बंदी बनाये गये जापानियों, साइबेरिया शिविर में बंदी लोगों तथा अस्पतालों के उन लोगों से जाकर भेंट की, जो लंबे समय से किसी बीमारी से आक्रांत पड़े थे। उनसे बात-चीत करते समय उन्होंने पाया कि "उनमें कामवासना की कोई इच्छा नहीं रह गई थी, तो भी वे न तो अशांत थे—न उद्विग्न, वरन् उनके अंतःकरण से एक प्रकार की शांति और आत्म-विश्वास की झलक देखने को मिलती थी। यह आत्म-विश्वास अच्छे अर्थों में था—कि यदि इन परिस्थितियों से मुक्ति मिले तो अमुक-अमुक अच्छे काम करें।"

श्री डैविड राइट के इस कथन की और भी पुष्टि वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा मिल जाती है और इस तरह फ्रायड के सिद्धांत का लगभग अंत ही हो जाता है। आने वाले समय में लोग फ्रायड के सिद्धांत को तूल देकर अपना न तो मस्तिष्क खराब करेंगे और न शरीर की शक्तियाँ बरबाद करेंगे, वरन् शक्तियों के संचय से जीवन की अनेक ऐसी धाराओं का विकास करने में समर्थ होंगे, जिनका डॉ० डैविड राइट ने अपने शोध-पर्यवेक्षण से यह निष्कर्ष भी निकाला है कि काम वासना मनुष्य की स्वाभाविक एवं जन्मजात प्रवृत्ति नहीं है, वरन् वह सामाजिक जीवन के प्रचलन द्वारा आरोपित है, उन्होंने पशुओं पर किये गये अपने परीक्षणों से सिद्ध किया है कि काम सेवन के अभाव में कोई जंतु हिंसक या समाज विरोधी नहीं बनता, वरन् वह अपेक्षाकृत अधिक सौम्य हो जाता है। बंध्य बनाये गये बैल, भैंसे, घोड़े, बकरे, गधे आदि उन्मुक्त काम सेवन करने वाले अपने सजातियों की तुलना में अधिक शांत प्रकृति के होते हैं, जबकि फ्रायड का कहना यह है कि यदि मनुष्य को काम सेवन की छूट न मिले तो वह समाज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विरोधी बन जायेगा। यह बात उन्हीं लोगों के लिए सही हो सकती है, जो उच्छृंखल वातावरण में रह रहे हैं। साधु प्रकृति के संयमी, सदाचारी और ब्रह्मचारी काम सेवन का अवसर न रहने पर भी न तो हिंस्त्र बनते हैं और न समाज विरोधी।

श्री राइट ने अनेकों उदाहरणों से यह सिद्धांत प्रतिपादित किया है कि यदि कामुकतापूर्ण वातावरण एवं चिंतन से दूर रहा जाए, तो वह प्रवृत्ति स्वयमेव शिथिल या समाप्त हो जाती है। द्वितीय महायुद्ध में पकड़े गये बंदी सैनिकों तथा साइबेरिया के श्रम-शिविरों में बंद लोगों का पर्यवेक्षण करने पर निष्कर्ष निकला है कि उनकी न केवल रति क्षमता वरन् वह इच्छा भी घट गई अथवा समाप्त हो गई। इसी प्रकार उन्होंने किन्हीं महत्त्वपूर्ण कार्यों में मनोयोगपूर्वक लगे हुए व्यक्तियों के उदाहरण देते हुए बताया है कि उन्हें अपने चिंतन की व्यस्तता में काम सेवन की न तो इच्छा होती है और न आवश्यकता प्रतीत होती है। सेनानायक, नाविक, पर्वतारोही, वैज्ञानिक, शोधकर्ता, अध्ययन परायण व्यक्तियों की कामेच्छा बहुत स्वल्प होती है और वह भी तब तक जाग्रत् नहीं होती, जब तक कि वातावरण, संवाद अथवा स्वचिंतन से ही उस तरह की अतिरिक्त उत्तेजना न मिले।

भारत के नैतिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य संगठन दिल्ली के एक शोध अध्ययन से पता चला है कि काम सेवन की न्यूनता से नहीं, वरन् उसकी अति से पारिवारिक कलह उत्पन्न होते हैं। इस दिशा में अधिक आतुर, उत्सुक रहने वाले न केवल शारीरिक दुर्बलताग्रस्त होते हैं, वरन् मानसिक संतुलन खोकर चिड़चिड़े भी हो जाते हैं और उस अति को अपने ऊपर अत्याचार मानकर विरोध-विद्रोह भी करते हैं। पारिवारिक कलह एवं मनोमालिन्य की घटनाओं में इस विग्रह का बहुत बड़ा हाथ पाया गया है। जो लोग मर्यादाओं में रहते हैं उन्हें एक-दूसरे से शिकायत होना तो दूर उल्टे विश्वास, सम्मान, संतोष और सहयोग की मात्रा बढ़ी-चढ़ी रहती है।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संयम अर्थात् शक्ति अर्थात् समर्थता

पृथ्वी पर प्रकृति की विकास व विनाश लीलाओं का क्रम अनवरत रूप से चलता रहता है। पृथ्वी अपने इर्द-गिर्द वायुमंडल का एक कवच पहने हुए है। उसके तीन आवरण हैं। प्रत्येक से पृथ्वी को, इसके प्राणियों को तथा पदार्थों को बहुत कुछ मिलता है, किंतु यह भी एक कटु सत्य है कि उसी के कारण अपनी दुनिया को विनाश का कष्ट भी कम नहीं भुगतना पड़ता।

हम सभी मनुष्य वातावरण के अदृश्य सागर के तले निवास करते हैं। प्रायः ९९ प्रतिशत वातावरण का भार ५ अरब टन है और वह सिर्फ ऊपर के ३० मील के क्षेत्र में सिमटा है। इस सघनता का लाभ यह है कि वह अंतरिक्षीय किरणों, उल्कापातों आदि के घातक प्रभावों से पृथ्वी के जीवन की रक्षा करता है। साथ ही प्राणवायु, जल, रसायन आदि देता है। तापमान को नियंत्रित रखता है। इस तरह यह घनीभूत वातावरण अपनी पृथ्वी के लिए, हम सब प्राणियों के लिए, एक रक्षा कवच का काम करता है।

इस वातावरण में तनिक-सी भी उथल-पुथल पृथ्वी तल पर भयंकर चक्रवातों, प्रलयंकर तूफानों और विक्षुब्ध विनाश लीला का कारण बनती है। सागर की विशाल जल राशि भी निरंतर उफनती रहती है, धरती के ऊपर का वातावरण भी सदा धधकता रहता है। अभी तक ऐसा कोई यंत्र नहीं बन पाया है, जो वातावरण की गहराई नाप सके और तथ्यों का सही एवं समग्र पता लग सके। धरती की छाती में तो विशाल ज्वालामुखियों का अविराम हा-हाकार दबा ही रहता है।

भीतर चल रही उथल-पुथल कभी-कभी आकस्मिक विस्फोटों के रूप में अभिव्यक्त होती है। यद्यपि कोई भी विस्फोट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वस्तुतः आकस्मिक नहीं होता। वह एक क्रमिक प्रक्रिया की ही अनिवार्य परिणति होता है।

सृष्टि के आरंभ से ही प्राकृतिक परिवर्तन होते रहे हैं। मानव जाति के इतिहास में ऐसे तीव्र परिवर्तनों से सदा नये मोड़ आते हैं।

इस परिवर्तन के स्वरूप बहुत तरह के होते हैं। सौर-मंडल की गतिविधियों की एक-दूसरे ग्रह पर भी पारस्परिक प्रतिक्रिया होती है व प्रभाव पड़ता है। ज्वालामुखियों के विस्फोट, तूफान, भूकंप, ऊपरी वातावरण, विषमता से उत्पन्न हलचलें अथवा सौर-मंडल की कोई भी असामान्य गतिविधि ऐसे तीव्र परिवर्तनों का कारण बन जाती हैं। अंतरिक्ष में आवारागर्दी करने वाली कुछ उल्काएँ भी अपनी दुस्साहसिकता के कारण स्वयं को तो क्षति पहुँचाती ही हैं, पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों को भी उथल-पुथल से भर देती हैं। इन उद्दंड उल्काओं की आवारागर्दी की गाथाएँ दुनिया भर के पौराणिक साहित्य में रोचक ढंग से वर्णित हैं।

यूनान की पौराणिक गाथाओं में 'इकोरस' नाम के एक युवक की कथा है। यह सूर्य से मिलने की महत्त्वाकांक्षा रख, नकली पंख लगाकर चल पड़ा। पंख उसने मोम से चिपका लिये थे।

अधिक ऊँचे जाने पर उसके पंख को जोड़ने वाली मोम गर्मी के कारण पिघल गई और पंख नीचे गिर पड़े, 'इकोरस' भी औंधे मुँह नीचे समुद्र में आ गिरा तथा मर गया।

पिछले समय इसी युवक की तरह का एक दुस्साहसी उल्का-पिंड भी देखा गया। इसका नाम भी 'इकोरस' ही रखा गया। यह 'इकोरस' उल्का-पिंड कभी सूर्य के अधिक निकट जा पहुँचता इतना कि बस थोड़ा और पास जाए, तो भुर्ता ही बन जाए। कभी लगता, वह बुध से कभी मंगल और कभी शुक्र से अब टकराया तब टकराया। सूर्य के अति निकट पहुँचकर वह आग का गोला ही बन जाता तो कभी सूर्य से इतनी दूर जा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पहुँचता कि जहाँ शीत की अति ही हो जाती। जून १९६८ में इस उद्दंड क्षुद्रग्रह के पृथ्वी के ध्रुव प्रदेश से आ टकराने की संभावना बढ़ गई थी। यदि खगोल शास्त्रियों की यह आशंका सत्य सिद्ध होती, तो पृथ्वी में भीषण हिम तूफान आते, समुद्र उफनकर दुनिया का थल-भाग अपनी चपेट में ले लेता, साथ ही लाखों वर्ग मील भूमि में गहरा गड्ढा हो जाने की संभावना थी। जहाँ यह उफनता समुद्री जल भर जाता तथा कुल मिलाकर करोड़ों मनुष्यों का सफाया हो जाता। सन् १९०८ में मात्र हजार फुट व्यास की एक उल्का साइबेरिया के जंगल में गिरी थी, तो वहाँ अणुबम विस्फोट जैसे दृश्य उपस्थित हो गये थे। इकोरस तो उस उल्का से हजारों गुना बड़ा था, अतः परिणाम का अनुमान किया जा सकता है।

सौभाग्यवश इकोरस पृथ्वी के समीप होकर गुजर गया और एक भीषण दुर्घटना टल गई। सौरमंडल में ऐसे अनेक क्षुद्र ग्रह हिडालगो, इरोस, अलवर्ट, अलिंडा, एयोर, अपोलो, एडोरस, हर्मेस आदि चक्कर काट रहे हैं, जो सहसा टकराकर कभी भी धरती के जीवन में उथल-पुथल मचा सकते हैं।

वैज्ञानिकों ने अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला है कि सूर्य पर जो हर ११वें वर्ष कुछ धब्बे से बन जाते हैं, उनका कारण सौरमंडल के ग्रहों की गतिविधियाँ ही हैं। स्पष्ट है कि सौर-मंडलीय ग्रहों की प्रत्येक गतिविधि का सूर्य पर प्रभाव पड़ता है, जिस तरह सूर्य की हर गतिविधि से सौर-मंडलीय ग्रह प्रभावित होते हैं। सभी ग्रह पश्चिम से पूर्व की ओर—सूर्य की परिक्रमा करते हैं और पृथ्वी की ही भाँति अपनी धुरी पर भी घूमते हैं। इस परिभ्रमण काल में जो अगणित प्रकार की उथल-पुथल होती है, उनसे पृथ्वी सहित सभी ग्रह-उपग्रह प्रभावित होते हैं।

ऐसी उथल-पुथल की स्मृतियाँ मानवीय इतिहास में सुरक्षित हैं। पुराण-कथाओं में इनका रोचक वर्णन मिलता है। मात्र क्षुद्र नक्षत्रों के टकराने अथवा सूर्य या किसी बड़े नक्षत्र में व्यापक परिवर्तन होने, उथल-पुथल मचने से ही धरती में जलप्लावन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आदि की घटनाएँ नहीं घटतीं, बल्कि धरती के भीतर की हलचलें और उसके सिकुड़ने-फैलने की विभिन्न प्रक्रियाएँ भी जल प्रलय आदि के दृश्य उपस्थित करती हैं।

सभी जानते हैं कि कभी भू-मंडल के सभी महाद्वीप एक-दूसरे से जुड़े थे। ग्रहों की हलचलों और आकुंचन-प्रसार की प्रक्रियाओं से वे एक-दूसरे से दूर हटते गये। हिमालय अभी भी लगातार उत्तर की ओर खिसक रहा है और भू-वैज्ञानिकों का कथन है कि ५ करोड़ वर्ष बाद संपूर्ण उत्तरी भारत का अधिकांश इलाका हिमालय के पेट में समा जायेगा। इसी तरह सन् १९६६ में मास्को में संपन्न द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन में प्रो० डॉ० ब्रूस सी० हीजेन और डॉ० नील यू० डाइक ने घोषणा की थी कि, आज से लगभग २ हजार ३२ वर्ष बाद पृथ्वी के चुंबकीय बल क्षेत्र अपना स्थान बदल देंगे, साथ ही पृथ्वी की चुंबकीय शक्ति घटेगी। इससे मनुष्यों का आकार व जीवन भी प्रभावित होगा। वृक्ष-वनस्पति, कीट-पतंग आदि पर भी व्यापक प्रभाव पड़ेगा। प्रशांत महासागर की तलहटी से निकाली गई मिट्टी और रेडियो सक्रियता एवं 'लारिया' नामक एक कोशीय जीव में हो रहे क्रमिक परिवर्तन से पता चलता है कि सन् चार हजार तक चुंबकीय क्षेत्र में परिवर्तन होगा, जिससे ध्रुवों का स्थान भी परिवर्तित होगा। परिणामस्वरूप धरती में खंडप्रलय की स्थिति हो जायेगी। बर्फीले तूफान चारों ओर उठेंगे। धरती में बेहद गर्मी और बेहद ठंडक की स्थितियाँ पैदा होंगी। समुद्रतल भी लगातार ऊपर उठ रहा है। इसका भी परिणाम अवश्यंभावी है। ऐसी ही विशिष्ट प्राकृतिक उथल-पुथल अतीत में भी जल प्रलय जैसी घटनाओं का कारण बनती रही है।

विश्व की अधिकांश प्राचीन सभ्यताओं के साहित्य में जलप्लावन तथा उसके बाद सृष्टि के नवीन क्रम का वर्णन मिलता है, इसे धार्मिक पुट दिया गया है, लेकिन भू-गर्भशास्त्रियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का भी अनुमान है कि समय-समय पर पृथ्वी के विशेष खंड टूट जाते थे और धरती पर जल ही जल हो जाता था।

भू-गर्भ वेत्ता डॉ० ट्रिकलर के अनुसार, हिमालय के आस-पास प्राप्त ध्वंसावशेषों से ज्ञात होता है कि जल प्रलय की घटना सत्य है।

यूनानी साहित्य में भी जलप्लावन की चर्चा है। एक कथा के अनुसार 'अटिका' जलमय हो गई थी। दूसरी कथा के अनुसार 'जीयस' ने अपने पिता की इच्छापूर्ति के लिए 'ड्यूकालियन' का विनाश करना चाहा। जब ड्यूकालियन अपनी पत्नी पैरहा के साथ जल यात्रा कर रहा था। जीयस ने भीषण जल-वृष्टि द्वारा पृथ्वी को डुबा दिया। नौ दिन तक ड्यूकालियन और पैरहा पानी में ही अपनी नाव द्वारा तैरते रहे। जब वे पैरासस पहुँचे, तो जलप्लावन कुछ कम हुआ। तब उन दोनों ने अपने अंग रक्षक की देवताओं को बलि दे दी। इससे जीयस प्रसन्न हो गया और उनको संतान का वरदान दिया, ड्यूकालियन और पैरहा ने वरदान पाकर जीयस पर पत्थरों की वर्षा की। जो पत्थर ड्यूकालियन ने फेंके वे पुरुष हो गये और जो पैरहा ने फेंके, वे नारी हो गये।

केबीलोनिया में भी ऐसी ही एक दंत कथा है। तीन सौ ईस्वी पूर्व वहाँ बेरासस नामक पुरोहित था। उसने लिखा है—आरडेट्स की मृत्यु के बाद उसके पुत्र ने १८ 'सर' तक राज्य किया। एक सर ३६ सौ वर्षों का होता है। इसी अवधि में एक बार भीषण बाढ़ आई। इसकी सूचना राजा को स्वप्न द्वारा पहले ही मिल चुकी थी। अतः उसने अपने लिए एक नाव बनवा ली थी। नाव में बैठकर वह जलप्लावन देखता घूमता रहा। जब प्लावन का वेग कम हो गया, तो उसने नाव में ही बैठे-बैठे तीन बार पक्षी उड़ाये। अंतिम बार जब पक्षी लौटकर नहीं आये तो उसने देवताओं को बलि दी। इससे देवता प्रसन्न हुए और शांति का वातावरण बना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बाइबिल के अनुसार जल-देवता 'नूह' को खबर मिली कि धरती पर जल-प्रलय होगी। फिर ऐसा ही हुआ। चराचर इस भीषण जल-प्रलय में समाहित हो गये। जल-देवता 'नूह' तथा उनके कुछ साथी नौका में बच निकले। नौका द्वारा आराकान पर्वत पहुँचे। वहाँ दसवें महीने के पहले दिन जल कम होना शुरू हुआ। धीरे-धीरे पर्वत श्रेणियाँ दीखने लगीं। फिर अन्य हिस्से भी। हजरत 'नूह' ने ही मानवता का विकास किया। सुमेरियन ग्रंथों में भी जलप्लावन का संकेत है। चीनी पुराण-साहित्य में भी जल-प्लावन की कथाएँ विद्यमान हैं।

भारत में तो शतपथ ब्राह्मण से लेकर महाभारत और विविध पुराणों तक में जल-प्रलय का वर्णन मिलता है। महाभारत के वन-पर्व में मत्स्योपाख्यान के अंतर्गत यह कथा है कि विवस्वान मनु ने दस हजार वर्ष हिमालय पर तपस्या की। उस समय एक मछली की प्रार्थना पर उन्होंने उसकी जीवन रक्षा की। तब मछली ने उनको आगामी भीषण जलप्लावन की अग्रिम जानकारी दी। साथ ही यह कहा कि तुम सप्त ऋषियों के साथ नौका में प्रतीक्षा करना। अन्य पर्वों में भी इस जलप्लावन का सुविस्तृत वर्णन है।

संपूर्ण प्राचीन विश्व साहित्य में जल-प्रलय की ये कथाएँ निश्चय ही किसी घटित घटना की ही स्मृतियाँ हैं। अभिव्यक्ति की शैली भिन्न-भिन्न सभ्यताओं के परिवेश और सांस्कृतिक चेतना के अनुरूप अलग-अलग हैं; किंतु उनमें एक आंतरिक अविच्छिन्नता है। जलप्रलय की बात बड़ी है, पर उसके छोटे-छोटे रूप अन्य प्रकार से भी दृष्टिगोचर होते हैं। भूकंप, विस्फोट, बाढ़ आना, वृष्टि, अतिवृष्टि, महामारी आदि कारणों से कम विनाश नहीं होता है। आये दिन जहाँ-तहाँ होते रहने वाले युद्ध और महायुद्ध भी संपत्ति और प्राणियों की कम हानि नहीं करते।

एक ओर यह विनाशकारी घटनाएँ होती हैं, दूसरी ओर उत्पादन और अभिवृद्धि का उपक्रम देखकर भी आश्चर्यचकित रहना पड़ता है। वनस्पति के सहारे ही जीवधारियों का आहार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निर्वाह होता है। उसका खर्च जितना है, उसे देखते हुए उत्पादन की मात्रा कम नहीं वरन् बढ़ी-चढ़ी ही रहती है। खाने वाले प्राणी और ग्रीष्म जैसी नष्ट कर सकने वाली परिस्थितियों का सामना करते रहने पर भी वन-संपदा और वनस्पति की सुषमा पृथ्वी पर छाई ही रहती है। हरीतिमा के लिए प्रस्तुत सभी चुनौतियाँ अंततः निरस्त ही होती रहती हैं और अपनी धरती की हरियाली में घट-बढ़ होती है, पर अंत उसका कभी भी नहीं होता।

तनिक-सी दीखने वाली एक भिनभिनाती मक्खी एक ही ग्रीष्म ऋतु में ४० हजार संतानें पैदा कर सकती है, यदि उसकी आकस्मिक मृत्यु न हो जाये। इन ४० हजार मक्खियों की तीन पीढ़ी में उत्पन्न संतानों को एक कतार में रखा जाए, तो पृथ्वी से सूरज तक की दूरी से कई गुनी लंबी कतार बन जाए।

एक परिपक्व पोस्त में ३ हजार बीज होते हैं। यदि हर बीज से एक पौधा उगने दिया जाये और फिर उनमें से हर पौधे में कम से कम एक पोस्त लगने पर फिर उनमें से हर एक के तीन हजार बीजों का उपयोग भी पौधे ही पैदा करने के लिए किया जाये, तो इस क्रम से ५० वर्षों में एक ही वृक्ष के वंश विकास द्वारा पूरी पृथ्वी ढक सकती है।

प्रकृति की गतिविधियों का जितना ही अधिक निरीक्षण—विश्लेषण किया जाए, यही ज्ञात होता चलेगा कि वह अत्यंत दयामयी व कुशल है, किंतु इस दया में आवश्यक उग्रता व रौद्ररूप भी सम्मिलित है। वस्तुतः संतुलन प्रकृति का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व सार्वभौम अंतःसूत्र है। संतुलन की यह प्रकृति-प्रवृत्ति हमें विभिन्न पशु-पक्षियों की प्राकृतिक-संरचना में भी दिखाई पड़ती है।

उचित है कि मनुष्य अपनी काम वासना को भी नियंत्रित करे। अन्यथा इसके कारण परिवार बढ़ने से लेकर जनसंख्या वृद्धि तक के संकट तो उत्पन्न हो ही सकते हैं, व्यक्तिगत रूप से भी स्वास्थ्य की बर्बादी और कमजोर अपाहिज लुंज-पुंज जीवन के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अलावा कोई अच्छा परिणाम संभव नहीं है। प्रकृति आखिर किसी प्रकार तो अपना संतुलन बनायेगी ही। उसका अपना जो धर्म है, उसका पालन वह दृढ़तापूर्वक करेगी ही।

● पेड़-पौधे भी संयमी

यह कितने खेद की बात है कि जिस मनुष्य को अपना जीवन पुण्य और परमार्थ की साधना में व्यतीत करना चाहिए था, वह निकृष्ट और हेय जिंदगी जीता है; जबकि निकृष्ट कहे जाने वाले पेड़-पौधों के आचरण बड़े प्रेरक और प्रकाश देने वाले होते हैं। मनुष्य चाहे तो इन तुच्छ जीवों से भी बड़ी महत्त्वपूर्ण शिक्षाएँ ग्रहण कर सकता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

वनस्पतिशास्त्र का एक सिद्धांत है, हेरेडिटी करेक्टर (वंशानुगतसंक्रमण) जो बीज बोया जाता है (पैरेंट सीड्स), उसके गुण पैदा होने वाले बीजों (डाटर सीड्स) में ज्यों-के-त्यों आ जाते हैं। उदाहरण के लिए मटर के एक बीज में बीमारी के कुछ कीटाणु थे, उसे बो दिया। उस मटर की पौध में जितनी भी फलियाँ लगेंगी, उन सबमें उस बीमारी के लक्षण (सिंपटम्स) विद्यमान होंगे। जब तक बीज के इस वंश (जनरेशन) को चलता रहने दिया जाता है, बीमारी के सिंपटम्स अंत तक बने रहते हैं, इससे यह प्रेरणा मिलती है कि मनुष्य की जनरेशन कमजोर और निकम्मी न रहने पाये, इसके लिए मनुष्य अपने स्वास्थ्य, शरीर, चरित्र और भावनाओं का निर्माण करें। मानसिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृढ़ता वाले मनुष्य इस तरह की संतानें ही पैदा करते हैं। रोगी, आलसी, अपाहिज तो बिना किये भावी पीढ़ी को रोगी बनाने का पाप लेकर मर जाते हैं।

आजकल पाश्चात्य शिक्षा और सभ्यता से प्रभावित लोग यौन सदाचार का पालन करते हुए हिचकिचाते हैं और तर्क प्रस्तुत करते हैं कि मनुष्य ने प्रकृति से ही प्रेरणाएँ ली हैं, प्रकृति के अनुसार फिर आचरण करने में हानि क्या है ? कुत्ते, बकरे, भेड़ें,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बैल और दूसरे पशुओं में कामाचार की मर्यादाएँ अपने परिवार तक में लागू नहीं होतीं, इसलिए मनुष्य भी वैसा ही करता है, तो वह कोई पाप नहीं। पहले विवाह संबंध दूर किये जाते थे, अब समीपवर्ती वातावरण में ही विवाह करने की परंपरा चल पड़ी। पेड़-पौधे यह बताते हैं, यदि मनुष्य ने ऐसा किया तो उससे पीढ़ियाँ कमजोर होंगी।

दो अलग-अलग श्रेणी के बीज लेकर संयोजन (क्रास-ब्रीडिंग) से उत्पन्न हुए बीज (सीड्स) बहुत बलवान् होते हैं, जबकि एक ही वृक्ष के फूल के स्त्रीकेशर और उसी फूल के पुंकेसर में स्वयंसेचन की क्रिया से जो बीज पैदा होता है, वह बिल्कुल कमजोर होता है। यदि प्रकृति का यह नियम रहा होता कि निकटवर्ती परिवार में यौन सदाचार का पालन न किया जाए तो पेड़-पौधों का यह आदर्श और उदाहरण सामने न आता।

पराग (पालिनग्रेन) एक प्रकार के पीले कण हैं, जो फूल के पुंकेसर में होते हैं। जब पराग कण स्त्री केशर के वर्तिकाग्र (स्टिगमा) तक पहुँचता है, उसे परागण कहते हैं। परागण की क्रिया में स्वयं सेचन सरल है, एक ही फूल के पुंकेसर का पराग स्त्रीकेशर के वर्तिकाग्र (स्टिगमा) तक आसानी से पहुँच जाता है, यह क्रिया पराग-झड़ना (पोलीनेशन) कहलाती है। क्रास-ब्रीडिंग में दूरी और मेलजोल की परेशानी होती है, इस तरह का तर्क किया जा सकता है, किंतु भगवान् ने विकास की सुविधाओं से किसी को वंचित नहीं रखा। भौंरे-तितलियाँ और मधु-मक्खियाँ पराग का मधु चूँसते हुए एक फूल पर बैठते हैं, रस तो वे चूस लेते हैं, पर वे इतने स्वार्थी नहीं होते कि केवल अपना ही काम करके चल देते हों। वे अपने पैरों में पराग के कण चिपका लेते हैं और फिर वहाँ से उड़कर दूर किसी मादा फूल के वर्तिकाग्र (स्टिगमा) में जा बैठते हैं, इस तरह नर-मादा फूलों का दूरवर्ती संबंध हो जाता है। इस तरह क्रास-ब्रीडिंग से उत्पन्न हुए बीज बड़े बलवान् होते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसी प्रकार यदि बीज पक चुका है तो ही उसके डाटर बीज अच्छे खाद्य वाले होंगे। इससे मनुष्य को एक संदेश मिलता है कि वह गृहस्थाश्रम पूर्ण और परिपक्व अवस्था के बाद ही आरंभ करे। भारतीय संस्कृति में २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य और विद्याध्ययन की अनिवार्यता थी। उससे बच्चों के शरीर ही नहीं—मन और बुद्धि भी पर्याप्त परिपक्व हो जाते थे, इसीलिए उनका गृहस्थ भी सुखी होता था और आज जबकि छोटे-छोटे बच्चों के विवाह कर दिये जाते हैं, तब क्या यह आशा की जा सकती है कि आने वाली पीढ़ी मजबूत होगी ? पीढ़ियाँ समर्थ और शक्तिशाली तभी होंगी, जब कामाचार में परिपक्वता, चारित्रिक दृढ़ता का पालन किया जाएगा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

● संयम बनाम समर्थता

थोड़ी देर के लिए मनुष्य की बात छोड़ दें और जीव-जगत् की कल्पना करें, तो वहाँ "शक्तिमान् के ही जीवित रहने" के अधिकार की पुष्टि होती है। मनुष्य को परमात्मा ने बुद्धि और विवेक के दो विशिष्ट उपहार दिये हैं। इसलिए उसे तो विसंगति श्रेणी में रखना तथा सहयोग और सहकारिता में समृद्धि, सुव्यवस्था का पाठ पढ़ाना पड़ेगा, पर यदि वह अपनी इस ईश्वर प्रदत्त विशेषता का अपने जीवन में उपयोग न कर पशुओं का ही पेट-प्रजनन वाला जीवन जीने लगे, तो जो व्यवस्थाएँ प्रकृति में चल रही हैं, वैसे ही परिणाम से मनुष्य भी बच नहीं सकता।

हाथी संसार का अति सामर्थ्यवान् प्राणी है। विश्वास करें या न करें, पर अफ्रीका में मोंबासा से कीनिया को जो सड़क जाती है, उस पर एक प्रवेश द्वार मात्र दो जोड़े हाथी दाँत का बना है। यह दाँत इतने विशाल हैं कि बस और भारी बोझ लदे ट्रक भी उसके नीचे से आसानी से निकल सकते हैं। जिन हाथियों के इतने विशाल और मजबूत दाँत होंगे, उनके शरीर की सामर्थ्य कितनी होगी, उसका अनुमान करना कठिन है। हाथियों में जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सामर्थ्य द्वापर और त्रेता में थी, वही आज भी विद्यमान है। इसका कारण प्रकृति का पक्षपात नहीं उसकी अपनी संयम शक्ति है, जिसने इस समूची जाति को युग-युगों तक अपनी सामर्थ्य और अपनी सत्ता बनाये रखने योग्य बना दिया है।

एक हाथी युगल अपने जीवन काल में अधिकतम दो या तीन बच्चों को जन्म देता है। यह उल्लेखनीय है कि प्राकृतिक जीवों में प्राय: एक ही बार के सहजीवन से गर्भाधान की क्रिया संपन्न हो जाती है। उसके सहजीवन की संख्या सारे जीवन में अधिकतम पाँच से अधिक नहीं होती। अपनी इस विशेषता के कारण कहीं भी उनकी जनसंख्या के विस्फोट की समस्या नहीं उठी। इतने जंगल कट जाने पर भी उनके लिए कभी खाद्य का अभाव नहीं पैदा हुआ।

यही स्थिति बलशाली दूसरी सभी जातियों की है, जिनमें सिंह, चीते, बाघ भी आते हैं। राजहंस पक्षी अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण कभी भी संख्या के विस्फोट की स्थिति में नहीं पहुँचा, उसे प्रकृति के अत्यंत प्रिय उपहार के रूप में सम्मानित किया जाता है।

दूसरी ओर जन्मजात तुच्छ कहलाने वाली मक्खी को ही लें। एक मक्खी एक ही ग्रीष्म ऋतु में ४००००००००००००० (चार नील) मक्खियाँ पैदा कर देती है। रावण की सेना से भी लाख गुनी इस सेना का मार्च यदि सूर्य की ओर हो, तो २६ करोड़ मील दूर पहली मक्खी सूर्य की २० बार आ जाकर यात्रा पूरी कर लेगी, तब आखिरी सिपाही को कहीं पृथ्वी से प्रस्थान का अवसर मिलेगा। समुद्र में पाई जाने वाली मछलियों का प्रजनन इतनी तीव्र गति से होता है कि वे यदि सब की सब जीवित बची रहें, तो ६ महीने में समुद्र मछलियों का पहाड़ बन जाये, किंतु इन असंयमित जीवों पर प्रकृति का क्रूर डंडा इतनी तेजी से फिरता है कि एक ही बार में उनका करोड़ों की संख्या को मार डालता है। मक्खियों में इतनी भी क्षमता नहीं होती कि मैदानी इलाकों की ही शीत बर्दाश्त कर लें। फलत: उनका बुरी तरह वंश नाश होता रहता है। मछलियाँ तो आत्म विस्फोट की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साक्षात् उदाहरण हैं। बड़ी मछली हर छोटी मछली पर दाँव लगाती और उन्हें चट करती है। उन्हें अपने आप में ही इस तरह द्वंद्व करते देखकर ही संभवतः मनुष्यों ने उन्हें पृथ्वी में अपना जीवन जीने योग्य नहीं समझा और उनका विधिवत् भक्षण करने लगे।

मछली-मछली है—मनुष्य-मनुष्य, पर प्रकृति की दृष्टि में दोनों एक हैं। यदि मनुष्य संयमित जीवन जीने के लिए तैयार नहीं होता, तो उसे भी एक दिन ऐसे ही सर्वनाश की तैयारी प्रारंभ कर देनी होगी।

अतः यह निर्भ्रांत तथ्य है कि सुखी, सुरक्षित और समुन्नत जीवन जीना है, तो उसके लिए शक्तिसंपन्न होना ही पड़ेगा। वैसे भी सुख और श्रेय मानव जीवन की दो महान् उपलब्धियाँ मानी गई हैं। इनको पा लेना ही जीवन की सफलता समझा जाता है।

● जीवन की सफलता

सुख की परिधि का परिकर संसार तक है, अर्थात् इस संसार के व्यवहार क्षेत्र में हम जो जीवन जीते हैं, उसका निर्विघ्न, स्निग्ध और सरलतापूर्वक चलते रहना ही सांसारिक सुख है। श्रेय आध्यात्मिक क्षेत्र की उपलब्धि है। ईश्वरीय बोध, आत्मा का ज्ञान और भव-बंधन से मुक्ति को ही श्रेय कहा गया है।

● सुख प्राप्ति का आधार

सुख और श्रेय मानव-जीवन की दो महान् उपलब्धियाँ मानी गई हैं। इनको पा लेना ही जीवन की सफलता है। पार्थिव अथवा अपार्थिव किसी भी उपलब्धि के लिए शक्ति की अनिवार्य आवश्यकता है। शक्तिहीनता क्या साधारण और क्या असाधारण दोनों प्रकार की प्रगतियों के लिए बाधा रूप है। शरीर अशक्त हो, मन निराश और कुंठित हो, बुद्धि की निर्णायक क्षमता शिथिल हो तो मनुष्य इच्छा रहते हुए भी किसी प्रकार का पुरुषार्थ नहीं कर सकता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संसार के सारे सुखों का मूलाधार साधनों को माना गया है। साधन यों ही अकस्मात् प्राप्त नहीं हो जाते। उनके लिए उपाय तथा परिश्रम करना होता है। रोटी, कपड़ा, आवास के साथ और भी अनेक प्रकार के साधन जीवन को सरलतापूर्वक चलाने के लिए आवश्यक होते हैं। इसके लिए कार-रोजगार, मेहनत-मजदूरी, नौकरी-चाकरी कुछ न कुछ काम करना होता है। यह सब काम करने के लिए शक्ति की आवश्यकता है। अशक्तता की दशा में कोई काम नहीं किया जा सकता।

केवल शक्ति ही नहीं, आरोग्य तथा स्वास्थ्य भी सुख, शांतिमय जीवन-यापन की एक विशेष शर्त है। साधन हों, काम-रोजगार हो, धन तथा आय की भी कमी न हो, तब भी जब तक तन-मन स्वस्थ और निरोग नहीं है, जीवन सुख और सरलतापूर्वक नहीं चलाया जा सकता। इस प्रकार शक्ति और स्वास्थ्य जीवन के सुख के आवश्यक हेतु हैं।

शक्ति जन्मजात प्राप्त होने वाली कोई वस्तु नहीं है। जिस प्रकार धन-संपत्ति, जमीन-जायदाद उत्तराधिकार में मिल जाते हैं, उस प्रकार शक्ति के विषय में कोई भी उत्तराधिकार नहीं है। यह मनुष्यों की अपनी व्यक्तिगत वस्तु है, जिसे पाया नहीं, उपजाया जाता है। सांसारिक सुख और पारलौकिक श्रेय के लिए मनुष्य को शक्ति का उपार्जन कर लेना आवश्यक है।

लौकिक विद्वानों से लेकर सिद्ध महात्माओं और मनीषियों—सबने एक स्वर के संयम को शक्ति का स्रोत बतलाया है। बहुत लोगों का विचार रहता है कि अधिक खाने-पीने से शक्ति प्राप्त होती है, पर उनका यह विचार समीचीन नहीं। अधिक अथवा बहुत बार खाने से शरीर को अनावश्यक श्रम करना पड़ता है, जिससे शक्ति बढ़ने के बजाय क्षीण होती है। स्वास्थ्य बिगड़ता है और आरोग्य नष्ट होता है। भोजन में निश्चय ही शक्ति के तत्त्व रहते हैं, किंतु वे प्राप्त तभी होते हैं, जब भोजन का उपभोग संयमपूर्वक किया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाये। समय पर, नियंत्रित मात्रा में उपयुक्त भोजन ही सुविधापूर्वक पचता और शक्तिदायक रसों को देता है।

शक्ति संचय के लिए समय पर, सीमित और उपयुक्त भोजन किया जाये, स्वास्थ्य और आरोग्य के विषय में सावधान रहा जाय, पर ब्रह्मचर्य का पालन न किया जाये, तब भी सारे प्रयत्न बेकार चले जाएँगे और शक्ति के नाम पर शून्य ही हाथ में रहेगा। भोजन के तत्त्व वीर्य बनकर ही शरीर में संचय होते हैं। संचित और परिपक्व वीर्य का ही स्फुरण शक्ति की अनुभूति है। वीर्यवान् शरीरों में न तो अशक्यता आती है और न उसका आरोग्य ही जाता है। इसीलिए वीर्य को शरीर की शक्ति ही नहीं, प्राण भी कहा गया है।

इसी महत्त्व के कारण भारतीय मनीषियों और आचार्यों ने वीर्य रक्षा अर्थात् ब्रह्मचर्य संयम को सबसे बड़ा माना है और निर्देश किया है कि लौकिक जीवन के सुख और पारलौकिक श्रेय के लिए मनुष्य को अधिकाधिक ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

परशुराम, हनुमान् और भीष्म जैसे महान् पुरुषों ने आजीवन ब्रह्मचारी रहकर ब्रह्मचर्य-व्रत की महत्ता प्रमाणित की है। इसी व्रत के बल पर वे न केवल अतुलित बलधाम बने बल्कि जरा और मृत्यु तक को जीत लिया। परशुराम और हनुमान् के पास तो मृत्यु आई ही नहीं, पर भीष्म ने तो उसे आने पर डाँटकर ही भगा दिया और रोम-रोम में बिंधे शरों की सेज पर तब तक सुखपूर्वक लेटे रहे, जब तक कि सूर्य-नारायण उत्तरायण नहीं हो गये। सूर्य के उत्तरायण हो जाने पर ही उन्होंने इच्छा-मृत्यु का वरण स्वयं किया। शर-शैय्या पर लेटे हुए, वे केवल जीवित ही नहीं बने रहे, अपितु पूर्ण स्वस्थ और चैतन्य भी बने रहे। महाभारत युद्ध के पश्चात् उन्होंने पांडवों को धर्म तथा ज्ञान का आदर्श उपदेश भी दिया। यह सारा चमत्कार उस ब्रह्मचर्य व्रत का ही था, जिसका कि उन्होंने आजीवन पालन किया था। हनुमान् ने उसके बल पर समुद्र पार कर दिखाया और एक अकेले परशुराम ने इक्कीस बार पृथ्वी से आततायी और अनाचारी राजाओं को नष्ट कर डाला था। ब्रह्मचर्य की महिमा अपार है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्मचर्य पालन के विषय में आजीवन अविवाहित और अनानुभवी व्यक्तियों को छोड़ भी दीजिये, तो भी भारतीय इतिहास में ऐसे दृढ़-व्रती और संयमशील व्यक्तियों के उदाहरणों की कमी नहीं जिन्होंने विवाहित और अनुभव प्राप्त होने पर भी अनुकरणीय काम-संयम करके दिखला दिये।

यह सब तथ्य इस बात के ज्वलंत प्रमाण हैं कि आजीवन अविवाहितों के लिए अथवा अनानुभवी व्यक्तियों के लिए ही नहीं, ब्रह्मचर्य का संयम गृहस्थ और भुक्तभोगियों के लिए भी सर्वथा संभव है। जो व्यक्ति इस विषय में विवशता अथवा निर्बलता प्रकट करते हैं, वे वास्तव में निर्बल व्यक्ति ही होते हैं और ब्रह्मचर्य के महत्त्व में सच्ची आस्था नहीं रखते। अपनी वासनाओं के प्रश्रय के लिए बहाने दिया करते हैं।

काम-वासना का संयम सर्वथा संभव है और सबको करना ही चाहिए। इससे शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक ही नहीं, आत्मिक शक्ति भी बढ़ती है। मनुष्य में तेज तथा प्रभाव का प्रादुर्भाव होता है, वाणी में तेज तथा नेत्रों में ज्योति आती है। यह सारे गुण और सारी विशेषताएँ प्रेय तथा श्रेय दोनों की उपलब्धि में सहायक होते हैं। इन सहायकों के अभाव में आध्यात्मिक उन्नति तो दूर, सामान्य सांसारिक जीवन भी सुख और सरलतापूर्वक नहीं जिया जा सकता।

जो व्यक्ति संसार के महान् व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने धर्म, समाज तथा देश के लिए उल्लेखनीय कार्य कर श्रेय प्राप्त किया है और जिन्होंने तप, साधना तथा चिंतन-मनन कर श्रेय पाया है, निर्विवाद रूप से उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत द्वारा सबसे पहले शक्ति की ही साधना की है। वासना को जीत और इंद्रियों पर अधिकार कर सकने पर ही वे जीवन में श्रेयस्कर कार्य कर सकने में सफल हो सके हैं।

वीर्य रक्षा से शरीर स्वस्थ तथा स्फूर्तिवान् बना रहता है। रोगों का आक्रमण नहीं होने पाता। मन तथा बुद्धि इतने पुष्ट एवं परिपक्व हो जाते हैं कि बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी विचलित नहीं होते। प्रमाद, आलस्य अथवा अवज्ञा का भाव नहीं आने पाता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परिश्रम तथा उपार्जन की स्फूर्ति बनी रहती है, जिससे उसके चरण दिन-दिन उन्नति के सोपानों पर ही चलते जाते हैं।

भारतीय तत्त्ववेत्ताओं ने कामोत्तेजना को मनोज—मनसिज आदि नाम देकर बहुत पहले ही स्वीकार कर लिया था कि यह उद्वेग शारीरिक हलचल नहीं, वरन् मानसिक उभार है। यदि मन पर नियंत्रण किया जा सके—उसे ईश्वर-भक्ति, कला, साधना एवं आदर्श, निष्ठा में नियोजित किया जा सके तो युवावस्था में भी शरीर और मन से ब्रह्मचारी रहा जा सकता है। इसके विपरीत यदि शारीरिक नियंत्रण तो निभाया जाये, पर मानसिक उत्तेजना उभरती रहे तो ब्रह्मचर्य का वह लाभ न मिल सकेगा जैसा कि साधना ग्रंथों में उसका माहात्म्य बताया गया है। दृष्टिकोण में परिवर्तन ही इंद्रिय-निग्रह का प्रधान आधार है। आहार-विहार के संयम से तो उसमें थोड़ी-सी सहायता भर मिलती है।

आमतौर से यह समझा जाता है कि सुंदरता या परिपुष्ट स्थिति के नर-नारी अधिक काम तृप्ति करते होंगे एवं अच्छा प्रजनन करने में सफल रहते होंगे, पर यह बात वैज्ञानिक तथ्यों के विपरीत है। मनुष्य की चेतनात्मक विद्युत् शक्ति ही कामोत्तेजना उत्पन्न करती है और उसी की प्रबलता से यौन-तृप्ति का संबंध रहता है। यह भ्रम अब दूर होता चला जा रहा है कि शरीर गठन का कामोल्लास से सीधा संबंध है। वस्तुतः कामोत्तेजना विशुद्ध मानसिक प्रक्रिया है। वह जिस आयु में भी—जिस मात्रा में उल्लसित रहेगी, उसी स्थिति में कामोद्वेग उठते रहेंगे और तृप्ति तथा प्रजनन की सफलता भी उसी अनुपात से सामने आती रहेगी।

अतः यह कहा जा सकता है कि मन में, मस्तिष्क में उठने वाले कामुक विचारों को उनके केंद्र पर ही रोका जा सकता है। उन विचारों की उत्पत्ति रोकने अथवा कामुक भावों के उत्पन्न होने में बहुत कुछ शिक्षा-दीक्षा, वातावरण तथा संस्कारों का भी प्रभाव पड़ता है। हाल ही में अमेरिका में एक छोटी बालिका पर यह प्रयोग चल रहा है कि, यदि किसी शिशु का वैज्ञानिक पद्धति से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ठीक तरह लालन-पालन किया जाये, तो क्या वह अमर या दीर्घजीवी हो सकता है ? प्रयोग का आधार यह धारणा है कि कुविचार तथा असंयम ही बीमारियों के प्रधान कारण हैं। प्रयोग यह किया जा रहा है कि लड़की को न तो कुविचारों का शिकार बनने दिया जाये, न असंयम का। अच्छी जलवायु वाले 'लाज' नामक टापू में एक भव्य भवन बनाकर, उसे रखा गया और जीवनोपयोगी सभी सुविधाएँ वहाँ जुटाई गई हैं। रायल फ्रेटरनिटी ऑफ मास्टर मेटाफिजिशियन्स संस्था के अध्यक्ष जेम्स वी० शेफर इस प्रयोग में बहुत रुचि ले रहे हैं और लड़की की शारीरिक, मानसिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित बनाये रखने के लिए उन्होंने विशेषज्ञों का एक दल नियुक्त कर दिया है।

इसी आधार पर यह प्रयास भी किये जा रहे हैं कि मनुष्य की आयु को बढ़ाया जा सके। मृत्यु का कारण सामान्यतः यह समझा जाता है कि कोशिकाओं की मृत्यु के कारण ही शरीर भी मर जाता है। अब यह सोचा जा रहा है कि इन कोशिकाओं को फिर से नयी स्फूर्ति दी जा सके, तो शायद मनुष्य मरने के बाद पुनः जी उठे।

कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान प्राध्यापक डॉ० जेम्स वेडफोर्ड की मृत्यु ७३ वर्ष की आयु में हो गई। उन्होंने मृत्यु से पूर्व अपनी संचित राशि ४००० डालर इस कार्य के लिए वसीयत की है कि उनके मृत शरीर को सुरक्षित रखा जाये और उसे विश्राम देने के बाद पुनर्जीवित करने का प्रयत्न किया जाये। इस धनराशि से उनके शरीर पर उपरोक्त प्रकार का अनुसंधान कार्य चल रहा है।

इस संभावना को आशा की दृष्टि से इसलिए देखा जा रहा है कि यदि मृत्यु के समय विघटन को एकाकी छोड़कर, निर्माण की प्रक्रिया जो बंद हो जाती है, उसे यदि रोका जा सके तो मृत्यु को निरस्त कर सकना कुछ विशेष कठिन न रह जायेगा। यों शरीर में विघटन और निर्माण की प्रक्रिया साथ-साथ चलती रहती है और हम जीवित बने रहते हैं। मृत्यु एक ऐसी परिस्थिति का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नाम है, जिसमें विघटन तो चलता है, पर निर्माण बंद हो जाता है। यदि एनाबोलिज्म (कोशों की पुनर्रचना) तथा मेटाबोलिज्म (रस प्रक्रिया) का क्रम बंद न हो, तो मरणोत्तर जीवन इसी शरीर में संभव हो सकेगा। वैज्ञानिकों का विश्वास है कि २१वीं शताब्दी में ऐसे उपाय निकल सकते हैं, जिनसे मृतक को कुछ समय विश्राम देकर पुनः जीवित किया जा सके। अन्य जीव-जंतुओं पर ऐसे प्रयोग चल भी रहे हैं, उनसे मिली सफलता से अन्वेषकों का साहस इस दिशा में अधिक प्रबल होता जाता है।

लेकिन इन प्रयोगों में भी संयम, सदाचार को कामुकता से बचने और उच्च आध्यात्मिक विचारणाओं में रमण करना अनिवार्य माना गया है। लाज नामक टापू पर रखी गई बालिका पर इसी उद्देश्य से प्रयोग किये जा रहे हैं। यह प्रयोग और अब तक की मिली सफलताएँ इसी आर्ष वचन को सिद्ध करती हैं—

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।

अथर्व० ११/७/१९

अर्थात्—ब्रह्मचर्य और तप से देवताओं ने मृत्यु को भी जीत लिया।

यह सोचना भी भूल ही होगी कि लिंगभेद जैसी कोई विभाजन रेखा आत्म सत्ता में भी होगी। परस्पर 'विरोधी लिंगों की' भावना और 'उसका आकर्षण' मनुष्य को तभी प्रभावित करता या गुदगुदाता है, जब मन में कामुकता का ज्वार उठता हो। बस ट्रेनों की भीड़-भाड़ में किसी को यह ध्यान नहीं रहता। रहता भी है तो उस समय जब मन में काम-वासना का ज्वार उमड़ रहा हो। निद्रा और बेहोशी में भी लिंगभेद का अनुभव आभास नहीं होता। जब जाग्रत् या सुषुप्त अवस्था में ही किसी को लिंग भेद का भान नहीं होता तो आत्मा के स्तर पर यह आभास कैसे हो सकता है ? काम वासना के मनोविकार को नियंत्रित-परिष्कृत किए बिना किसी भी स्थिति में आत्मा का विकास, उन्नत आत्मिक स्थिति नहीं प्राप्त की जा सकती।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्द्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org